ग्रिम की कहानियाँ

उपस्थापन

परियों की कहानी लोक-कथाओं की एक महत्त्वपूर्ण किस्म है। लोक-कथायें अनादिकाल से मनुष्य की एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को उत्तराधिकार रूप में मिलती रही हैं। नये वातावरण और नई जमीन पर उनमें परिवर्तन और विकास होता रहा है। इस सांस्कृतिक सम्पदा की सुरक्षा प्रायः मौखिक आदान-प्रदान के रूप में ही होती रही है। साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन के प्रेमी अनुसंधित्सु जनों को यह देख कर बड़ा आश्चर्य होता है कि विश्व की समस्त लोक-कथाओं के अन्तस्तल में शैली-शिल्प, वर्णन, सौन्दर्य-विधान, कथा-अभिप्राय और कथानकों की एक अद्भुत समानता झलकती है। इस सादृश्य से जहाँ लोक-कथाओं का अध्येता आश्चर्य-चकित होता है वहीं इन कहानियों में पायी जानेवाली विभिन्नतायें देश-काल और संस्कृतियों के अन्तर को भी स्पष्ट कर देती हैं। आदिम युगीन मानव संस्कृति से आधुनिक सभ्यता तक के विकास-चिह्नों को भी हम यहाँ अच्छी तरह पहचान सकते हैं।

योरोपीय परी-कथाओं के संकलन का कार्य बहुत पहले आरंभ हो गया था। स्ट्रापारोला (Straparola) के संकलन Le Piacevoli Notti में जो १५५० ई० में प्रस्तुत किया गया तथा सत्रहवीं शताब्दी में संगृहीत बसिले (Basile) के संकलन (N. M. Penzer : The Pentamerone of Basile) में इस प्रकार की गई कहानियाँ सम्मिलित हैं किन्तु इन्होंने इन कथाओं को इस प्रकार पुनर्लिखित कर दिया है कि इन्हें पहचानना भी कठिन हो जाता है। १८वीं शताब्दी तक के दूसरे संकलनों में भी पुनर्लेखन का यही दोष विद्यमान है। कथानक के अलावा इन पुनर्लिखित कहानियों में ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे लोक-कथाओं के अनुसंधायक शोध का विषय बना सकें। १८१२ ई० में ग्रिम-बन्धु ने संसार प्रसिद्ध लोक-कथा-संग्रह 'हाउसहोल्ड टेल्स' प्रकाशित कराया। यह पहला प्रयत्न था जिसमें लोक-कथाओं को उनके मूल रूप में प्रस्तुत किया गया। उन्होंने बड़ी जागरूकता के साथ कई देशों में बिखरी हुई जन-कथाओं को लोगों से मौखिक रूप में सुन कर

ज्यों का त्यों उतारने का प्रयत्न किया। विशेषत: ऐसे देशों से जहाँ आज भी जन-कथाओं को कहने-सुनने की प्राचीन परिपाटी प्रचलित है।

ग्रिम बन्धुओं में ज्येष्ठ जेकब लुडविग कार्ल ग्रिम (१७८५–१८६३) ने अपना साहित्यिक जीवन पेरिस में आरंभ किया। १८०५ ई० में वे प्रो० सेविनी के सहायक नियुक्त हुए। सेविनी के साथ रह कर ग्रिम ने अध्ययन का वह वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्राप्त किया जिसका प्रयोग आगे चल कर उन्होंने ट्युटानिक भाषाओं के सन्तुलनात्मक अध्ययन में किया और वे संसार प्रसिद्ध ग्रिम-नियम के निर्माता बने। वर्ण-परिवर्तन के इस प्रसिद्ध सिद्धान्त का पूरा विवरण उनके ग्रंथ 'ड्युत्शे ग्रैमेंटिक' में मौजूद है, जिसे अपने युग का सर्वश्रेष्ठ भाषा शास्त्रीय ग्रंथ माना गया। अपने कनिष्ठ भ्राता विलहेम कार्ल (१७८६–१८५९) के साथ जेकब ने लोक-कथाओं का विश्रुत संकलन Kinder-und Hansmarchen प्रकाशित कराया, जिसने इन कथाओं को समस्त योरोप में जनप्रिय बना दिया। इस संग्रह ने लोक-कथा के विद्यार्थियों को बड़ी प्रेरणा दी और लोक-तत्त्व के शास्त्रीय अध्ययन का श्रीगणेश किया। ग्रिम बन्धुओं ने अपने प्रयत्न में अद्भुत लगन और निष्ठा का परिचय दिया। उन्होंने प्राचीन पाण्डुलिपियों, लोक-कथा के पुरा-ग्रंथों का अवलोकन किया तथा जर्मनी के किसानों के घरों में जा जाकर उनके मुख से कहानियाँ सुन-सुन कर उन्हें एकत्र किया। इस कार्य में उनकी सबसे अधिक मदद श्रीमती फ्रा कैथेरिना वेहमन ने की जो एक दर्जी की पत्नी थीं। इस महिला के बारे में ग्रिम ने लिखा है कि "वे अद्भुत स्मरणशक्ति रखती थीं और इन प्राचीन कथाओं को वे अद्भुत आह्लाद से सुनाती थीं। इन कथाओं को इतना सही, साफ और स्पष्ट ढंग से सुनाना एक अजीब बात है...वे ठीक ही कहती थीं कि यह शक्ति सबके पास नहीं होती...।" इनका पहला संग्रह १८१२ ई० में छपा, जिसका नवीन पूर्ण अनूदित अंग्रेजी संस्करण मार्गेट हंट ने जोजेफ स्कार्ल के कथा चित्रांकनों के साथ १९४९ ई० में प्रकाशित कराया।

परियों की कथायें केवल मनोरंजन और कल्पना-प्रियता की तृप्ति के लिए ही महत्त्वपूर्ण नहीं हैं, बल्कि इनके भीतर विभिन्न देशों के मनुष्यों की सभ्यता और संस्कृति के बहुत से विस्मृत तत्त्व भी छिपे हुए हैं। इन कहानियों की समानतायें एक अद्भुत तथ्य की ओर संकेत करती हैं। योरोप और एशिया के एक बहुत बड़े भू-भाग में फैले हुए जन-समूह में प्रचलित इन कहानियों में इतना अद्भुत साम्य

किस बात की ओर संकेत करता है ? ग्रिम बन्धुओं का कहना है कि ये कथायें योरोपीय कबीलों की संयुक्त निधियाँ हैं, जिस प्रकार उन्होंने भारत-योरोपीय भाषाओं में बहुत-सी समानतायें खोज निकालीं, उसी प्रकार इन कहानियों की पृष्ठ-भूमि का भी उन्होंने अध्ययन किया । वे इन्हें प्राचीन पौराणिक कथाओं की टूटी श्रृंखला मानते हैं । थेडोर वेनफी (१८५९) जैसे विद्वानों की तो धारणा है कि इन सभी कथाओं की जन्मभूमि भारत ही है । ग्रिम की इन कहानियों में भी बहुत-सी ऐसी हैं जो भारतीय परी-कथाओं से साम्य रखती हैं । नाम और वेश-भूषा को बदल दिया जाए तो इनमें कई कहानियाँ बिल्कुल भारतीय प्रतीत होने लगेंगी ।

पता नहीं इन कथाओं में मनुष्य-चित्त के कितने रूपों का प्रतिफलन है । कभी वह अति मानवीय, दैवी चमत्कारों से भयातुर हो उठता है, कभी उनके प्रति कुतूहल और जिज्ञासा से ताकता रह जाता है । प्रकृति के अदृश्य व्यापार उसके जीवन में असंतुलन उत्पन्न कर देते हैं । उसका सामान्य जीवन, मासूम प्रेम, दुर्बल व्यक्तित्व, दीन परिवार इनके धक्कों से चूर-चूर हो जाता है । पर परी-कथाओं में इस बात का प्रमाण है कि मनुष्य निरन्तर आगे बढ़ता गया है, वह सभी प्रकार की बाधाओं को तोड़ कर अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल हुआ है । जीत अन्याय और अनाचार की नहीं, सत्य और सदाचार की ही हुई है । जब समाज के क्रूर बन्धन मनुष्य को मनुष्य की दृष्टि में ही कदर्थ और अस्पृश्य बना देते हैं तो प्रकृति उन्हें सहारा देती है । वह उन्हें नये उत्साह और नई प्रेरणा से पुनः संघर्ष-क्षेत्र में आने के लिए प्रेरित करती है । हम देखते हैं कि इन कहानियों में अत्यन्त मनोरंजन-पूर्ण ढंग से जीवन के महत् अनुभव बड़ी सफाई से उपस्थित कर दिये गए हैं । इन कहानियों में सृष्टि 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का आदर्श बन कर आई है । पशु-पक्षी, वृक्ष-लतादि सत्य के साक्षी हैं । मनुष्य लोभ-मोह का शिकार हो कर सत्य छिपा सकता है, पर हमारे ये मूक सहचर सत्य की साक्षी देने में कभी चुप नहीं रहते । मनुष्य इन बेबसों की हत्या कर देता है, पर इनका मृत शरीर सत्य की साक्षी में खड़ा रहता है । इन कहानियों में भौतिक जगत् में बुद्धि, विवेक, चतुराई, वाक्पाटव, व्यावहारिकता आदि का महत्त्व स्वीकार किया गया है जबकि आध्यात्मिक स्तर पर करुणा, ममता, सत्य, प्रेम, सदाचार आदि की स्तुति की गई है । ये कहानियाँ इस तरह मीठी दवाओं की तरह हैं जो हमारे जीवन को नया आरोग्य प्रदान करती हैं ।

अनुवादक डॉ० विष्णुस्वरूप बधाई के पात्र हैं जिन्होंने इन संसार प्रसिद्ध कहानियों को हिन्दी में अनूदित करके बाल-साहित्य का गौरव बढ़ाया है। अनुवाद की भाषा अत्यन्त सहज, सरल और प्रवाहपूर्ण है। इन कथाओं में जगह-जगह जन-कविता के टुकड़े भी आ जाते हैं, इनका अनुवाद कठिन होता है, पर डॉ० विष्णुस्वरूप ने ऐसे स्थलों को भी अच्छी तरह निभाया है। मुझे पूरा विश्वास है कि इस संग्रह का हिन्दी में आदर होगा।

हिन्दी विभाग
हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
२५ नवम्बर, १९५९

(डा०) शिवप्रसाद सिंह

अनुक्रम

पृ० सं०

बोतल में बंद प्रेत

एक लकड़हारा था। वह सुबह तड़के से लेकर शाम को देर तक काम करता रहता था। इस तरह अपनी मेहनत से उसने थोड़े-से रुपये बचा कर रख लिये। अपने बेटे को बुला कर उसने कहा, 'मेरे बेटे, इतनी मेहनत से बचाये हुए मेरे ये रुपये तुम्हारी शिक्षा के लिए हैं। मैं चाहता हूँ कि तुम कोई ऐसा धंधा सीख जाओ जिससे मेरे बूढ़े होने पर तुम मेरा पालन कर सको।' लड़के को एक बड़े स्कूल में भेज दिया गया। वहीं रह कर वह जी लगा कर पढ़ने लगा और अपने परिश्रम के लिए प्रसिद्ध हो उठा।

बहुत समय तक पढ़ते रहने पर भी उसकी पढ़ाई पूरी नहीं हुई। लेकिन उसके पिता का धन समाप्त हो आया। इसलिए लड़के को विवश होकर घर लौट आना पड़ा।

उसके पिता ने कहा, 'मुझे दुःख है कि मैं तुम्हारे लिए और अधिक रुपये नहीं दे सकता। जमाना इतना खराब है कि अपनी ही आवश्यकता भर को कमाना मेरे लिए कठिन हो गया है।'

लड़के ने उत्तर दिया, 'मेरे लिए चिन्ता मत कीजिए पिताजी ! हर बात में कोई न कोई भलाई रहती है । ईश्वर मदद करेगा हमारी ।'

इसके बाद जब पिता जंगल में जाने के लिए तैयार हुआ तो लड़के ने कहा, 'मैं भी आप के साथ चल कर लकड़ी काटने में मदद करूँगा ।'

लेकिन पिता ने मना किया, 'मेरे बेटे, तुम उसके आदी नहीं हो, इसलिए वह काम तुम्हारे लिए बहुत कठिन होगा । और फिर मेरे पास इतना पैसा नहीं है कि तुम्हारे लिए दूसरी कुल्हाड़ी खरीद सकूँ ।'

लड़के ने कहा, 'तब तक के लिए पड़ोसी से माँग लीजिये, जब तक कि मैं पैसा बचा कर खरीद न लूँ ।'

पिता ने पड़ोसी से एक कुल्हाड़ी उधार माँग ली, और सुबह वे लोग जंगल को चल दिये । लड़के ने बाप की सहायता ही नहीं की बल्कि दोपहर तक वह खुशी-खुशी काम करता रहा । जब पिता ने कहा कि 'आओ, भोजन करके थोड़ा आराम कर लें, फिर काम करेंगे,' तब अपने हिस्से का भोजन लेकर लड़के ने कहा, 'पिताजी, आप आराम कीजिये, मैं जंगल में इधर-उधर घूमता हूँ ।'

बाप ने कहा, 'मूर्ख लड़के, बहुत थक जाओगे तो काम कैसे करोगे ? यहाँ कुछ देर मेरे पास आराम कर लो ।'

लेकिन लड़के ने आराम नहीं किया। वह अपनी रोटी खाता हुआ जंगल में जाकर चिड़ियों के घोसलों को देखता फिरा। वह एक बलूत के पेड़ के पास पहुँचा जो पाँच आदमियों के बराबर ऊँचा था। वह खड़ा हो कर पेड़ को देखने लगा। वह सोच रहा था कि इसकी बड़ी-बड़ी शाखाओं में चिड़ियों के कितने घोसले होंगे। एकाएक उसे लगा कि पेड़ में से आवाज़ आ रही है, 'मुझे निकालो, मुझे निकालो !' लड़के ने चारों ओर देखा, लेकिन कोई भी दिखाई नहीं दिया। आवाज फिर सुनाई दी, इस बार वह जमीन में से आती जान पड़ रही थी।

उसने आश्चर्य से पूछा, 'कहाँ हो तुम ?' आवाज़ ने उत्तर दिया, 'मैं बलूत के पेड़ की जड़ में हूँ....। निकालो मुझे !' लड़के ने ज़मीन पर फैली जड़ों की ओर देखा। दो मोटी-मोटी पुरानी जड़ों के बीच में एक मटमैली बोतल अटकी दिखाई दी। उसने बोतल को खींच कर निकाला। उस पर जब रोशनी पड़ी, तो दिखाई दिया कि उसके भीतर एक छोटे जानवर-सी कोई चीज़ ऊपर-नीचे उछल-कूद रही है। बोतल के अन्दर से फिर आवाज़ आई—'निकालो मुझे, निकालो मुझे !' लड़के ने इस बात का विचार किये बिना कि मुझे कोई हानि हो सकती है, बोतल को खोल डाला। उसमें

से उछल कर एक प्रेत निकला, जो बढ़ते-बढ़ते उस बलूत के

पेड़ के ही बराबर बड़ा हो गया।

प्रेत ने तेज आवाज में कहा, 'जानता है, रे मनुष्य! मुझे बोतल से छुड़ाने का क्या इनाम है तेरा?' लड़के ने निडर हो कर कहा, 'नहीं, बताओ क्या है?'

प्रेत गरज उठा, 'मैं मार डालूँगा तुझे।' लड़के ने कहा, 'अगर तुमने मुझे यह बता दिया होता, तो मैं तुम्हें बाहर आने ही न देता। पर जहाँ तक मुझे मार डालने की बात
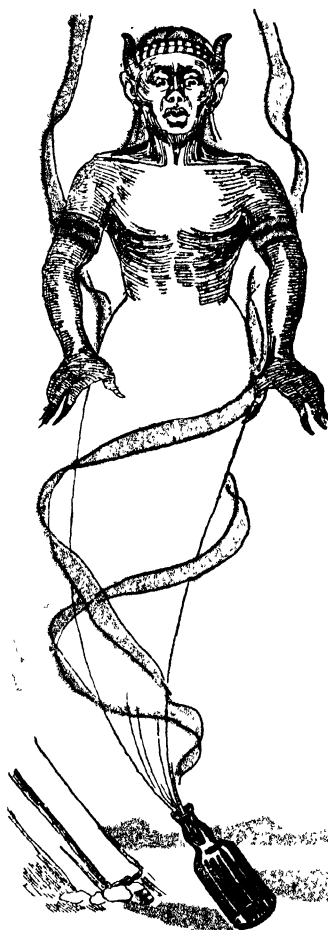
है, इस बारे में और लोगों की राय अलग हो सकती है।'

प्रेत ने जवाब दिया, 'मैं और किसी की भी राय की परवाह नहीं करता। क्या तुम समझते हो कि मैं उस बोतल में आनन्द मनाने के लिए कैद किया गया था। अरे, मुझे तो वहीं तपस्या करने के लिए बन्द किया गया था। इसलिए जो कोई मुझे छुड़ाएगा, मैं उसे मार डालूँगा।'

लड़के ने निडर होकर जवाब दिया, 'यह बात कहनी जितनी आसान है, करनी उतनी नहीं। मैं तो नहीं मानता कि तुम कोई प्रेत हो, अथवा तुम कभी उस छोटी-सी बोतल में रहे भी थे। तुम कोशिश करके भी उसमें नहीं जा सकते।'

प्रेत ने गर्व से कहा, 'इसमें क्या रखा है?' और बहुत ही थोड़ी-सी जगह में अपने आप को समेट कर वह चुपचाप बोतल में चला गया। जैसे ही वह उसमें पूरी तरह गया, लड़के ने जल्दी से बोतल की डाट लगा दी और फिर उसे पेड़ की जड़ों के बीच में घुसा दिया। इसके बाद वह अपने पिता के पास लौटने को था कि प्रेत फिर रोने-चिल्लाने लगा, 'मुझे निकाल दो, निकाल दो मुझे!'

लड़के ने झिड़क कर कहा, 'अब यह नहीं होने का। एक बार तुम्हें निकाला तो तुमने मुझे मार डालने की धमकी दी। अब मैं तुम्हें फिर नहीं निकलने दूँगा।'

प्रेत ने लड़के से प्रार्थना करते हुए कहा, 'अगर मुझे निकाल दोगे तो मैं तुम्हें इतना धन दूँगा जो तुम्हारे जीवन भर चले।' लड़के ने कहा, 'नहीं, तुम अपना वचन पूरा नहीं करोगे।' प्रेत बोला, 'अच्छा, तुम अपना ही सौभाग्य ठुकरा रहे हो। मैं अपना वचन रखूँगा और तुम्हें धन दूँगा।'

लड़के ने मन में सोचा, 'एक बार फिर खतरा लेकर देख लूँ। हो सकता है, उससे लाभ ही हो जाए।' इसलिए उसने जड़ों के बीच में से बोतल खींच ली और उसे खोल डाला।

प्रेत बाहर निकल कर बादल की तरह फैलने लगा और पहले जसा ही बड़ा हो गया। इस बार उसने लड़के को धमकी नहीं दी, बल्कि एक कपड़े का टुकड़ा देकर बोला, 'यह है तुम्हारा कीमती इनाम। इस कपड़े के एक सिरे को अगर घाव पर रख दोगे तो वह उसी क्षण अच्छा हो जायेगा, और अगर इसके दूसरे सिरे को लोहे या फौलाद पर रख दोगे तो वह चाँदी बन जायेगा।'

लड़के ने कहा, 'आजमाऊँगा मैं इसे।' और उसने कुल्हाड़ी को घुमा कर बलूत के पेड़ की छाल काट डाली। जब उसने उस पर कपड़ा रखा तो वह इस तरह ठीक हो गई मानो कभी कटी ही न थी।

लड़के ने कहा, 'यह ठीक है। अच्छा अब हम लोग शान्तिपूर्वक विदा लें।' प्रेत ने छुटकारा दिलाने के लिए लड़के को धन्यवाद दिया और लड़का इनाम के लिए प्रेत को धन्यवाद देकर अपने पिता के पास लौट आया। पिता उस पर नाराज हुआ, 'कहाँ थे अब तक? मैं तो जानता था कि इस तरह के काम से तुम जल्दी ही थक जाओगे।' लड़के ने जवाब दिया, 'चिन्ता न कीजिये पिता जी, मैं अभी कमी पूरी किये देता हूँ।'

पिता ने क्रोध से कहा, 'हाँ करोगे! बिना कुल्हाड़ी के ही कर लोगे, यह क्यों नहीं कहते?'

लड़के ने कहा, 'देखिये पिताजी, मैं एक ही झटके में उस पेड़ को गिरा दूँगा।' कुल्हाड़ी को कपड़े से रगड़ कर लड़के ने पेड़ काटने का बहाना किया। कुल्हाड़ी तो चाँदी की हो गई थी, इसलिए चोट से उसकी धार उलट गई। लड़का बोला, 'यह कुल्हाड़ी तो ठीक नहीं है पिताजी, देखिये तो इसकी धार!' पिता चीख उठा, 'अरे तुमने मेरे पड़ोसी की कुल्हाड़ी भी बेकार कर दी। कैसे मैं अब उसकी कीमत भरूँगा?'

लड़के ने कहा, 'मैं भर दूँगा क़ीमत पिता जी!' पिता चिल्लाया, 'मूर्ख लड़के, तुम्हारे पास कहाँ हैं रुपये

कीमत भरने के लिए ? तुम्हारे दिमाग में तो स्कूली लड़कों की शैतानी भरी है। लकड़ी काटना तुम क्या जानो ?'

लड़का बोल उठा, 'मुझसे तो होता नहीं इस कुल्हाड़ी से काम; आइये, घर चलें।' पिता ने कहा, 'तुम समझते हो कि मैं भी तुम्हारी तरह समय नष्ट करूँ। चाहो तो तुम अकेले घर चले जाओ।'

लड़के ने कहा, 'पहले तो कभी इस जंगल में आया नहीं हूँ। मुझे घर का रास्ता क्या मालूम ?' अन्त को पिता को उसके साथ ही घर लौटना पड़ा। घर आकर पिता ने लड़के से कहा, 'शहर जाओ और इस बेकार कुल्हाड़ी को बेच आओ। जो कुछ पैसे मिलें उन्हें पड़ोसी को देकर कहना कि बाकी पैसे जल्दी ही कमा कर दे दूँगा।' लड़का कुल्हाड़ी को एक सर्राफ के पास ले गया। सर्राफ ने चाँदी की जाँच करके उसे तोला और कहा, 'इसकी क़ीमत एक हज़ार रुपये हुई। मेरे पास इस समय इतना धन नहीं है।' लड़के ने कहा, 'जो कुछ हो वही दीजिये।' सर्राफ ने उसे सात सौ रुपये दे दिये और बाकी तीन सौ बाद में देने को कहा। घर लौट कर लड़के ने बाप से कहा, 'पिताजी, पड़ोसी से मालूम कीजिये कि उनकी कुल्हाड़ी की क्या कीमत थी। मेरे पास कुछ रुपये हैं।'

वोतल में से उछल कर एक प्रेत निकला जो की बढ़ते-बढ़ते उस बलूत के पेड़ के बराबर ही वड़ा हो गया।

– पृ० ४

पिता ने कहा, 'पड़ोसी ने पहले ही बता दिया है। उसकी कुल्हाड़ी की कीमत चार रुपये हुई।'

लड़के ने कहा, 'तो उसे पाँच रुपये दे दीजिये। देखिये पिताजी, मेरे पास बहुत से रुपये हैं।' तीन सौ रुपये देकर फिर बोला, 'अब आपको काम करने की ज़रूरत नहीं, आराम से रहिये।' लकड़हारा आश्चर्य से बोल उठा, 'हे भगवान, तुम्हें कहाँ से मिले इतने रुपये?'

लड़के ने बोतल में बन्द प्रेत की कहानी सुना कर कहा, 'दोबारा उस पर विश्वास करके मैं कितना सौभाग्यशाली रहा।' बाकी रुपये लेकर लड़का फिर कालेज पहुँचा और उसने शल्य-चिकित्सा पढ़ी। उसका जादू का कपड़ा सभी घावों को अच्छा कर देता था, इसलिए वह देश भर में सबसे बड़ा डाक्टर बन गया।
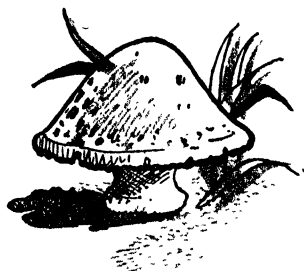
एक लकड़हारा था। एक दिन वह अपनी झोपड़ी में आग के पास बैठा था। पास में उसकी घरवाली बैठी चरखा कात रही थी। लकड़हारा बोला, 'कैसा सूना-सूना लग रहा है! हमारे एक भी बच्चा नहीं है, होता तो घर में खेलता फिरता और हमें आनन्द देता। और लोगों को देखो, अपने बच्चों के साथ कैसे सुखी रहते हैं!'

स्त्री आह भर कर बोली, 'और क्या! एक भी बच्चा हो जाय तो मैं निहाल हो जाऊँ। चाहे अंगूठे के बराबर ही बच्चा हो जाय, मैं उसे कितना प्यार करूँ!'

भाग्य से स्त्री की इच्छा पूरी हो गई। कुछ ही दिनों बाद उसे एक बच्चा हुआ, जो था तो खूब स्वस्थ लेकिन अंगूठे से बड़ा न था। पति-पत्नी ने सोचा, 'चलो, यह तो न हुआ कि हमारी इच्छा पूरी होने से रह गई। यह जितना छोटा है, हम उतना ही ज्यादा इसे प्यार करेंगे। उन्होंने उसका नाम 'अंगूठा शाह' रख दिया।

वे लोग उसे खूब अच्छा भोजन देते, लेकिन वह बड़ा नहीं हुआ। जितना छोटा पैदा हुआ था, उतना ही रहा। तो भी, उसकी आँखें तेज और चमकीली थीं। जल्दी ही उसकी होशियारी भी सामने आने लगी।

एक दिन लकड़हारा जब लकड़ी काटने के लिए जंगल को जाने लगा तो बोला, 'मैं तो जल्दी में हूँ, कोई अगर गाड़ी जंगल में पहुँचा देता तो कितना अच्छा होता!' अंगूठा शाह बोल उठा, 'पिता जी, यह काम मुझ पर छोड़ दीजिये। मैं गाड़ी को जंगल में पहुँचा दूँगा।' लकड़हारे ने हँस कर कहा, 'अरे कैसे भाई? तुम तो घोड़े की लगाम तक भी नहीं पहुँच सकोगे।' अंगूठा शाह बोला, 'फिक्र न कीजिये पिताजी! माता जी घोड़े को गाड़ी में जोत देंगी तो मैं उसके कान में बैठ जाऊँगा, और उसे बताता जाऊँगा कि वह किस रास्ते चले।' पिता ने कहा, 'ठीक है, ऐसा ही करके देखें।'

गाड़ी पहुँचाने का जब वक्त आया तो अंगूठा शाह की माँ ने गाड़ी में घोड़ा जोत दिया, और अंगूठा शाह को घोड़े के कान में रख दिया। जहाँ रुकने की जरूरत होती, वहाँ 'रुक जाओ' और जहाँ आगे बढ़ने की जरूरत होती, वहाँ 'चलो' कहता हुआ वह छोटा पहलवान घोड़े को ले चला। घोड़ा वहाँ तेजी से चलने लगा। अंगूठा शाह उससे कह रहा था, 'धीरे, धीरे!' तभी पास से दो राहगीर गुजरे।

उनमें से एक बोला, 'कैसी अजीब बात है कि गाड़ी चली जा रही है! लगता है कि गाड़ीवान जैसे घोड़े से बात कर रहा हो, लेकिन वह दिखाई नहीं देता!' दूसरे ने कहा, 'बात तो अजीब है। आओ, गाड़ी के पीछे-पीछे चल कर देखें कि वह कहाँ जा रही है!' वे लोग भी गाड़ी के साथ जंगल में वहाँ पहुँच गये जहाँ लकड़हारा था। पिता को देख कर अंगूठा शाह चिल्ला उठा, 'पिता जी, पिता जी! मैं यहाँ हूँ, मुझे नीचे उतार लो।' पिता ने एक हाथ से घोड़े को पकड़ कर दूसरे हाथ से अपने बेटे को निकाला, और पुआल के एक ढेर पर बैठा दिया। वहाँ बैठ कर वह बहुत खुश हुआ।

दोनों राहगीर यह सब देखते रहे और अचम्भे के कारण कुछ न कह सके। इसके बाद उनमें से एक आदमी दूसरे को एक तरफ ले जाकर बोला, 'अगर यह छोकरा हमें मिल जाये तो हमारी किस्मत खुल जाय। हम शहर-शहर घूम कर इसका तमाशा दिखाते फिरेंगे। आओ, इसे खरीद लें।' लकड़हारे के पास जाकर वे बोले, 'इन छोटे साहब की आप कितनी कीमत लेंगे, हम इन्हें आपसे भी ज्यादा अच्छी तरह रखेंगे।' पिता ने जवाब दिया, मैं इसे किसी भी हालत में नहीं बेच सकता, यह तो मेरे दिल का टुकड़ा है, दुनिया भर का सोना-चाँदी भी इसके आगे मेरे लिए बेकार है।'

अंगूठा शाह उस सौदे की बात सुन रहा था। पिता का कोट पकड़ कर वह उसके कंधे तक रेंग गया और उसके कान में चुपके से बोला, 'मुझे देकर धन ले लीजिये पिता जी! मैं फिर जल्दी ही आप के पास लौट आऊँगा।'

लकड़हारा बहुत-से सोने के बदले में अंगूठा शाह को देने को राजी हो गया। उन राहगीरों में से एक ने पूछा, 'कहाँ बैठना पसन्द करोगे, छोटे साहब?' अंगूठा शाह ने उत्तर दिया, 'मुझे अपने टोप के किनारे पर रख लीजिए, इससे मैं चारों तरफ घूम-फिर कर दुनिया देखता चलूँगा। वैसा ही किया गया। वे लोग यात्रा पर चल पड़े। शाम होने पर अंगूठा शाह ने कहा, 'मुझे नीचे उतारिये, अब मैं थक गया हूँ।' आदमी ने टोप उतार कर अंगूठा शाह को सड़क के किनारे के एक खेत में मिट्टी के ढोंके पर बैठा दिया। अंगूठा शाह चुपके से खिसक गया और एक पुराने चूहे के बिल में जा पहुँचा। वहाँ पहुँच कर उसने अपने मालिकों की ओर मुँह करके कहा, 'मैं तो चला जनाब, अब फिर कभी मुलाकात हो तो मेरी निगरानी जरा जम कर कीजियेगा।' मालिक लोग सीधे चूहे के बिल के पास जा पहुँचे और अपनी छड़ियों से उसे कुरेदने लगे। लेकिन कोई नतीजा न निकला। अंगूठा शाह बराबर भीतर की ओर सरकता गया। आखिर-

कार रात हो आई, इसलिए उन लोगों को खाली हाथ लौटना पड़ा ।

अंगूठा शाह ने जब देखा कि वे लोग चले गये तो वहाँ से निकल आया । खेत में पड़े ऊँचे-नीचे मिट्टी के ढोंकों पर चलता हुआ वह एक घोंघे के पास पहुँच गया । उसने सोचा इसमें मैं बड़े आराम से सोऊँगा । वह उसमें जा घुसा । वह सोने ही वाला था कि उसने दो आदमियों को बातचीत करते सुना । एक कह रहा था, 'उस धनी आदमी के पास से सोना और चाँदी किस तरह चुराया जाए ।' अंगूठा शाह जोर से कह उठा, 'मैं बताता हूँ ।' चोर डर कर बोला, 'कहाँ से आई यह आवाज़ ?' अंगूठा शाह ने फिर कहा, 'मुझे ले चलो अपने
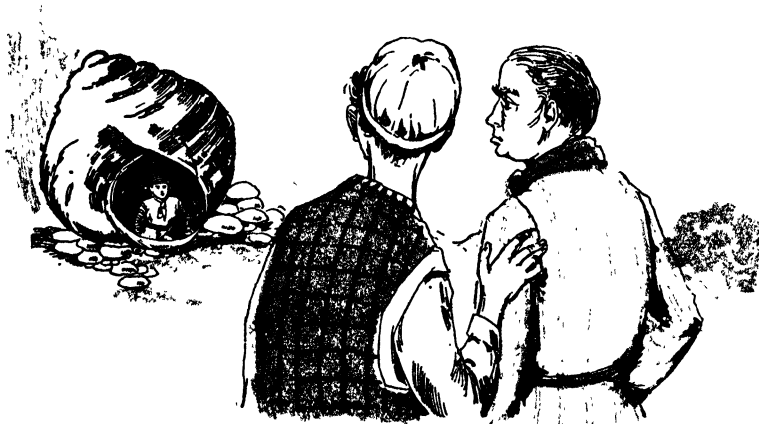
साथ, मैं तुम्हें बता दूँगा कि कैसे उसका धन लिया जाए !' चोरों ने पूछा, लेकिन आप हैं कहाँ ?' अंगूठा शाह ने जवाब दिया, 'जमीन की तरफ देखो और जहाँ से आवाज़ आ रही है, उधर ध्यान दो।' अन्त में चोरों ने उसे ढूँढ़ निकाला और अपने हाथों पर उठा लिया। उन्होंने पूछा, 'अरे छोटे पहलवान! तुम हमारा क्या काम कर सकते हो ?' अंगूठा शाह बोला, 'वाह ! मैं दरवाजे की छड़ों में घुस जाऊँगा, और जो कुछ कहोगे, भीतर से फेंक दूँगा।' चोर बोले, 'यह विचार तो अच्छा है, आओ चलो हमारे साथ और अपना करिश्मा दिखाओ।'

जब वे लोग धनी आदमी के मकान पर पहुँच गये तो अंगूठा शाह एक दरवाजे की छड़ों में से मकान के भीतर चला गया और वहाँ से ज़ोर से बोल उठा, 'जो कुछ यहाँ है, क्या सब लोगे ?' चोर बेचारे डर कर बोले, 'धीरे बोलो भाई, धीरे ! लोग जग न जाएँ।' अंगूठा शाह ने ऐसा रुख बनाया मानो समझा ही न हो और उतने ही जोर से कह उठा, 'कितना लोगे, क्या सब फेंक दूँ बाहर ?'

पास के ही कमरे में रसोईदारिन लेटी थी। शोर सुन कर वह उठ बैठी। चोर डर के मारे भाग खड़े हुए, थोड़ी दूर जाकर फिर उन्होंने हिम्मत की और सोचा, 'यह छोकरा तो हमें मूर्ख बना रहा है।' फिर लौट कर चुपके से कहा, 'मजाक

मत करो दोस्त, थोड़ा-सा धन बाहर फेंक दो।' अंगूठा शाह ने फिर जोर से कहा, 'अच्छा, लो, हाथ फैलाओ. . . .यह आया।' रसोईदारिन ने यह बात साफ-साफ सुनी, और दरवाजा खोलने को तेजी से दौड़ी। चोर इस तरह भागे मानो कोई भेड़िया उनका पीछा कर रहा हो। रसोईदारिन वहाँ किसी को न पा कर लैम्प लेने गई। जब तक वह लौटे कि अंगूठा शाह खलिहान में घुस गया। बेचारी नौकरानी ने कोना-कोना छान डाला, लेकिन वहाँ कोई होता तो दिखाई देता। उसने सोचा, जरूर मैं खुली आँखों से ही कोई सपना देख रही थी। इसलिए वह फिर सोने चली गई। अंगूठा शाह ने घास की कोठरी में अपने सोने के लिए एक आराम की जगह तलाश कर ली और सोचा, 'दिन निकलने पर मैं उठूँगा, और अपने माँ-बाप के पास लौट जाऊँगा।'

लेकिन उस बेचारे के मन की मन में ही रह गई। क्या-क्या मुसीबतें नहीं आतीं इस दुनिया में! दिन निकलने से पहले ही रसोईदारिन गायों को चारा देने के लिए उठ बैठी। वह सीधी घास की कोठरी में गई और घास का एक ढेर लेकर चल दी। बेचारा अंगूठा शाह उसी के बीच में बेखबर सो रहा था। उसकी नींद तब तक न खुली जब तक कि गाय ने उसे घास के साथ अपने मुँह में न डाल लिया।

अंगूठा शाह ने मन में कहा, 'यह भी खूब रही, सोचा क्या था, हुआ क्या !' किसी तरह उसने गाय के दाँतों से अपने आप को बचाया, और अन्त में उसके पेट में पहुँच गया। वहाँ उसने सोचा, 'यहाँ तो बड़ा अँधेरा है, मालूम होता है कि लोग सूरज की रोशनी के लिए इस कमरे में खिड़कियाँ बनाना भूल गये हैं, क्या अच्छा हो कि यहाँ मोमबत्ती ही जला दी जाए।'

अंगूठा शाह को वह स्थान बिल्कुल पसन्द न आया। सबसे बड़ी खराबी तो यह थी कि ऊपर से बराबर घास चली आ रही थी, इसलिए वहाँ जगह की तंगी होती जा रही थी। अन्त को जब न रहा गया तो वह चिल्ला उठा, 'और घास मत लाओ, और घास मत लाओ !' उसी वक्त नौकरानी गाय दुहने आई। उस आवाज़ को सुन कर वह इतनी डर गई कि लड़खड़ा कर भाग खड़ी हुई और उससे दूध का बर्तन भी छूट गिरा। वह अपने मालिक के पास जा कर बोली, 'हुज़ूर, हुज़ूर ! गाय तो आदमी की बोली बोल रही है।' मालिकने सोचा—यह नौकरानी पागल हो गई है। तो भी वह उसके साथ, यह देखने के लिए कि क्या बात है, गाय के पास गया। तभी अंगूठा शाह फिर चीख उठा, 'और घास मत लाओ, और घास मत लाओ !' मालिक भी इससे डर गया। उसने सोचा, हो न हो, इस गाय पर किसी ने जादू

कर दिया है। इसलिए उसने आज्ञा दी कि गाय को तुरन्त मार डाला जाय। गाय को मार डाला गया। उसका पेट जिसमें अंगूठा शाह भी था, गोबर के एक ढेर पर फेंक दिया गया।

अब अंगूठा शाह ने बाहर निकलने की कोशिश शुरू की। लेकिन यह आसान काम तो था नहीं। वह अपना सिर ही बाहर निकाल पाया था कि एक नई मुसीबत आ पड़ी। एक भूखे भेड़िये ने झपट कर गाय का सारा पेट एक ही बार में गले के नीचे उतार लिया, और भाग चला। अंगूठा शाह, अब अपने आप को भेड़िये के पेट में पाकर भी निराश न हुआ। उसने सोचा, भेड़िये को मुझसे बातचीत करने में तो कोई एतराज होगा नहीं, इसलिए बोल उठा, 'दोस्त, मैं तुम्हें एक बढ़िया दावत में ले चलता हूँ।' भेड़िये ने पूछा, 'कहाँ?' अंगूठा शाह ने अपने पिता के मकान का रास्ता बता कर कहा, 'तुम नाली के रास्ते रसोईघर में पहुँच जाना और वहाँ बढ़िया-बढ़िया मिठाइयाँ और दूसरे खाने जी भर कर खाना।' भेड़िये को क्या था, उसी रात को वह वहाँ जा पहुँचा और नाली के रास्ते से रसोईघर में जाकर खूब खाया-पिया। खा-पी कर वह लौटना चाहता था, लेकिन उसने इतना ज्यादा खा कर पेट फुला लिया था कि जिस रास्ते से वह गया था, उसी रास्ते से लौटना उसके लिए मुश्किल हो गया।

अंगूठा शाह की यही तो चाल थी। अब तो उसने जी भर कर शोर मचाना शुरू किया। भेड़िये ने कहा, 'खामोश रहो न, ऐसे तो तुम घर भर को जगा दोगे।' ये छोटे हजरत बोले, 'मुझे इससे क्या? आप तो खूब मज़ा ले चुके, अब मेरा दिल है, मैं भी खुशी मना रहा हूँ।' उसने फिर ज़ोर-ज़ोर से गाना और धूम मचाना शुरू कर दिया।

लकड़हारा और उसकी पत्नी इस शोर से जग गये। उन्होंने किवाड़ की दरार में से देखा तो भेड़िया! उन दोनों के डर का ठिकाना न रहा। तो भी लकड़हारे ने डर कर कुल्हाड़ी उठा ली और अपनी पत्नी को हँसिया दे दिया। वह बोला, 'तुम पीछे रहो, मैं उसके सिर पर वार करूँ, तुम उसके पेट में हँसिया भोंक देना।'

यह सब सुन कर अंगूठा शाह कह उठा, 'पिता जी, पिता जी! मैं यहाँ हूँ, यह भेड़िया मुझे निगल गया है।' पिता कह उठा, 'ईश्वर का धन्यवाद! हमारा प्यारा बेटा हमें फिर मिल गया।' उसने अपनी पत्नी से कहा, 'हँसिया मत चलाना, कहीं हमारे बेटे के न लग जाए।'

लकड़हारे ने ज़ोर का वार किया और भेड़िये का सिर धड़ से अलग जा गिरा। इसके बाद उन्होंने भेड़िये के शरीर को चीर-फाड़ कर अंगूठा शाह को बाहर निकाला। पिता ने कहा, 'हमारे मन में तुम्हारे लिए कितनी आशंकाएँ उठ रही

थीं ।' अंगूठा शाह बोला, 'हाँ पिता जी ! आपसे अलग होने के बाद मैंने, एक तरह से, सारी दुनिया की यात्रा पूरी कर ली, अब फिर मैंने आज़ादी की साँस ली है ।' पिता ने पूछा, 'अच्छा, तो कहाँ-कहाँ गये तुम ?' अंगूठा शाहने जवाब दिया, 'मैं गया एक चूहे की बिल में, एक घोंघे में, गाय के पेट में और फिर भेड़िये के पेट में; और देखिये, मजे से लौट भी आया ।'

माँ-बाप बोले, 'अब चाहे दुनिया भर की दौलत भी हमें मिले, उसके बदले हम तुम्हें नहीं बेचेंगे ।' इसके बाद उन लोगों ने अपने नन्हें प्यारे बच्चे को चूमा और खूब प्यार किया । उसे बढ़िया-बढ़िया भोजन कराये । उसके पुराने कपड़े यात्रा में मैले हो गये थे, इसलिए बिल्कुल नये कपड़े बनवा कर पहनाये ।
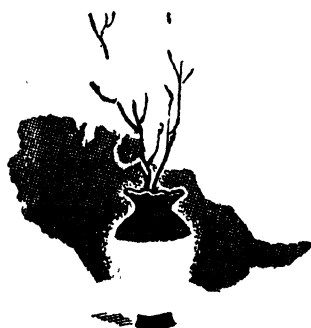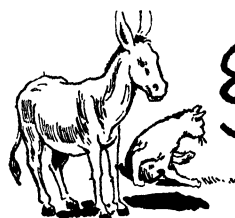
एक किसान के पास एक गधा था। बहुत वर्षों तक उस गधे ने किसान की सेवा की। लेकिन अब वह बूढ़ा हो चला था और किसी काम का नहीं रह गया था। इसलिए किसान ने सोचा, 'क्या फायदा इसका पेट भरते रहने से, इसे तो मरवा डालूँ तभी अच्छा।' लेकिन गधा अपने मालिक के इस इरादे को भाँप गया, और एक दिन चुपके से निकल भागा। उसने गन्धर्व नगरकी यात्रा आरम्भ कर दी, सोचा--'हो सकता है कि वहाँ मुझे मुख्य संगीतकार का पद मिल जाए।'

थोड़ी दूर जाने पर उसे एक कुत्ता मिला, जो कि सड़क के किनारे पड़ा हाँफ रहा था। गधे ने पूछा, 'क्यों हाँफ रहे हो दोस्त ?' कुत्ते ने जवाब दिया, 'मेरा मालिक मुझे मार डालना चाहता है, क्योंकि मैं अब बूढ़ा और कमज़ोर हो गया

हूँ और शिकार में उसकी मदद नहीं कर पाता। इसीलिए मैं भाग आया हूँ, बताओ जिन्दा रहने के लिए क्या करूँ?'

गधा बोला, 'अरे यार! चलो मेरे साथ, मैं गन्धर्वनगर जा रहा हूँ, वहाँ संगीतकार बनूँगा। तुम भी वहाँ अपनी किस्मत आजमाना।' कुत्ता राजी हो गया। वे दोनों झूमते हुए चल दिये।

कुछ आगे पहुँचने पर उन्हें एक बिल्ली दिखाई दी, जो सड़क के बीचोंबीच रोनी सूरत लिये बैठी थी। गधे ने पूछा, 'देवी जी! क्या बात है जो आप इतनी उदास दिखाई दे रही हैं?' बिल्ली ने जवाब दिया, 'जब जिन्दगी ही खतरे में हो तो कोई खुश कैसे रह सकता है? अब मैं बूढ़ी हो चली हूँ, घर में दौड़-दौड़ कर अब मुझसे चूहे नहीं पकड़े जाते, मुझे तो बस आग के पास आराम से पड़े रहना अच्छा लगता है। इस कारण, मेरी मालकिन मुझे पकड़ कर डुबाने लिये जा रही थी। सौभाग्य से बच कर भाग तो आई हूँ, लेकिन गम यह है कि अब जिन्दगी कैसे चलेगी?'

गधे ने समझाया, 'तब तो तुम भी हमारे साथ गन्धर्व-नगर को चलो। रात के समय तुम बहुत अच्छा गाती हो, वहाँ चल कर संगीतकारी से तुम्हारा भाग्य खुल जाएगा। बिल्ली को यह विचार बहुत पसन्द आया और वह उन दोनों के साथ हो ली।

ग्रिम की

कुछ देर बाद जब ये सब एक खेत के पास से गुजर रहे थे, तो एक झोपड़ी के दरवाजे पर बैठा एक मुर्गा दिखाई दिया। वह मुर्गा अपनी पूरी ताकत से चीख रहा था। गधे ने कहा, 'सच कहता हूँ दोस्त, तुम्हारा चीखना बड़ा ही शानदार है; मगर यह तो बताओ कि यह हो किसलिए रहा है?' मुर्गे ने जवाब दिया, 'अरे भाई, अभी कुछ देर पहले मैं कह रहा था कि मौसम बड़ा सुहाना है। मेरी मालकिन और उसका रसोइया बजाय इसके कि मुझे धन्यवाद देते, उन्होंने धमकी दी है कि कल को मुझे हलाल कर डालेंगे और इतवार के दिन जो मेहमान आनेवाले, हैं उनके लिए शोरबा बनायेंगे।

गधे ने कहा, 'तोबा! तोबा!!...हमारे साथ चलो उस्ताद! फिर जो भी हो, यहाँ रह कर सिर कटाने से तो अच्छा ही रहेगा। कौन जानता है, अगर कहीं हम लोग ठीक से गाने लगे, तो हम एक संगीत-मंडली बना सकते हैं। इसलिए आओ चलें।' मुर्गे ने इस बात को हृदय से स्वीकार किया, और वे लोग आगे बढ़े।

उस दिन वे गन्धर्वनगर नहीं पहुँच सके। इसलिए रात हो जाने पर वे लोग सोने के लिए एक जंगल में चले गये। गधा और कुत्ता एक बड़े पेड़ के नीचे पड़ रहे, बिल्ली उस पेड़ की डाल पर जा चढी। मुर्गे ने सोचा कि जितना ज्यादा ऊँचे

पर बैठूँगा, उतना ही सुरक्षित रहूँगा, इसलिए वह उड़ कर पेड़ की फुनगी पर जा बैठा। फिर अपनी आदत के अनुसार सोने से पहले उसने अपने चारों ओर निगाह डाल कर देखा के कहीं कुछ गड़बड़ तो नहीं है। दूर पर उसे कुछ जगमगाहट दिखाई दी। उसने अपने साथियों को पुकार कर कहा, 'मुझे रोशनी दिखाई दे रही है, जरूर पास में ही कहीं कोई मकान है। गधे ने कहा, 'अगर ऐसी बात है तो आओ हम लोग अपना स्थान बदलें क्योंकि यह जगह दुनिया की सबसे अच्छी जगह थोड़े ही है।' कुत्ता बोला, 'हाँ ठीक है, वहाँ मुझे माँस का टुकड़ा या हड्डी मिल जाये तो क्या कहना!' इसलिए वे सब उस स्थान की ओर चल दिये, जहाँ उस्ताद
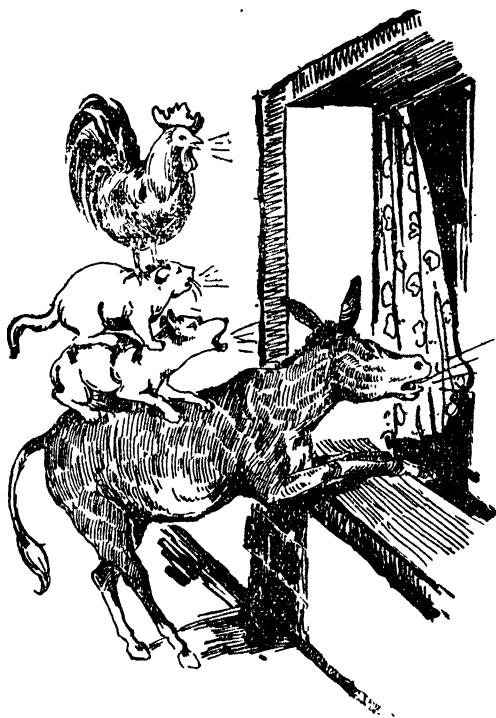
मुर्गे को रोशनी दिखाई दी थी। रोशनी ज्यादा साफ होती गई, और आखिरकार वे एक ऐसे मकान के पास पहुँच गये जिसमें डाकू रहते थे।

गधा उस मंडली में सबसे लम्बा था इसलिए उसी ने उचक कर खिड़की से झाँका। उस्ताद मुर्गे ने पूछा, 'क्या देखा, दोस्त?' गधा बोला, 'देखा क्या, एक मेज पर तमाम किस्म की बढ़िया चीजें सजी हैं, उसके चारों तरफ बैठे डाकू लोग मजा कर रहे हैं।' मुर्गे ने कहा, 'तब तो हमारे लिए यही जगह बढ़िया रहेगी।' गधे ने कहा, 'हाँ और क्या, बस हम लोग किसी तरह अन्दर पहुँच जाएँ।'

उन लोगों ने आपस में सोच-विचार किया कि किस तरह डाकुओं को बाहर निकाल दिया जाय। अन्त में उन्होंने एक योजना बना ली। आगे के पैरों को खिड़की पर टिका कर गधा अपनी पिछली टाँगों पर सीधा खड़ा हो गया। कुत्ता उसकी पीठ पर चढ़ गया। बिल्ली कुत्ते के कन्धों पर जा चढ़ी, और मुर्गा उड़ कर बिल्ली के सिर पर जा बैठा। सब ठीक हो जाने पर उनका संगीत आरम्भ हुआ। गधा रेंकने लगा, कुत्ता भौं-भौं करने लगा, बिल्ली म्याऊँ म्याऊँ करने लगी, और मुर्गा कुकड़ूँ-कूँ करने लगा। एक साथ वे लोग खिड़की पर धक्का मारकर कमरे में लथपथ गिर पड़े। खिड़की का शीशा टूटने से बहुत ज़ोर की झनझनाहट पैदा हुई। डाकू

लोग संगीत छिड़ने पर तो बिल्कुल भी नहीं डरे थे, लेकिन अब उन्हें निश्चय हो गया कि कोई भयानक भूत उन पर आ टूटा है। वे तेजी से भाग खड़े हुए।

एक बार में ही रास्ता साफ हो जाने पर ये गन्धर्वनगर के यात्री मजे से बैठ गये और डाकुओं का छोड़ा भोजन इतनी उमंग से खाने लगे मानो अब एक महीने तक और कुछ खाना ही नहीं हो। खूब छक कर खा लेने पर इन लोगों ने रोशनी बुझाई और हर एक ने सोने के लिए अपनी-अपनी पसन्द की जगह चुन ली। गधा आँगन में भुस के ढेर पर लेट रहा, कुत्ता दरवाजे के पास पड़ी चटाई पर लम्बायमान हुआ, बिल्ली गर्म राख के पास सिमट कर पड़ रही, और मुर्गा छत के ऊपर के शहतीर पर जा बैठा। यात्रा में ये लोग थक तो गये ही थे, इसलिए जल्दी ही इन्हें नींद आ गई।

लगभग आधी रात को डाकुओं ने दूर से देखा कि रोशनी बुझ गई है, और सब कुछ शान्त जान पड़ता है। इसलिए उन्होंने सोचा कि हमारा इतनी जल्दी भाग खड़े होना ठीक नहीं हुआ। उनमें से एक डाकू औरों से ज्यादा हिम्मतवाला था। वह यह देखने जा पहुँचा कि वहाँ क्या हो रहा है। कहीं कोई गड़बड़ी न देखकर वह रसोईघर में चला गया। टटोलते-टटोलते उसे एक दियासलाई मिल गई। वह उससे

ग्रिम की

मोमबत्ती जलाना चाहता था । उसी समय उसकी निगाह बिल्ली की चमचमाती आँखों पर पड़ी । उसने समझा ये दहकते हुए कोयले हैं । उन्हें ठीक से देखने के लिए उसने एक सलाई जलाई । बिल्ली उसके इरादे को क्या समझती । वह तो एकाएक उस पर झपट पड़ी और उसका मुँह नोचना शुरू कर दिया । बेचारा डाकू अत्यन्त भयभीत हो उठा और पीछे के दरवाज़े से भागने लगा । लेकिन वहाँ कुत्ता उस पर झपट पड़ा और उसकी टाँग में काट लिया । इस पर भी जब वह अहाते में से गुजरने लगा तो गधे ने उस पर दुलत्ती झाड़ी । मुर्गा भी उस शोर से जग गया था, वह भी अपनी पूरी ताकत से कुकड़ू-कूँ कर उठा ।

अब तो बेचारा डाकू सिर पर पैर रख कर भागा और अपने साथियों के पास पहुँच कर सरदार से कहने लगा, 'वहाँ तो एक बड़ी डरावनी चुड़ैल घुसी बैठी है, उसने अपने लम्बे-लम्बे नाखूनों से मेरा मुँह नोच डाला । दरवाजे के पीछे एक आदमी छिपा बैठा है, उसके हाथ में चाकू है, उसने मेरी टाँग में घाव कर दिया । अहाते में एक काला राक्षस खड़ा है, उसने मेरे ऊपर गदा दे मारी । छत पर एक भूत बैठा है, वह चिल्ला उठा कि इस बदमाश को धर पटको ।'

डाकुओं की हिम्मत फिर उस मकान में जाने की न हो सकी । ऐसा अच्छा निवासस्थान पाकर उन सब संगीतकारों की खुशी का क्या कहना ! वे वहीं बस गये । तब से आज तक वे वहीं रहते आ रहे हैं ।
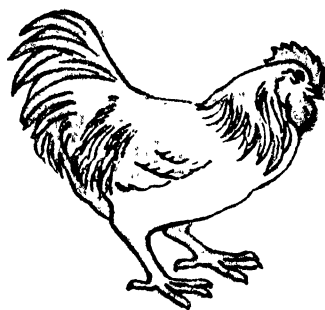
एक रानी थी। उसका पति कुछ वर्ष पहले मर गया था। उसके केवल एक कन्या थी। कन्या अत्यन्त रूपवती थी। जब कन्या सयानी हो गई, तो उसकी सगाई एक राजकुमार से हुई। राजकुमार दूर देश में रहता था। कन्या के लिए जब विवाह की बिदाई का दिन आया तो रानी ने उसे सोने और चाँदी के बहुत से बहुमूल्य उपहार दिये, और अनेक तरह के वस्त्राभूषण भी दिये। यात्रा में उसके साथ रह कर सेवा करने के लिए सभी ने अपनी निजी नौकरानी भी दे दी। साथ ही कई घोड़े दिये, जिनमें राजकुमारी का फलदा नाम का घोड़ा भी था। उस घोड़े में यह गुण था कि वह आदमियों की तरह बात-चीत कर सकता था।

विदाई से पहले रानी ने राजकुमारी को अपने कमरे में बुलाया। उसने अपनी उँगली काट ली जिससे खून बहने लगा। एक सुन्दर रूमाल पर तीन बूँद खून टपका कर उसने

अपनी बेटी को दे दिया और कहा, 'बेटी, इसे अपने पास रखना, विपत्ति के समय यह तुम्हारी रक्षा करेगा ।'

प्रेमपूर्वक विदा लेकर राजकुमारी ने उस रूमाल को अपनी चोली में रख लिया और अपने पति से मिलने चल दी ।

कुछ दूर जाने पर राजकुमारी को प्यास लगी । उसने नौकरानी से कहा कि वह उतर कर पास की नदी से उसके लिए पानी ला दे । नौकरानी ने ढिठाई से जवाब दिया, 'प्यास लगी है, तो खुद जाकर पानी लाओ, मैं तुम्हारी सेवा अब नहीं करूँगी ।'

राजकुमारी को इतने जोर की प्यास लगी थी कि वह स्वयं पानी लाने चल दी । उसे बड़ा ही आश्चर्य और दुःख हो रहा था। उसके रूमाल पर की खून की तीन बूँदें कह उठीं—

हा बेटी ! यदि रानी को यह बात ज्ञात हो जाए ।
उसका हृदय प्रेम के कारण टूक-टूक हो जाए ।।

जैसे ही राजकुमारी पानी पीने को झुकी, वह रूमाल जिस पर खून की बूँदें टपकाई गई थीं, उसकी चोली में से सरक कर पानी में गिर पड़ा और नदी की धारा में बह गया । राजकुमारी उसे पकड़ नहीं पाई । नौकरानी यह बात देख रही थी । वह मन ही मन प्रसन्न हुई, क्योंकि उसने समझ लिया कि अब राजकुमारी उसके कब्ज़े में आ गई ।

जब राजकुमारी अपने घोड़े पर चढ़ने को आई, तो नौकरानी चिल्ला उठी, 'अरे नहीं, अब तुम इस घोड़े पर चढ़ो, और मैं फलदा पर चढ़ूँगी।' इसके बाद नौकरानी ने जबरदस्ती राजकुमारी के बढ़िया कपड़े उतरवा कर स्वयं पहन लिए और उस बेचारी को अपने भद्दे कपड़े पहना दिये। प्राणों की धमकी देकर उसने राजकुमारी से ईश्वर के आगे यह प्रतिज्ञा भी करा ली कि राजमहल में पहुँच कर वह यह बात किसी से भी नहीं कहेगी। राजकुमारी कोमल और सुशील थी, इस कारण उसे कठोर और निर्दय नौकरानी की आज्ञा माननी पड़ी।

जो कुछ हुआ था, फलदा ने वह सब देखा था। तो भी उसे राजकुमारी की जगह नौकरानी को अपने ऊपर ले जाना पड़ा। बेचारी राजकुमारी नौकरानी के मनहूस टट्टू पर चढ़ने को विवश हुई। अन्त को वे लोग राजकुमार के महल में पहुँच गये।

बड़ी धूम-धाम से उन लोगों का स्वागत किया गया। लेकिन राजकुमार ने नौकरानी को ही असली राजकुमारी समझ कर घोड़े से उतारा। राजकुमारी घोड़ों के साथ सीढ़ियों के नीचे ही खड़ी रही।

जब वह वहीं खड़ी थी तो राजकुमार ने उसे खिड़की में से देख लिया। यद्यपि वह साधारण से कपड़े पहने थी, तो

भी राजकुमार ने उसकी कोमलता और उसके सौन्दर्य को लक्ष्य किया। उसने नकली राजकुमारी से पूछा—'सीढ़ियों के नीचे कौन खड़ी है ?'

नकली राजकुमारी ने जवाब दिया, 'वह तो मेरी रसोई-दारिन है, यात्रा में साथ देने को मैं उसे ले आई थी। कुछ काम दिलवा दो उसे। मेरी सेवा उससे न होगी, क्योंकि वह बहुत फूहड़ है।'

इस तरह असली राजकुमारी को यह काम दिया गया कि वह महल के बाहर हंसों की देख-भाल करनेवाले लड़के कोनराड की मदद करे।

कुछ समय बाद ही नकली राजकुमारी ने राजकुमार से कहा कि फलदा को मरवा डालो, क्योंकि वह बड़ा खतरनाक है, उसने मुझे रास्ते में गिरा दिया था। उसे प्रसन्न करने के लिए राजकुमार ने वैसा ही किया। बात यह थी कि नकली राजकुमारी मन में डर रही थी कि फलदा किसी से कह न दे कि मैंने राजकुमारी के साथ कैसा बर्ताव किया है। इस कारण जब उसे पता लगा कि फलदा मार डाला जायेगा तो उसे प्रसन्नता हुई।

असली राजकुमारी को भी पता लग गया कि घोड़ा मरवाया जा रहा है। इसलिए उसने घोड़े के व्यापारी से कहा कि फलदा का सिर एक गिन्नी में मेरे हाथ बेच दो, और

ग्रिम की

उसे उस ऊँची मेहराब पर कील से जड़ दो, जिसके नीचे से मैं रोज हंसों को ले जाती हूँ। राजकुमारी ने सोचा, इसी तरह मैं अपने पुराने मित्र को रोज देख लिया करूँगी।

घोड़े के व्यापारी ने राजकुमारी का कहना कर दिया। अगले दिन जब कोनराड और हंसों के साथ राजकुमारी उस मेहराब के नीचे गई तो घोड़े का सिर देख कर उसने दुःख की साँस ली, और बोली, 'प्यारे फलदा, हाय! तुम्हारे भाग्य में भी यही लिखा था।'

इस पर फलदा ने उत्तर दिया--

'राजकुमारी, दशा तुम्हारी यदि रानी माँ सुन ले।
तो सचमुच वह दुख के कारण अपनी छाती धुन ले॥

कोनराड और राजकुमारी हंसों को शहर में से ले जाकर एक मैदान में पहुँचे। राजकुमारी एक लट्ठे पर बैठ गई, और उसने अपने सुनहले बाल खोल दिये। कोनराड ने उसके चमकीले बालों को देखा तो उनमें से एक लट को खींचना चाहा। लेकिन राजकुमारी गा उठी--

कोनराड की टोपी लेकर उड़ जाओ पवनेश!
चक्कर दो उसको जब तक मैं बाँधूँ अपने केश!!

हवा का एक तेज झोंका कोनराड की टोपी लेकर उड़ गया। कोनराड सारे मैदान में तब तक उसका पीछा करता रहा, जब तक कि राजकुमारी बाल बाँधने में लगी रही।

खीझ के कारण कोनराड उससे दिन भर नहीं बोला । इसलिए वे लोग चुपचाप हंसों की देख-भाल करते रहे और साँझ को उसी तरह चुपचाप घर लौट आए ।

अगले दिन भी सभी बातें ठीक वैसे ही हुईं । उस दिन भी कोनराड राजकुमारी के सुनहले बालों की लट नहीं पा सका और क्रोध के कारण एक शब्द भी न बोला । हंसों को लौटा लाने के बाद कोनराड ने राजा से शिकायत की कि वह उस लड़की से बहुत नाराज़ है, इसलिए उसके साथ काम नहीं करेगा । राजा ने उसके क्रोध का कारण पूछा । कोनराड ने जो कुछ हुआ था, सब सच-सच बता दिया । उसने बताया कि मेहराब पर के घोड़े के सिर से उस लड़की ने क्या कहा और घोड़े के सिर ने क्या जवाब दिया । इसके बाद फि किस तरह उसने लड़की की लट पकड़नी चाही और किस तरह हवा उसकी टोपी ले उड़ी ।

उसकी कहानी सुन कर, राजा ने कहा कि हंस-कन्या के साथ कल सुबह और जाओ । अगले दिन राजा मेहराब के खम्भे के पास छिप कर खड़ा हो गया और लड़की तथा घोड़े के सिर की बात-चीत सुनी । थोड़ा फासला रख कर वह कोनराड और हंस-कन्या के पीछे-पीछे मैदान में गया और पेड़ों की आड़ में खड़ा हो गया । अपने बाल खोल कर लड़की गाने लगी—

ग्रिम की

कोनराड की टोपी लेकर उड़ जाओ पवनेश !
चक्कर दो उसको जब तक मैं बाँधूँ अपने केश !!

जोर की हवा से कोनराड की टोपी उड़ गई, और कोनराड उसके पीछे-पीछे भागा। जब तक लड़का लौटा, लड़की अपने बाल ठीक से बाँध चुकी थी।

इस सब घटना को बड़े ध्यान से देख कर राजा चुपचाप अपने महल को लौट आया। शाम को उसने हंस-कन्या को

बुलवाया और जो कुछ देखा और सुना था, उसके बारे में साफ-साफ बताने को कहा ।

असली राजकुमारी बोली, 'किसी भी प्राणी को मैं वह बात नहीं बता सकती, क्योंकि ईश्वर के आगे मैंने ऐसी ही प्रतिज्ञा की है ।'

राजा उससे और अधिक अनुरोध नहीं कर सका । अन्त को उसने कहा, 'अगर तुम किसी प्राणी को वह बात नहीं बता सकतीं, तो चिमनी के कोने में खड़ी होकर कह डालो, इससे तुम्हारा मन हल्का हो जायेगा ।'

राजा कमरे से बाहर चला गया । वह सोच रहा था कि लड़की उसका कहना नहीं मानेगी । लेकिन लड़की चिमनी के कोने में जाकर अपनी दुखी दशा पर शोक करने लगी । वह बोली, 'हाय ! सच्ची राजकुमारी होकर भी मैं हंस-कन्या बनी बैठी हूँ । मेरी नौकरानी ने मेरा पद छीन लिया है । उसने मेरे कपड़ों को और पति को भी छीन लिया है । सच है, अगर मेरी रानी-माँ को यह बात पता लग जाय तो उसका हृदय टूक-टूक हो जायगा ।

राजा पास के ही कमरे में चिमनी के पास खड़ा था । उसने राजकुमारी का एक-एक शब्द साफ-साफ सुन लिया । इसलिए जब राजकुमारी चुप हो रही, तो कमरे में प्रवेश करके राजा ने उसे अपने पास बुलाया । नौकरों को उसने

आज्ञा दी कि इसे ले जाकर शाही कपड़े पहनाओ और मेरे पास वापस ले आओ।

जब नौकर उसे वापस लाये तो वह शाही वस्त्रों और सोने के आभूषणों से सजी हुई थी। इससे उसका सौन्दर्य इतना निखर आया कि उसके कथन को सत्य सिद्ध करने लगा। राजा ने अपने पुत्र को बुलाया कि वह आकर अपनी असली पत्नी को देखे, अब तक वह एक नौकरानी से धोखा खाता रहा है। राजकुमार उसकी सुन्दरता पर मुग्ध हो उठा। साथ ही उसे इस बात पर बड़ा खेद हुआ कि राजकुमारी के साथ अब तक राजमहल में बुरा व्यवहार होता रहा है। राजा ने एक शानदार भोज की तैयारी की आज्ञा दी और कहा कि उस भोज में सभी दरबारी बुलाए जायँ।

भोज के समय राजकुमार ने असली राजकुमारी को अपनी दाईं ओर बैठाया और नौकरानी को बाईं ओर। नौकरानी को स्वप्न में भी यह विचार नहीं आया कि उसकी स्वामिनी ने अपना उचित पद प्राप्त कर लिया है। चमचमाती रोशनी में शाही वस्त्रों और आभूषणों से सजी देख कर, उसने सोचा कि कोई बाहर की राजकुमारी इस अवसर की शोभा बढ़ाने आई है।

भोज के बाद राजा ने नकली राजकुमारी से पूछा, 'उस व्यक्ति को क्या सज़ा मिलनी चाहिए जो, अपने स्वामी के

साथ विश्वासघात करे और राजा को धोखा दे ?'

इस तरह घुमा कर पूछे जाने से नकली राजकुमारी नहीं समझ पाई कि यह उसी की दुष्टता की बात है। इसलिए उसने तपाक से उत्तर दिया, 'ऐसे आदमी को तो काठ के सन्दूक में बन्द करके नदी में फिकवा देना चाहिए।'

राजा बोल उठा, 'तो ठीक है, तुमने स्वयं अपनी सजा कह दी, तुम इसी के योग्य हो।'

तुरन्त ही उसे वह सजा दे डाली गई। राजकुमार ने अपनी असली राजकुमारी से विवाह कर लिया और उसके साथ बहुत वर्षों तक आनन्द और सम्मानपूर्वक राज्य किया।
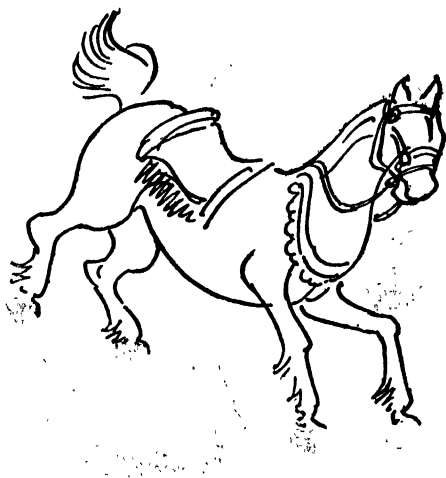
राजकुमारियों का नाच

दूर देश के एक राजा के बारह सुन्दर पुत्रियाँ थीं। उनकी सुन्दरता की चर्चा सारे देश में फैल गई। राजा ने आज्ञा दी कि वे सब एक बड़े कमरे में साथ-साथ सोया करें। उस कमरे को राजा रोज रात को अपने सामने बन्द करवाता था। उसने सोचा कि इस तरह राजकुमारियाँ बाहर की आमोद-प्रमोद की दुनिया से दूर रहेंगी।

एक दिन जब रोज़ के समय पर सुबह को राजा अपने सामने उस कमरे का ताला खुलवा रहा था तो उसकी नज़र दरवाज़े के बाहर पड़े उन जूतों पर गई जो टूट-फूट-से गये थे। वे नाचने के जूते थे। राजकुमारियों में से किसी ने नहीं बतलाया कि वे सब रात को कहाँ नाची थीं। नौकरों में से भी किसी ने नहीं बतलाया। इस पर राजा को और भी क्रोध हो आया। उसने अपने राज्य में घोषणा करा दी कि

जो कोई इस बात का पता लगा देगा कि राजकुमारियाँ रात को कहाँ नाचती हैं, उसका विवाह एक राजकुमारी के साथ कर दिया जायेगा, और बाद में वही राजा बनेगा; क्योंकि राजा के कोई लड़का न था। राजा ने यह शर्त भी लगा दी कि जो भी पता लगाने आए, वह अगर तीन रातों में सफल नहीं हुआ तो उसे अपनी जान से हाथ धोना पड़ेगा।

थोड़े ही समय बाद एक राजकुमार आया और उसने अपने ऊपर यह काम लिया।

राजा ने खुशी से उसका स्वागत किया। राजकुमारियों के कमरे के पास ही उसे एक कमरा दिया गया ताकि वह वहाँ से राजकुमारियों पर नजर रखे। राजकुमारियों के कमरे का दरवाज़ा भी खुला रखा गया ताकि वे किसी और दरवाज़े से बाहर न जा सकें।

राजकुमार कुछ देर तक तो निगरानी करता रहा, लेकिन बाद में उसे नींद ने आ घेरा। सुबह को जब वह सोकर उठा तो उसे साफ मालूम हो गया कि राजकुमारियाँ रात को कहीं नाचने गई थीं, क्योंकि उनके जूते फिर टूटे-फूटे थे।

राजकुमार ने फिर पता लगाने की कोशिश की। दूसरी और तीसरी रातों को भी वही बात हुई। अगले दिन बेचारा राजकुमार मार डाला गया।

बारहों राजकुमारियाँ एक-एक करके जीने के नीचे उतरीं।

— पृ० ४३

जान की बाजी लगा कर और भी कई लोग पता लगाने के लिए आये, लेकिन सब की कोशिशें बेकार रहीं। अन्त में एक सिपाही उस नगर में आया। उसने लड़ाई में नौकरी की थी। एक गली में उसे एक बूढ़ी औरत मिली। बूढ़ी औरत ने उससे पूछा, 'कहाँ जा रहे हो?'

उसने नम्रता से उत्तर दिया, 'और कहाँ जाऊँगा! राजा के महल में अपना भाग्य आजमाने जा रहा हूँ। मैं यह पता लगाऊँगा कि राजकुमारियाँ कहाँ नाचती हैं, जिससे कि उनके जूते टूट जाते हैं।'

बूढ़ी औरत ने उसे सलाह दी, 'वहाँ जाकर शराब मत पीना, और सोने का सिर्फ बहाना करना।' बूढ़ी औरत ने उस सिपाही को अपना चोगा भी दे दिया, जिसे पहन लेने से आदमी अदृश्य हो सकता था।

बुढ़िया को हृदय से धन्यवाद देकर सिपाही ने राजमहल का रास्ता लिया, और वहाँ पहुँच कर चौकीदारों से राजा के पास पहुँचा देने को कहा।

सिपाही ने राजकुमारियों में से किसी एक से विवाह करने के इच्छुक के रूप में स्वयं को प्रस्तुत किया। रात होने पर वह उसी कमरे में ले जाया गया, जहाँ उससे पहले के आदमी ले जाये गये थे।

वह दरवाज़े में घुसा ही था कि सबसे बड़ी राजकुमारी उसके लिए शराब से भरी सुराही लेकर आ पहुँची और उससे पीने को कहा। सिपाही ने खुशी से उसकी बात मँजूर कर ली। लेकिन उसने पहले से ही अपनी गर्दन में चमड़े की एक थैली लटका रखी थी। राजकुमारी की निगाह जब दूसरी ओर थी तो उसने शराब को उस थैली में उड़ेल लिया। राजकुमारी को धन्यवाद देकर वह बिस्तर पर लेट रहा, और तुरन्त ही जोर के खर्राटे भरने लगा।

उसने राजकुमारियों को आपस में हँसते और एक-दूसरी से कहते सुना, 'लो, एक और मूर्ख अपनी जान गँवाने आ पहुँचा!'

इसके बाद वे नाच की तैयारियाँ करने लगीं। आलमारियाँ खोल कर नये वस्त्र और चाँदी के जूते निकाले गये। हर एक राजकुमारी सज-धज कर जब बड़े शीशे के सामने खड़ी होती थी तो खुशी के मारे हँस पड़ती थी। लेकिन सबसे छोटी राजकुमारी उदास थी। जब उससे इसका कारण पूछा गया तो वह बोली, 'मुझे लगता है कि इस बार कुछ न कुछ ज़रूर होगा, और हम पकड़ ली जायँगी।'

बड़ी राजकुमारी ने उसे झिड़का, 'बेकार बात करती हो। क्या हो सकता है हमें? हमेशा शराब से काम नहीं बना है क्या? इसके अलावा, यह सिपाही तो इतना थका

हुआ है कि मैं समझती हूँ, अगर इसे नींद की दवा न दी जाती तो भी सो रहता।'

जब सब राजकुमारियाँ तैयार हो गईं तो बड़ी राजकुमारी फिर सिपाही के पास गई, यह निश्चय करनेके लिए कि वह सो रहा है या नहीं। सिपाही की आँखें बिल्कुल मिची हुई थीं और वह अब भी खुर्राटे ले रहा था। इसलिए वह लौट आई।

अब बड़ी राजकुमारी ने अपनी चारपाई को ज़ोर से झटका दिया। चारपाई ज़मीन में धँस गई और उसकी जगह एक गड्ढा हो गया। उस गड्ढे के एक ओर ज़ीना था। सिपाही अपने कमरे में से यह सब देख रहा था। बारहों राजकुमारियाँ एक-एक करके ज़ीने के नीचे उतरीं। जब आखिरी राजकुमारी भी ओझल होने को थी, तो सिपाही उठ खड़ा हुआ। उसने बुढ़िया का दिया हुआ चोगा पहन लिया। बड़े शीशे के सामने जाने पर उसने स्वयं को अदृश्य पाया।

साहस करके वह राजकुमारियों के पीछे-पीछे चल दिया। सबसे छोटी राजकुमारी के पैरों के ठीक पास वह चल रहा था। ज़ीने के अधबीच में राजकुमारी के चोगे पर उसका पैर पड़ गया। राजकुमारी को जब खिंचाव महसूस हुआ तो वह चौंक उठी।

उसने कहा, 'कोई मेरा चोगा खींच रहा है।'

उसकी बहिन ने जवाब दिया, 'बेकार बच्चों की-सी बात करती हो, कील में फँस गया होगा।'

राजकुमारियाँ नीचे उतरती गयीं। जीना खत्म हो जाने पर वे एक सुन्दर खुले जंगल में पहुँचीं। वहाँ के पेड़ों की डालें ठोस चाँदी की थीं, और पत्तियाँ चाँदनी में चमचमा रही थीं। सिपाही एक डाली तोड़ने के लिए उछला। वह इस बात का प्रमाण अपने पास रखना चाहता था कि उसने उन पेड़ों को देखा है। उसने डाली तोड़ी तो जोर की चटाके की आवाज हुई।

'हाय, यह क्या हुआ ?' छोटी राजकुमारी फिर कह उठी।

बड़ी राजकुमारी ने जवाब दिया, 'यह शुभ शकुन है, क्योंकि हम लोग अब आ पहुँचे हैं।'

उनकी यह छोटी मंडली आगे बढ़ती गई। उन की निगरानी करता हुआ अदृश्य सिपाही उनके पीछे चल रहा था। वे दूसरे खुले जंगल में पहुँचीं। वहाँ के पेड़ों की पत्तियाँ सोने की थीं। और भी आगे जाने पर पैड़ों की पत्तियों में हीरे जड़े थे। सिपाही ने फिर छोटी-छोटी डालियाँ तोड़ीं। और छोटी राजकुमारी यह समझ कर फिर भयभीत हो उठी कि कुछ अनिष्ट हो रहा है।

तीसरे जंगल को पार करने के बाद एक झील ग्राई। वहाँ बारह नावें उन राजकुमारियों के इन्तजार में खड़ी थीं। हर एक नाव पर एक-एक राजकुमार था। जब राजकुमारियों में से हर एक अपनी-अपनी नाव पर बैठ गई, तो सिपाही सबसे छोटी राजकुमारी के पीछे जा बैठा।

उस नाव के राजकुमार ने जब डाँड़े सँभाले तो बोल उठा—'आज यह नाव बहुत भारी लग रही है, इसे पार ले जाने में मुझे पूरा ज़ोर लगाना पड़ेगा।'

राजकुमारी ने कहा, 'आज गर्मी भी बहुत है।'

झील के दूसरी ओर एक बड़ा महल था। सिपाही को उसमें से आती हुई संगीत की ध्वनि सुनाई दी। वहाँ पहुँचने पर हर एक राजकुमार अपनी अपनी राजकुमारी के साथ नाचने लगा। सिपाही भी उनके बीच में नाचा। अदृश्य तो वह था ही।

कभी-कभी वे लोग शराब पीने के लिए रुक जाते थे। सिपाही हाथ बढ़ा कर उनके हाथ की शराब स्वयं पी जाता था। सुबह के तीन बजे तक वे लोग नाचते रहे। राजकुमारियों के जूते फिर टूट-फूट गये। अब वे अपने महल को लौटने की तैयारी करने लगीं। राजकुमारों ने राजकुमारियों को झील के पार पहुँचा दिया। इस बार सिपाही सबसे बड़ी राजकुमारी की नाव में बैठा। वह

अपने साथ शराब पीने का एक प्याला भी ले आया था। इस पार उतर कर राजकुमारियों ने अपने प्रेमियों से विदा ली और अगली रात को फिर आने के वायदे किये। सिपाही सबसे आगे चला। राजकुमारियाँ जीना चढ़ भी न पाई थीं कि वह अपने कमरे में पहुँच कर बिस्तर पर पड़ रहा। राजकुमारियों ने अपने बढ़िया कपड़े उतारे और सिपाही के दरवाज़े पर कान लगाये। वह जोर-जोर से खुर्राटे ले रहा था। इसलिए निश्चिन्त होकर राजकुमारियाँ

अपने-अपने बिस्तर पर सो रहीं, और सुबह होने पर ही जगीं।

प्रातःकाल सिपाही से कोई प्रश्न नहीं किया गया। उसने भी कुछ नहीं बताया, क्योंकि वह उस जादू के महल और सुन्दर जँगलों को एक बार फिर देखना चाहता था।

अगली रातों में भी राजकुमारियाँ उसी प्रकार छिप कर गईं। पहले उन्होंने सिपाही को शराब दी। सिपाही ने बहाना तो किया कि बहुत गहरी नींद में सोते रहने से उसका जी अच्छा नहीं है, तो भी राजकुमारियों ने देखा कि वह उतनी ही शराब पी गया और पिछली रात की तरह ही सो रहा। दोनों रातों को उसने अपना जादू का चोगा पहन कर राजकुमारियों का पीछा किया। अब वह और भी सावधान हो गया था। दोनों बार वह राजकुमारों के उस महल से एक-एक शराब का प्याला भी लाया।

तीसरी रात समाप्त होने पर वह राजा के सामने लाया गया। डालियों और शराब के प्यालों को अपने बस्ते में रख कर वह राजा के सिंहासन के पास जा खड़ा हुआ।

राजा ने कड़क कर पूछा, 'बोलो, राजकुमारियाँ रात को कहीं नाचने गई थीं?'

'धरती के भीतर झील के किनारे के एक महल में,' सिपाही ने जवाब दिया। उसने सारी कथा कह सुनाई और

हीरों जड़ी पत्तियाँ तथा शराब के प्याले निकाल कर दिखाए। तब राजा ने अपनी बेटियों को बुलवाया। राजकुमारियों ने जब वे प्रमाण देखे तो उन्होंने समझ लिया कि अब बात छिपाई नहीं जा सकती।

राजा ने अपना वचन पूरा किया। उसने सिपाही से पूछा कि वह कौन-सी राजकुमारी से शादी करेगा ? सिपाही ने सबसे बड़ी राजकुमारी को पसन्द किया, क्योंकि उसी ने उसे शराब दी थी और उसकी ओर मीठे ढंग से मुस्कुराई थी। यह और बात है कि वह समझती थी कि शराब पीने से सिपाही सो जायेगा।

कुछ समय बाद बड़ी धूमधाम से शादी हुई। मेहमानों में वह बुढ़िया भी थी, जिसने सिपाही को जादू का चोगा दिया था और जिसकी सहायता से सिपाही को पत्नी मिली, राज्य मिला और उसके प्राणों की रक्षा हुई।

एक विधवा स्त्री के दो पुत्रियाँ थीं। उनमें से एक बहुत सुन्दर और नेक थी, दूसरी कुरूप और आलसिन थी। लेकिन वह स्त्री कुरूप लड़की को अधिक प्यार करती थी; क्योंकि वह उसकी सगी पुत्री थी और दूसरी ग्रेटेल सौतेली थी। ग्रेटेल से वह इतना अधिक काम कराती थी मानो वह रसोईदारिन हो, और उसकी सगी लड़की या तो आलस में पड़ी रहती थी, या नाच-कूद में समय बिताती थी।

रोज घर का काम खत्म हो जाने पर ग्रेटेल को सड़क के किनारे के कुएँ के पास सूत कातने भेज दिया जाता था। एक दिन ग्रेटेल की उँगलियों में तकली चुभ गई और वे खून से सन गईं। हाथ धोने के लिए ग्रेटेल जब कुएँ के पास झुकी तो उसकी उँगलियों में से तकली छूट कर कुएँ में जा गिरी। वह उसे कुएँ में से नहीं निकाल सकती थी, इसलिए घर आकर उसने अपनी सौतेली माँ को सारी बात बता दी। विधवा को क्रोध हो आया, उसने ग्रेटेल को खूब डाँटा-डपटा और

बोली, 'दूसरी तकली के लिए दाम नहीं है मेरे पास, जाओ, वही तकली लेकर आओ। जब तक नहीं लाओगी, तुम्हें खाना नहीं मिलेगा।'

बेचारी ग्रेटेल कुएँ पर वापस गई। तकली निकालने की कोशिश में वह खुद कुएँ में गिर पड़ी।

वहाँ जब उसने आँखें खोलीं तो अपने आप को एक सुन्दर उद्यान में पाया। उसके चारों ओर धूप में फूल खिल रहे थे और चिड़ियाँ गा रही थीं। ग्रेटेल प्रसन्नता से उठ खड़ी हुई। घास पर चलते-चलते वह एक गली में जा पहुँची। वहाँ उसे रोटी बनाने का एक चूल्हा दिखाई दिया, लेकिन आस-पास कोई आदमी नहीं था। चूल्हे में से आवाज आई, 'निकालो मुझे, मुझे निकालो! नहीं तो मैं जल जाऊँगी, खूब पक चुकी हूँ मैं!'

चूल्हे का मुँह खोल कर ग्रेटेल ने रोटियों को एक-एक करके निकाला और उन्हें लकड़ी के एक स्टूल पर रखती गई! इसके बाद वह आगे बढ़ी और सेबों से लदे एक पेड़ के पास पहुँची। पेड़ पर से आवाजें आईं—'तोड़ो हमें! तोड़ो हमें! नहीं तो हम पक कर सड़ जायँगे!' ग्रेटेल ने पेड़ की डालों को झकझोर दिया जिससे तमाम सेब धरती पर गिर पड़े। तब उसने उन्हें बटोर कर पेड़ के नीचे ढेर लगा दिया।

इसके बाद वह ग्रौर ग्रागे बढ़ी। वहाँ उसे एक कुटिया मिली। खिड़की में से एक बहुत बूढ़ी ग्रौरत झाँक रही थी। उसके दाँत इतने बड़े-बड़े थे कि ग्रेटेल भाग खड़ी हुई। लेकिन बुढ़िया चिल्लाई, 'डरो मत, मैं तुम्हें मारूँगी नहीं।'

ग्रेटेल लौट ग्राई। बुढ़िया ने दयालु होकर कहा, 'ग्रगर तुम मेरे साथ रहो ग्रौर मेरे घर को साफ-सुथरा रखो तो मैं तुम्हें खूब ग्रच्छी तरह रखूँगी। बस तुम्हें इतना करना होगा कि मेरे बिस्तर को ठीक कर दो ग्रौर उसे झाड़ दो जिससे उसके रोएँ झड़ जाएँ क्योंकि इसीसे धरती पर बर्फ

गिरती है। मैं बर्फ की देवी हूँ, और बर्फ की सहायता से ही जाड़े की देख-भाल करती रहती हूँ।'

बर्फ की देवी के दयाभरे वचनों से उत्साहित होकर ग्रेटेल ने उसके पास रह कर काम करने का वायदा कर लिया।

सचमुच उसे अच्छा घर मिल गया। वह बिस्तर को जोर से झाड़ देती थी और उसके रोएँ बर्फ के गोलों के रूप में गिर पड़ते थे।

कुछ दिनों तक तो वह बर्फ की देवी के साथ रही, लेकिन फिर उसे घर की याद तंग करने लगी। यद्यपि वह जानती थी कि अपनी दयालु स्वामिनी के साथ वह बहुत ही अच्छी तरह रह रही है, तो भी घर को लौटने की उसकी इच्छा प्रबल हो आई। बर्फ की देवी से उसने अपनी इच्छा कही। बूढ़ी औरत दयापूर्वक बोली—'ठीक है, तुम घर लौट जाओ। तुमने मेरी सेवा अच्छी तरह की है, इसलिए अगर फिर आना चाहोगी तो मैं तुम्हें स्वयं ले आऊँगी।'

ग्रेटेल का हाथ पकड़ कर वह एक बड़े कमरे के दरवाजे पर ले गई। जैसे ही उसने उसे खोला, सोने की बौछार हो उठी। ग्रेटेल सोने के सिक्कों से घिर गई। बूढ़ी औरत ने कहा, 'इसे भी अपने साथ ले जाओ।' उसने वह तकली भी ग्रेटेल को दे दी जो कि कुएँ में खो गई थी।

इसके बाद दरवाज़ा बन्द हो गया। ग्रेटेल ने स्वयं को अपने घर की कुटिया के पास पाया। जैसे ही वह उस ओर बढ़ी कि एक कौआ बोल उठा——

काँव काँव काँव !

रानी बिटिया लौटी घर !!

ग्रेटेल सीधी अपनी सौतेली माँ के पास पहुँची। विधवा ने जब सोने के सिक्के देखे तो बेटी के लौट आने पर दिखावटी प्रसन्नता प्रकट की। ग्रेटेल ने बता दिया कि इतना सोना कैसे मिला। सौतेली माँ यद्यपि अब भी उससे जलती थी, तो भी उसने उसे अपने पास रखा। उसने सोचा कि क्यों न मेरी सगी बेटी भी इसी तरह धन प्राप्त करे। इसलिए उसने अपनी सगी बेटी को कुएँ के पास जाकर उसमें तकली फेंक देने और फिर उसमें कूद पड़ने को कहा।

उस लड़की ने अपनी माँ की आज्ञा मान ली। अपनी सौतेली बहिन की तरह ही कुएँ में जब उसकी आँख खुली, तो उसने अपने आप को उद्यान में पाया।

अपनी सौतेली बहिन की तरह ही वह गली में गई और रोटी बनाने के चूल्हे के पास पहुँची। उसने भी वही आवाज़ सुनी, 'निकालो मुझे! निकालो मुझे! मैं जल रही हूँ!'

लेकिन वहाँ रुकने की बजाय उस लड़की ने सिर हिला कर कहा, 'मैं तो अपने हाथ न गंदे करूँगी और न जलाऊँगी।' वह आगे बढ़ती गई।

इसके बाद वह सेब के पेड़ के पास पहुँची। सेब चिल्लाए,' तोड़ो मुझे ! तोड़ो मुझे ! नहीं तो मैं पक कर सड़ जाऊँगा।' लेकिन लड़की हँस कर रह गई। आगे जाने पर वह बर्फ की देवी की कुटिया पर पहुँची।

बड़े-बड़े दाँतोंवाली बूढ़ी औरत को देख कर वह डरी नहीं, क्योंकि ग्रेटेल से उसने जान लिया था कि वह औरत ही उसकी स्वामिनी बनेगी।

बर्फ की देवी उसके पास आई और उसे भीतर ले गई। पहले दिन तो उस कुरूप लड़की ने इतना काम किया जितना कि अपनी माँ के लिए भी नहीं किया था। सुनहले सिक्कों की वर्षा का ध्यान उसे बराबर बना था। लेकिन दूसरे दिन से वह हर रोज़ सुबह को देर से उठने लगी, काम भी थोड़ा करती थी, यहाँ तक कि बिस्तर को झाड़ना ही छोड़ दिया, इससे रोएँ झड़ने भी बन्द हो गये।

आखिरकार बर्फ की देवी नाराज हो गई और उससे नौकरी छोड़ देने को कहा। लड़की को इससे दुःख नहीं हुआ, क्योंकि उसने सोचा कि उसे भी वही धन मिलेगा जो ग्रेटेल को मिला था।

उसकी स्वामिनी उसे बड़े कमरे में ले गई । लेकिन इस बार सोने की जगह राल की बौछार हुई ।

'तुम्हारी सेवा का पुरस्कार यही है ।' कह कर बर्फ की देवी ने दरवाजा बन्द कर दिया ।

क्रोध और भय से भरी लड़की ने स्वयं को अपने घर के पास पाया । वह उस ओर दौड़ पड़ी । घर की छत पर से उसकी हँसी उड़ाता हुआ कौवा बोल उठा—

काँव काँव काँव !
भंगिन बिटिया लौटी घर ! !

उस पर राल चिपकी हुई थी और वह उसे छुड़ाने की कोशिश कर रही थी ।

ग्रेटेल, कुछ दिनों बाद, अपना वायदा पूरा करने के लिए बर्फ की देवी के पास लौट गई ।

रूपाञ्जलि

एक निर्धन पति-पत्नी के कोई सन्तान न थी। वे एक छोटी-सी कुटिया में रहते थे। कुटिया में पीछे की ओर एक खिड़की थी। खिड़की के सामने की ओर एक सुन्दर उद्यान था जिसमें बहुत सुन्दर फूल और सब्जियाँ लगी थीं। उद्यान एक बहुत बड़ी दीवार से घिरा था, उसमें कोई भी प्रवेश नहीं कर सकता था। बात यह थी कि उस पर एक जादूगरनी का अधिकार था, जिससे आस-पासके सभी लोग डरते थे।

निर्धन आदमी की पत्नी एक दिन खिड़की पर बैठी थी। मूलियों से भरी एक क्यारी उसे दिखाई दी। मूलियाँ इतनी ताजी और सुन्दर थीं कि स्त्री का मन उन्हें पाने को ललचा उठा। रोज वह उस क्यारी को देखने लगी। आखिरकार वह उन मूलियों के लिए पागल हो उठी और अपने पति से जिद करने लगी।

पति ने डरते-डरते पूछा, 'क्या बात है ?'

उसने कहा—'बगीचे में की कुछ मूलियाँ अगर मुझे नहीं मिलेंगी, तो मैं मर जाऊँगी।'

इस पर पति बेचारा और भी भयभीत हो उठा। वह अपनी पत्नी को बहुत प्यार करता था। उसने सोचा, 'इसके लिए कुछ मूलियाँ लानी ही पड़ेंगी। मैं उसे उदास नहीं देख सकता। जो कुछ भी करना पड़े, मूलियाँ लानी ही होंगी।'

रात को वह जादूगरनी के बगीचे की दीवार पर चढ़ गया और कुछ मूलियाँ उखाड़ लाया। उन्हें उसने अपनी पत्नी को दे दिया। पत्नी ने उनका बहुत बढ़िया साग बनाया। वह उसे इतना अच्छा लगा कि अगले दिन फिर उसने वही इच्छा प्रकट की। जब तक उसके पति ने और मूलियाँ ला देने का वायदा न कर लिया, उसको चैन नहीं पड़ा।

रात को फिर वह दीवार पर चढ़ने की तैयारी करने लगा। लेकिन इस बार वह ऊपर तक नहीं पहुँच पाया था कि उसे डर मालूम हुआ। जादूगरनी नीचे उसकी प्रतीक्षा में खड़ी थी। वह बोल उठी, 'मेरे बगीचे में घुस कर तुमने मूली चुराने की हिम्मत कैसे की ? तुम्हें इसका दण्ड भोगना होगा।'

आदमी ने कहा, 'माफ कर दो मुझे। विवश होकर ही मैंने यह काम किया है। खिड़की में से मेरी पत्नी को तुम्हारी सुन्दर मूलियाँ दिखाई देती हैं। इन्हें पाने की उसे इतनी प्रबल इच्छा हो आई कि वह इनके लिए पागल हो उठी। उसे ये नहीं मिलीं तो वह मर जाएगी।'

जादूगरनी ने जवाब दिया, 'अगर यह बात है तो जितनी चाहो उतनी मूलियाँ मैं तुम्हें दूँगी। लेकिन एक शर्त है—तुम्हें मुझे अपनी सन्तान देनी होगी। मैं उसकी खूब देख-भाल करूँगी, वह बिल्कुल ठीक रहेगी।'

राजी-खुशी लौट आने की उत्सुकता में उस आदमी ने वचन दे दिया। बाद को जब सन्तान हुई तो जादूगरनी अपना हक लेने आ पहुँची। जादूगरनी ने उस लड़की का नाम रूपाञ्जलि रखा। माँ-बाप के शोक की चिन्ता न करके वह लड़की को अपने साथ ले गई।

बड़ी होने पर रूपाञ्जलि हृष्टपुष्ट और सुन्दर हो गई। जब वह लगभग बारह साल की हुई, तो जादूगरनी को डर पैदा हुआ कि कहीं वह मुझ से छिन न जाए। इसलिए उसने उसे जंगल के बीच एक ऐसी मीनार में बन्द कर दिया जिसमें न दरवाजा था और न चढ़ने के लिए जीना। ऊपर की ओर सिर्फ एक छोटी-सी खिड़की थी। उस मीनार में

ग्रिम की

जादूगरनी के सिवा और कोई नहीं जा सकता था। खिड़की के नीचे खड़ी हो कर वह पुकारती थी--

रूपाञ्जलि ! रूपाञ्जलि !
लटका दो तुम अपने केश !!

रूपाञ्जलि के बाल सुन्दर और लम्बे हो गये थे। वे ऐसे लगते थे मानो सोने के धागे हों। जादूगरनी की आवाज सुनते ही वह अपना जूड़ा खोल कर खिड़की में से बालों को लटका देती थी। वे कोई तीस गज नीचे तक जा पहुँचते थे। जादूगरनी उन्हीं के सहारे ऊपर चढ़ आती थी।

कोई दो साल इसी तरह बीत गये। जंगल से गुजरते एक राजकुमार को वह मीनार दिखाई दी। अपने घोड़े पर चढ़े-चढ़े ही उसने वहाँ से आती गाने की आवाज सुनी। रूपाञ्जलि ही गा रही थीं। वह अपना समय इसी में बिताती थी। राजकुमार के मन में आया कि गानेवाले व्यक्ति को देखा जाय। उसने मीनार के दरवाजे की तलाश की, लेकिन वहाँ दरवाजा तो था ही नहीं। इसलिए वह घोड़े पर सवार होकर चल दिया। तो भी गाने का ध्यान उसे बना रहा। रूपाञ्जलि की मधुर आवाज सुनने के लिए वह रोज जंगल को जाने लगा। दूसरे दिन जब वह पेड़ की आड़ में छिपा खड़ा था, तभी जादूगरनी आ पहुँची। राजकुमार ने उसे कहते सुना--

रूपाञ्जलि ! रूपाञ्जलि !
लटका दो तुम अपने केश ! !

सुनहले केशों की सुन्दर सीढ़ी लटक आई। उस पर चढ़ कर जादूगरनी खिड़की में ओझल हो गई।

राजकुमार कह उठा, 'अगर इसी सीढ़ी से चढ़ा जाता है तो मैं भी कल को अपने भाग्य की परीक्षा करूँगा।'

अगले दिन वह फिर मीनार के पास पहुँचा और कह उठा—

रूपाञ्जलि !
रूपाञ्जलि !
लटका दो तुम
अपने केश ! !

सुनहली लटें नीचे की ओर आ गईं। राजकुमार उनके सहारे खिड़की तक चढ़ता चला गया।

उस अपरिचित को देख कर रूपाञ्जलि भय से चीख उठी। इससे पहले उसने किसी पुरुष को नहीं देखा था। राजकुमार ने बड़ी नम्रता से उससे बातें कीं और बताया कि उसके गाने से वह किस तरह मोहित हो उठा था। उसने कहा कि तुम्हें देखे बिना मुझे चैन नहीं पड़ा।

नौजवान और सुन्दर राजकुमार की ओर से रूपाञ्जलि के हृदय का सारा भय जाता रहा। जब राजकुमार ने उससे पत्नी बन जाने को कहा, तो उसने सोचा, 'बूढ़ी जादूगरनी के अलावा मैं किसी भी और के साथ रह लूँगी।' इसलिए उसने हामी भर के कहा, 'मैं तुम्हारे साथ अवश्य चलूँगी। लेकिन मैं नीचे कैसे उतरूँ। कल से तुम अपने साथ रोज रेशमी धागों का एक गुच्छा ले आया करो। उनसे मैं सीढ़ी तैयार कर लूँगी। उस सीढ़ी के सहारे नीचे उतर कर मैं तुम्हारे साथ घोड़े पर बैठ कर चल दूँगी।'

उन लोगों ने तय किया कि रात के समय ही मिला करेंगे, क्योंकि जादूगरनी दिन में आती थी। एक दिन रूपाञ्जलि बच्ची की तरह कह उठी, 'क्या बात है माँ ! कि तुम्हें ऊपर आने में इतनी देर लगती है, वह राजकुमार तो क्षण भर में आ जाता है।'

जादूगरनी के क्रोध की सीमा न रही, बोली—'क्यों री ! दुष्ट लड़की, क्या मैं सच्ची बात सुन रही हूँ ? मैंने तो समझा था कि तुझे मैंने दुनिया से अलग रख दिया है, फिर भी तू ने मुझे धोखा दिया ।'

क्रोध में रूपाञ्जलि का सुन्दर जूड़ा पकड़ कर उसन उसे कई घूसे लगाए । फिर अपनी कैंची निकाल कर उसके सारे सुन्दर बाल काट गिराए । इसके बाद उस बेचारी लड़की को वह एक निर्जन वन में ले गई और वहाँ अकेली मरने को छोड़ दिया ।

शाम के समय जादूगरनी ने बालों की लटें खिड़की की चौखट से बाँध दीं । राजकुमार ने आ कर पुकारा—

रूपाञ्जलि ! रूपाञ्जलि !
लटका दो तुम अपने केश !!

जादूगरनी ने केश लटका दिये । राजकुमार चढ़ आया । खिड़की पर पहुँच कर उसने सुन्दर लड़की की जगह कुरूप जादूगरनी को देखा । वह उसकी ओर क्रोध से घूर रही थी ।

वह चीख उठी, 'अपनी सुन्दर दुलहन को देखने आए हैं जनाब ! सोने की चिड़िया ने अब अपने घोसले में गाना छोड़ दिया, उसे बिल्ली चुरा ले गई, और अब वह बिल्ली आपकी आँखें निकालेगी । रूपाञ्जलि से तो अब आप हमेशा के लिए हाथ धो बैठे ।'

जादूगरनी के शब्दों से राजकुमार पागल-सा हो उठा। वह खिड़की से कूद पड़ा। नीचे काँटों पर गिरने से उसकी आँखें जाती रहीं। इस तरह वह अन्धा हो कर जंगल में भटकने लगा। कहाँ जाये, क्या करे? हाथ से टटोलने पर जो भी फल-मूल उसे मिल जाते, उन्हीं को खा कर रह जाता और अपनी सुन्दर पत्नी के वियोग में रोता फिरता।

कई वर्षों तक इसी तरह भटकने के बाद वह उस निर्जन वन में जा पहुँचा जहाँ तमाम खतरों के बीच रूपाञ्जलि रह रही थी। वहाँ उसके दो जुड़वाँ सन्तानें हो गई थीं, तो भी वह हमेशा रोती रहती थी। आवाज सुन कर राजकुमार उसी दिशा में चल दिया। रूपाञ्जलि ने उसे तुरन्त पहचान लिया और बाँहों में भर लिया। रूपाञ्जलि के आँसू राजकुमार की आँखों पर ढुलक आए। तत्काल राजकुमार की आँखें अच्छी हो गईं। उसे फिर दृष्टि मिल गई।

इसके बाद वह राजकुमारी को अपने राज्य में ले आया। राजकुमार के लौट आने से सब लोगों को बड़ी खुशी हुई। बहुत वर्षों तक वह रूपाञ्जलि के साथ आनन्दपूर्वक रहा। जादूगरनी का क्या हुआ, इस बात की ओर किसी का ध्यान ही न गया।

जाड़ों के दिन थे। घनी बर्फ तेजी से गिर रही थी। एक रानी अपने महल की खिड़की के पास बैठी कुछ सी रही थी। कभी-कभी वह बर्फ के चमकदार गोलों की ओर भी देख लेती थी। सहसा उसकी उँगली घायल हो गई, इससे बर्फ के ऊपर तीन बूँद खून गिर पड़ा। उन बूँदों की ओर देख कर रानी के मन में विचार आया—'क्या ही अच्छा हो कि मेरे एक ऐसी सन्तान हो जो बर्फ की तरह गोरी हो, उसके होंठ खून की तरह लाल हों और उसके बाल आबनूस की तरह काले हों।'

कुछ ही दिनों बाद रानी को एक पुत्री हुई। वह बर्फ की तरह गोरी थी, उसके होंठ गहरे लाल रँग के थे, और उसके बाल आबनूस जैसे काले थे। इसी कारण, लड़की का नाम 'हिमानी' रखा गया। लेकिन लड़की पैदा होते ही रानी का देहान्त हो गया।

अगले साल राजा ने दूसरी शादी कर ली। नई रानी सचमुच सुन्दरी थी। लेकिन उसमें इतना घमण्ड था कि और भी कोई उसके समान सुन्दर है, इस विचार तक को वह न सह सकती थी।

उसका दर्पण जादू का था। उसके सामने खड़ी होकर वह पूछती—

दर्पण बोलो निर्भय होकर—
कौन सुन्दरी सब से बढ़ कर?

तो दर्पण उत्तर देता—

सुनो महारानी मेरा स्वर—
तुम्हीं सुन्दरी सबसे बढ़ कर।

इस पर वह सन्तुष्ट हो जाती। जादू के प्रभाव से दर्पण को सच कहना पड़ता था। ज़ब हिमानी बड़ी होने लगी तो दिन-दिन उसका सौन्दर्य निखरने लगा। एक दिन फिर रानी ने दर्पण के सामने खड़ी हो कर पूछा—

दर्पण बोलो निर्भय होकर—
कौन सुन्दरी सब से बढ़ कर?

तो दर्पण को कहना पड़ा—

सुन्दरी हो, महारानी!
रम्यतम है पर हिमानी।

इस उत्तरको सुनकर रानी बहुत नाराज हुई। जलन के मारे वह पीली पड़ गई। उसी क्षण से हिमानी से वह घृणा करने लगी। ईर्ष्या के कारण उसे नींद भी न आती। एक दिन राजा के शिकारी से उसने कहा—'हिमानी को जंगल में ले जाकर मार डालो। उसका जिन्दा रहना मैं नहीं देख सकती। उसका कलेजा निकाल लाना और मुझे दिखाना।'

शिकारी ने आज्ञा मानने का वचन दिया। हिमानी को वह जंगल में ले गया। जब उसने अपना छुरा निकाला तो लड़की गिड़गिड़ा कर कह उठी—'मुझे जीवित छोड़ दो शिकारी राजा! मैं दूर जंगल में भाग जाऊँगी और कभी लौट कर नहीं आऊँगी।'

हिमानी की सुन्दरता और उसके कोमल शब्दों से शिकारी का मन पसीज उठा। उसने कहा 'तो भाग जाओ लड़की।' उसने सोचा, भले ही जंगली जानवर इसे मार खायें, लेकिन मेरे छुरे से तो नहीं मरेगी। उसी समय एक जंगली सुअर उधर आ निकला। शिकारी ने झपट कर उसे मार गिराया, और उसका कलेजा रानी को दिखाने के लिए ले चला।

बेचारी हिमानी जंगल में अकेली भटकती फिरी। कहाँ जाये? काँटों और पत्थरों से घायल होकर वह लड़खड़ाने

ग्रिम की

लगी। जंगली जानवर उसके पास से निकल जाते, पर उसे कष्ट न देते। अन्त को थक कर अँधेरे जंगल में वह और आगे न जा सकी। उसे एक कुटिया मिली, जो पेड़ों से बिल्कुल दबी हुई थी। कुछ देर आराम करने को वह उसमें चली गई।

भीतर हर चीज़ बड़े ढंग से रखी थी। लेकिन सब चीजें बहुत छोटी-छोटी थीं। कमरे में एक छोटी मेज पड़ी थी। उस पर सफेद चादर बिछी थी। उसके ऊपर छोटी-छोटी सात थालियाँ, सात लोटे और सात छुरी-काँटे रखे थे। मेज के चारों ओर सात छोटी-छोटी कुर्सियाँ पड़ी थीं। दीवार के सहारे सात छोटे-छोटे बिस्तर एक कतार में लगे थे। उन पर सफेद चादरें बिछी थीं। हिमानी ने हरएक थाली में से थोड़ी-थोड़ी रोटी लेकर खाई और हरएक लोटे में से थोड़ा-थोड़ा पानी पिया। हालाँकि वह बहुत भूखी-प्यासी थी, तो भी अधिक लेना उसने ठीक नहीं समझा। वह थकी तो थी ही, इसलिए बिस्तर पर उसने लेट कर देखा। उनमें से कोई उसके लिए बहुत छोटा था, और कोई बहुत कठोर था। अन्त में सातवाँ बिस्तर उसे पसन्द आया। उस कुटिया में पहुँचा देने के लिए उसने ईश्वर को धन्यवाद दिया, और गहरी नींद में पड़ रही।

रात होते ही उस कुटिया में रहनेवाले सात बौने घर लौटे। जंगल के पार के पहाड़ पर वे काम करने जाया करते थे। सबसे पहले उन्होंने सात मोमबत्तियाँ जलाईं। उन्हें तुरन्त पता चल गया कि उनकी साफ सुन्दर कुटिया में कोई ग्राया था।

उनमें से एक बोल उठा, 'किसने मेरी थाली में से खाया है?' दूसरा बोला, 'किसने मेरे लोटे में से पिया है?' तीसरे ने कहा, 'कौन मेरी कुर्सी पर बैठा है?' चौथा चीख उठा, 'मेरे चाकू से किसने काटा है?' पाँचवाँ चिल्लाया, 'मेरा चम्मच किसने इस्तेमाल किया है?' ग्रौर छठे ने कहा, 'मेरा काँटा किसने उठाया है?' फिर सातवें बौने ने चारों ग्रोर घूम कर देखा ग्रौर बोल उठा, 'मेरे बिस्तर पर कौन पड़ा है?' उसने ग्रपने साथियों को बुला कर दिखाया। सब ग्रपनी-ग्रपनी मोमबत्ती लेकर ग्रा पहुँचे ग्रौर सोती हुई हिमानी को देखा। 'कितनी सुन्दर है!' वे एक-दूसरे के कान में कह उठे। उसकी सुन्दरता से वे सब इतने प्रसन्न हुए कि उसे जगाया नहीं ग्रौर सातवें बौने के बिस्तर पर ग्राराम करने दिया। सातवें बौने ने एक-एक घंटे ग्रपने हर एक साथी के पास लेट कर रात काट दी।

सुबह जब हिमानी जगी, तो सात बौनों को देख कर बहुत डरी। लेकिन उन्होंने बड़ी नम्रता से उस का

नाम पूछा। उसने जवाब दिया, 'मेरा नाम हिमानी है।'

उन्होंने पूछा, 'यहाँ क्यों आई हो?' उसने उन्हें अपनी सौतेली माँ की बात बताई, जो उसे मरवा डालना चाहती थी। उस शिकारी की भी बात उसने बताई जिसने उस पर दया की थी। फिर उसने बताया कि कैसे वह जंगल में भटकती फिरी और अन्त को इस कुटिया पर आ पहुँची। इस पर बौनों ने पूछा, 'क्या यहाँ रह कर तुम हमारे घर की देख-भाल करोगी। अगर तुम हमारा भोजन बना दिया करो, कपड़े सी

दिया करो और बर्तन साफ कर दिया करो, तो यहाँ रह सकती हो। हम सब कष्टों से तुम्हारी रक्षा करेंगे।'

हिमानी ने हृदय से उनका उपकार मान कर हामी भर ली। इस तरह, उनके पास रहकर वह कुटिया को साफ-सुथरा रखने लगी। बौने सुबह को पहाड़ पर सोने की खुदाई करने चले जाते थे। जब वे रात को लौटते तो उन्हें भोजन तैयार मिलता और कुटिया ठीक हालत में होती। हिमानी दिन में अकेली रह जाती थी, इसलिए बौनों ने उससे कहा, 'किसी को भीतर मत आने देना, नहीं तो तुम्हारी सौतेली माँ को जल्दी ही पता लग जाएगा कि तुम यहाँ हो।'

रानी ने समझ लिया कि शिकारी ने हिमानी को जंगल में मार डाला है। इसलिए उसने सोचा कि अब मैं ही सबसे अधिक सुन्दरी हूँ। एक दिन अपने दर्पण के सामने खड़ी होकर उसने फिर पूछा—

दर्पण बोलो निर्भय होकर—
कौन सुन्दरी सबसे बढ़ कर ?

दर्पण ने जवाब दिया—

रम्यतम थीं महारानी,
किन्तु अब फिर है हिमानी।
रह रही है वह वहाँ पर,
सात बौने हैं जहाँ पर।

तब तो रानी भय से काँप उठी। उसने समझ लिया कि शिकारी ने मेरी आज्ञा न मान कर हिमानी को जीवित छोड़ दिया है। उसे रात-दिन यही चिन्ता रहने लगी कि अब हिमानी को किस तरह मरवाऊँ। जलन के कारण वह रात को सो भी नहीं पाती थी।

एक दिन उसे एक तरकीब सूझी। उसने अपने चेहरे को रंग कर बुढ़ियाका-सा वेश बना लिया और सौदागरनी बन गई। जंगल में घूमते-घूमते उसने सात बौनों की कुटिया को खोज निकाला। दरवाजा खटखटा कर वह बोली—'खरीदो, खरीदो, सुन्दर वस्तुएँ खरीदो!' खिड़की में से देख कर हिमानीने पूछा, 'क्या बेच रही हो बुढ़िया?'

सौदागरनी ने जवाब दिया, 'रंग-बिरंगी चोलियाँ, बढ़िया सामान।' और उसने एक चोली हिमानी की ओर बढ़ा दी। हिमानी ने सोचा, 'इस बुढ़िया को भीतर आने देने में क्या हानि है? इसलिए उसने दरवाजा खोल कर एक चोली खरीद ली।

बुढ़िया कह उठी, 'तुम्हारे ऊपर यह कितनी सुन्दर लगती है, मेरी बच्ची! लाओ इसका फीता बाँध दूँ।' किसी तरह भी शंका न करके हिमानी ने बुढ़िया से फीता बँधवा लिया। बुढ़िया ने फीता इतना कस के बाँधा कि हिमानी को साँस लेना असम्भव हो गया। इसलिए वह

मरी-सी होकर धरती पर गिर पड़ी। कपटी रानी तुरन्त चल पड़ी। उसने मन में कहा, मैं फिर दुनिया में सबसे अधिक सुन्दर हो गई। रात होने पर जब सातों बौने लौटे, तो हिमानी को मरी-सी पड़ी देख कर वे डर गये। उठाने पर उन्हें पता चला कि उसे खूब कस कर बाँध दिया गया है। उन्होंने उसके बन्धन काट डाले। जरा देर बाद हिमानी ने फिर साँस लेनी शुरू की। जब उसने बताया कि क्या हुआ था तो बौनों ने कहा, 'वह सौदागरनी, हो न हो, तुम्हारी सौतेली माँ ही रही होगी। अब और अधिक सावधान रहना और हमारे पीछे किसी को भी अन्दर मत आने देना।

घर लौट कर रानी ने फिर दर्पण के सामने जाकर पूछा—

दर्पण बोलो निर्भय होकर—
कौन सुन्दरी सबसे बढ़कर ?

दर्पण ने जवाब दिया—

रम्यतम थीं महारानी,
किन्तु अब फिर है हिमानी।
रह रही है वह वहाँ पर
सात बौने हैं जहाँ पर।

यह सुनकर भय से रानी का सिर चकरा उठा। उसने समझ लिया कि हिमानी अब भी जीवित है। उसने प्रतिज्ञा

की, 'किसी न किसी तरह हिमानी को मरवा कर ही छोड़ूँगी ।' इस बार उसने एक कंघी लेकर उसे अपने जादू के जोर से विषैला कर दिया । बूढ़ी विधवा का रूप धारण करके वह बौनों की कुटिया की ओर चली । दरवाजा खटखटा कर उसने कहा, 'खरीदो खरीदो, बढ़िया चीजें खरीदो !' हिमानी ने झाँक कर देखा और कहा, 'भाग यहाँ से, मैं तुझे अन्दर नहीं आने दूँगी ।' विषैली कंघी आगे बढ़ाकर बुढ़िया ने पूछा, 'देख तो लो इसे ।' कँघी देखकर हिमानी इतनी प्रसन्न हुई कि उसने दरवाजा खोल दिया ।

जब उसने कंघी खरीद ली तो बुढ़िया बोली, 'लाओ इससे तुम्हारे सुन्दर केश संवार दूँ ।' हिमानी ने उसे वैसा कर लेने दिया । जैसे ही विषैली कंघी एक बार उसके बालों में फिरी, वह अचेत-सी होकर धरती पर गिर पड़ी । कपटी रानी ने विजय-गर्व से कहा 'आखिर छुटकारा तो मिला इससे ।' और वह फिर महल को लौट आई ।

इसके कुछ ही देर बाद सातों बौने लौटे । हिमानी को अचेत-सी पड़ी देखकर उन्हें निश्चय हो गया कि इसकी सौतेली माँ फिर आई थी । उसके बालों में कंघी देख कर उन्होंने खींच ली । तत्काल हिमानी जीवित हो उठी और जो कुछ हुआ था उसने बता दिया । फिर उन बौनों ने

उसे सावधान कर दिया कि अब किसी को मत आने देना, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारी सौतेली माँ फिर आ जाए ।

रानी अब तक महल में पहुँच चुकी थी । उसने फिर दर्पण से पूछा । दर्पण ने पहले जैसा ही उत्तर दिया—

रम्यतम थीं महारानी,
किन्तु अब फिर है हिमानी ।

यह सुन कर रानी क्रोध से पागल हो उठी । उसने प्रतिज्ञा की कि किसी भी तरह हो, हिमानी को मरवाऊँगी । उसने एक सेब लिया और अपने निजी कमरे में अकेले में जा कर उसमें ऐसा जहर भर दिया कि खानेवाला तुरन्त मर जाय । बाहर से वह सेब ऐसा लाल और मीठा लगता था कि देखनेवाले के मुँह में पानी भर आए । इस बार उसने एक किसान औरत का वेष बनाया और बौनों की कुटिया की ओर चल दी ।

ज्यों ही उसने दरवाजा खटखटाया, हिमानी ने झाँक कर देखा और कहा, 'मैं किसी को भी अन्दर नहीं आने दूँगी । सातों बौनों ने मुझे मना किया है ।'

किसान औरत ने दुखी होकर कहा, 'तो क्या मैं अपने सारे सेब वापस ले जाऊँ ? यह एक तो तुम ले ही लो ।'

लड़की ने जवाब दिया, 'अरी जा, नहीं लेती मैं ।'

किसान औरत हँस कर बोली, 'क्या तुम डरती हो इसे खाने से ? देखो, मैं इसके दो टुकड़े करती हूँ । लाल टुकड़ा तुम खाना और हरा मैं खाऊँगी ।' (सेब को इस चालाकी से तैयार किया गया था कि उसका सिर्फ लाल हिस्सा विषैला था ।)

किसान औरत को सेब का टुकड़ा खाते देख कर हिमानी उसका लाल टुकड़ा खाने का लालच नहीं रोक सकी । अन्त को उसने वह ले ही लिया । जैसे ही उसने उसे कुतरा, वह अचेत हो कर धरती पर गिर पड़ी । किसान औरत दुष्टतापूर्वक हँस कर बोली, 'बर्फ की तरह गोरी, खून की तरह लाल और आबनूस की तरह काली हिमानी, इस बार बौने तुम्हें नहीं जिला पायेंगे । महल में लौट कर उसने दर्पण से फिर पूछा—

दर्पण बोलो निर्भय होकर—
कौन सुन्दरी सबसे बढ़ कर ?

दर्पण ने जवाब दिया—

सुनो महारानी मेरा स्वर—
तुम्हीं सुन्दरी सबसे बढ़ कर ।

इस तरह रानी के मन की जलन शान्त हो गई ।

शाम को लौटने पर बौनों ने हिमानी को जमीन पर पड़ी देखा । इस बार वह बिल्कुल मरी हुई जान पड़ती थी ।

उसे धीरे से उठाकर उन लोगों ने उस चीज की तलाश की जिससे कि उसे विष चढ़ा हो, लेकिन उन्हें ऐसी कोई चीज नहीं मिल सकी। उन्होंने समझ लिया कि अब यह प्यारी लड़की बिल्कुल मर गई है। इसलिए उसे अरथी पर रख कर वे तीन दिन लगातार उसके चारों ओर खड़े रहे। उन्होंने उसे गाड़ देने की बात सोची। लेकिन वह बहुत ही सुन्दर और जीवित-सी लग रही थी। उसके गुलाबी गाल पीले नहीं पड़े थे। इसलिए उन्होंने आपस में विचार किया, हम इसे धरती के अँधेरे में नहीं गाड़ेंगे।' तब उन्होंने एक ऐसा सन्दूक बनवाया जो पूरी तरह शीशे का था। उस सन्दूक में बन्द कर देने पर भी हिमानी को सब ओर से देखा जा सकता था। उसके ऊपर उन्होंने सोने के अक्षरों से उसका नाम लिखवा दिया—'राजकुमारी हिमानी।' इसके बाद उन्होंने उस सन्दूक को एक चट्टान पर रख दिया और पारी बाँध कर उसकी चौकसी करने लगे। जंगल के पशु-पक्षियों ने आकर उस लड़की की मृत्यु पर शोक प्रकट किया।

शीशे के सन्दूक में हिमानी बहुत समय तक उसी तरह बन्द रही। लगता था मानो सो रही हो। उसका शरीर जरा भी नहीं बिगड़ा। एक दिन घोड़े पर सवार एक राजकुमार उधर जंगल में आ निकला। उसने वह शीशे का

सन्दूक श्रौर उस पर के सुनहले श्रक्षर देखे। उसे भी यही जान पड़ा कि हिमानी उसके भीतर सो रही है। उसी समय बौने पास श्रागये। राजकुमार ने उनसे सन्दूक के बारे में पूछा। राजकुमार बोला, 'श्रगर तुम इसे मुझे दे दो तो मैं तुम्हें जो भी माँगोगे दूँगा।' बौनों ने जवाब दिया, 'दुनिया भर की दौलत मिले तो भी हम इसे नहीं देंगे।' राजकुमार ने प्रार्थना की, 'मैं श्रब इसके बिना जी नहीं सकता। जीवन भर मैं हिमानी की रक्षा श्रौर श्रादर करता रहूँगा।'

बौनों ने जान लिया कि हिमानी के प्रति राजकुमार का प्रेम सच्चा है, इसलिए श्रन्त को दया करके उन्होंने उसे सन्दूक दे दिया। राजकुमार उसे नौकरों के कन्धों पर उठवा कर ले चला।

कुछ देर बाद एक नौकर रास्ते में पत्थर की टोकर खा गया। उस झटके से हिमानी के मुँह का सेब का विषैला टुकड़ा निकल कर गिर पड़ा। तुरन्त ही उसने श्रपनी श्राँखें खोल दीं श्रौर सन्दूक का ढक्कन उठाकर बैठ गई श्रौर बोली, 'कहाँ हूँ मैं ?'

उस का बोल सुन कर राजकुमार खुशी से कह उठा, 'तुम मेरे पास हो श्रौर सुरक्षित हो।' इसके बाद राजकुमार ने उसे सारी घटना बताई श्रौर उससे कहा कि कृपया महल

चलो और वहाँ मेरी पत्नी बनो। हिमानी ने स्वीकार कर लिया। महल पहुँच कर बड़ी धूमधाम से उनकी शादी हुई। उत्सव में हिमानी की सौतेली माँ को भी बुलाया गया। उत्सव में जाने से पहले उसने दर्पण के सामने जाकर फिर पूछा—

दर्पण बोलो निर्भय होकर—
कौन सुन्दरी सबसे बढ़ कर ?

दर्पण ने जवाब दिया—

रम्यतम थीं महारानी
किन्तु बढ़ कर है वही
अब बनेगी जो राजरानी।

रानी को भय हुआ और वह क्रुद्ध हो उठी। उसने सोचा कि अब कोई और स्त्री उससे प्रतिस्पर्धा करनेवाली हो गई। उसने इरादा किया कि उत्सव में नहीं जाऊँगी। लेकिन नई रानी को देखने की उसमें इतनी प्रबल इच्छा हो उठी कि दर्पण के कथन की सत्यता जानने को वह उत्सव में पहुँची। राजकुमार की बगल में हिमानी को बैठी देखकर रानी भय और क्रोध से स्तम्भित रह गई। आग में तपाये गये लोहे के जूते देकर रानी से कहा गया कि वह उन्हें पहन कर नाचे। इस तरह रानी मर कर गिर पड़ी।

रेल-पेल-सिनकी

एक चक्की का मालिक था। उसके एक बहुत सुन्दर लड़की थी। एक दिन उसे राजा के सामने बोलना पड़ा। उसने सोचा कोई बहुत बड़ी बात कहनी चाहिए। इसलिए वह कह उठा—'महाराज, मेरी लड़की भूसा कात कर सोना बना देती है।' राजा सोने का बड़ा शौकीन था। उसने सोचा, 'ऐसी कारीगरी से तो मुझे बड़ा आनन्द रहेगा।' फिर उसने चक्की के मालिक को आज्ञा दी, 'अपनी गुणवती कन्या को कल महल में लाओ। मैं उसकी कारीगरी की परीक्षा लूँगा।'

जब लड़की आगई तो राजा उसे एक कमरे में ले गया जो कि भूसे से भरा हुआ था। राजा ने उसे एक चरखा देकर कहा, 'अब अपना काम शुरू कर दो, और इस भूसे को कात कर सोना बनाओ। सुबह होते-होते अगर यह खत्म नहीं हुआ, तो तुम मार डाली जाओगी।'

इतना कह कर राजा ने उसे वहाँ अकेली छोड़ दिया, और बाहर से दरवाजा बन्द कर दिया।

लड़की बैठी की बैठी रही। उसे यही चिन्ता थी कि किस तरह मौत से छुटकारा मिले। भूसे को कात कर सोना बनाने का कोई भी उपाय उसे न आता था। अन्त को वह घबरा कर रोने लगी।

एकाएक दरवाजा खुला और एक बौने ने प्रकट होकर कहा, 'नमस्कार कुमारी जी! इतना फूट-फूट कर क्यों रो रही हो?'

लड़की ने जवाब दिया, 'क्या करूँ? इस भूसे को कात कर सोना बनाने का काम दिया गया है मुझे। मैं क्या जानूँ, कैसा होता है!'

बौने ने कहा, 'अगर मैं तुम्हारी मदद करदूँ तो क्या इनाम दोगी?'

लड़की ने कहा, 'मैं तुम्हें अपने गले का हार दे दूँगी।'

बौना राज़ी हो गया। चर्खे के पास बैठ कर उसने उसे तीन बार घुमाया। फिरकी सोने के तार से भर गई। दूसरी फिरकी चढ़ाकर उसने फिर चर्खे को तीन बार घुमा दिया। वह फिरकी भी भर गई। रात भर वह इसी तरह करता रहा। तमाम फिरकियाँ सोने से भर गईं और सारा भूसा खत्म हो गया।

सुबह तड़के ही राजा आया। सोने से भरी फिरकियाँ देख कर वह बहुत खुश हुआ। लेकिन उसे सन्तोष न हुआ। उसका लालच बढ़ उठा।

लड़की को वह और भी बड़े कमरे में ले गया, जो कि भूसे से भरा था। उसने कहा, 'कल सुबह तक इस भूसे को कात कर भी सोना बना दो, नहीं तो मार डाली जाओगी।'

फिर वह बैठ कर रोने लगी। एकाएक बौना फिर कमरे में प्रकट हुआ, और पूछा कि इस बार मदद करने का क्या इनाम दोगी।

लड़की ने जवाब दिया, 'अपनी अँगूठी दूँगी।'

अँगूठी लेकर बौना तेजी से कातने लगा। सूरज निकलते-निकलते सारा भूसा कत कर चमकदार सोना बन गया।

सुबह को राजा आया। कता हुआ सोना देख कर वह बहुत ही खुश हुआ। लेकिन अपनी खुशी की बात उसने लड़की से नहीं कही। वह उसे एक और भी बड़े कमरे में ले गया। इतना बड़ा कमरा लड़की ने पहले कभी देखा तक न था। कमरे में छत तक भूसे के गट्ठर चुने थे।

राजा ने कहा, 'अगर तुम एक ही रात में इस पूरे कमरे के भूसे को कात कर सोना बना दोगी, तो मैं तुम्हें अपनी रानी बना लूँगा।' राजा ने सोचा, दुनिया में इससे ज्यादा और धन देनेवाली पत्नी कहाँ मिलेगी?'

उस बड़े भारी कमरे में भरे हुए भूसे को देख कर ही बेचारी लड़की का दिल बैठने लगा। बौने ने जब फिर प्रकट होकर पूछा कि इस बार मदद के लिए क्या दोगी, तो लड़की को विवश होकर दुख के साथ कहना पड़ा, 'तुम्हें देने को अब मेरे पास रहा ही क्या है?'

बौने ने कहा, 'रानी बन जाने पर अपनी पहली सन्तान देने का वायदा करो।'

लड़की ने सोचा, 'कौन जानता है, ऐसा हो भी कि नहीं!' इसलिए निराशा की दशा में उसने बौने की मनचाही बात मान ली। बौना चरखे के पास बैठ गया और थोड़े ही समय में उसने सारे भूसे को कात कर सोना बना दिया।

सुबह को आकर जब राजा ने कता हुआ सोना देखा तो उसके आनन्द का ठिकाना न रहा। उसने तुरन्त ही उस लड़की को अपनी रानी बना लिया। शादी के कोई एक साल बाद रानी को पहली सन्तान हुई। बौने को दिया हुआ वचन वह अब बिल्कुल भूल चुकी थी।

सन्तान के जन्म पर जब खूब खुशियाँ मनाई जा रही थीं, तभी बौना एकाएक आ धमका और रानी से कहा कि अपना वचन पूरा करो। रानी भयभीत हो उठी। उसने बौने से कहा, 'जो कुछ भी मेरे पास है, चाहो तो सब ले जाओ, पर मेरी सन्तान को छोड़ दो।' बौने ने जवाब दिया,

'तुम्हारे राज्य भर की सम्पत्ति का मुझे कुछ नहीं करना, मुझे तो तुम्हारी सन्तान चाहिए ।'

इस पर रानी फूट-फूट कर रोने लगी । बौने को उस पर दया हो आई; बोला, 'मैं तुम्हें सोचने के लिए तीन दिन देता हूँ । मगर इन तीन दिनों में तुम मेरे नाम का पता लगा लो तो मैं तुम्हारी सन्तान को छोड़ दूँगा ।

इतना कह कर बौना गायब हो गया । रानी बेचारी ने जितने भी नाम सुने थे उन सबको याद करने लगी । राज्य भर में उसने आदमी दौड़ा दिये कि नये नाम इकट्ठे करके लाएँ ।

अगले दिन बौना फिर आया । रानी उसके नाम का अनुमान लगाने लगी । कश्यप, महाचल, बालसार....? बौने ने हर बार सिर हिला कर कहा, 'नहीं, यह नहीं है मेरा नाम ।'

दूसरे दिन रानी ने सबसे कहा कि जितने भी ऊटपटाँग नाम हों, उनके बारे में सोचो । उसे ऐसे नाम सुझाए गये—मच्छस्थि, मांसस्नायु, भेड़भुजंग आदि । बौने ने इन नामों में से भी हरएक को अस्वीकार कर दिया ।

तीसरे दिन रानी का दिल बैठा जा रहा था । तभी एक नौकर ने आकर उसे सूचना दी—'और तो कोई नया नाम मिला नहीं । बड़े जंगल के किनारेवाले उस ऊँचे

पहाड़ के पास जब मैं पहुँचा तो मुझे एक कुटिया के सामने आग जलती दिखाई दी। उस आग के चारों ओर एक बौना उछल-कूद कर गा रहा था--

रानी की सन्तान मिलेगी
खूब चलेगा मेरा काम,
किसे पता दुनिया में, मेरा-
रेल-पेल-सिनकी है नाम !

यह सुन कर रानी की प्रसन्नता का पार न रहा। कुछ देर बाद जब बौना आया तो रानी उससे पूछने लगी-- 'तुम्हारा नाम गान्धार है या गालव ?' बौने ने अस्वीकार
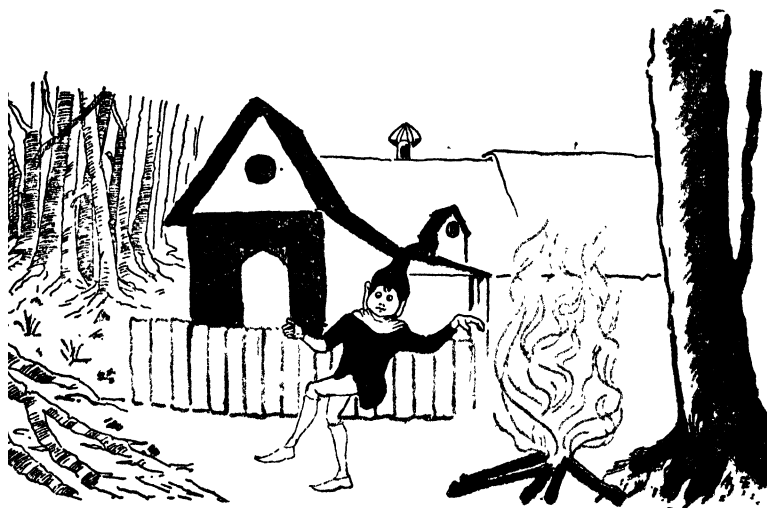
किया और बोला, 'बस एक नाम और लो, फिर बच्चा मेरा हो जायेगा।'

रानी ने कहा, 'तो तुम्हारा नाम है रेल-पेल-सिनकी!'

बौना गुस्से में भर कर बोल उठा, 'किसी जादूगरनी ने बताया होगा तुम्हें।' और उसने इतनी जोर से अपना पैर धरती पर पटका कि वह धँस कर रह गया। लाख कोशिश करने पर भी बौना उसे न निकाल सका।

अन्त को उसने पूरी ताकत लगा कर धरती के ऊपर से अपनी टाँग को तोड़ लिया और लँगड़ाता हुआ भाग गया। वह भयानक रूप से चिल्लाता जा रहा था। तब से आज तक रानी को उसके बारे में कुछ भी पता नहीं चला है।

एक बिल्ली को एक चूहा मिला, जिससे उसका प्यार हो गया। उसने चूहे को साथ रहने के लिए राजी कर लिया। वे दोनों साथ-साथ घर चलाने लगे।

एक दिन बिल्ली ने घर लौट कर कहा, 'इस साल जाड़ों में हम लोग भूखे नहीं रहेंगे। मुझे मक्खन का एक डिब्बा मिल गया है। लाओ इसे कहीं छिपा दें, जब जरूरत होगी तो निकाल लेंगे। उसके बाद चाहे जो हो, हमारी बला से!'

इसे छिपाने के लिए कौन-सी जगह सब से अच्छी रहेगी, वे इसी विचार में थे कि बिल्ली बोल उठी—'लाओ इसे गिर्जाघर में रख आएँ, और ऐसी जगह रखेंगे जहाँ से कोई न उठा सके।'

इस तरह मक्खन का डिब्बा छिपा कर रख दिया गया। कुछ समय तक तो वे दोनों उसे भूले-से रहे। लेकिन थोड़े

ही दिनों बाद बिल्ली को उसकी याद सताने लगी। चूहे से वह बोली, 'आज मुझे बाहर जाना है। मेरे एक भतीजे का नामकरण है, और पुरोहित का काम मुझे ही करना होगा। तुम घर पर ही सावधान होकर रहना।'

चूहा मान गया। बिल्ली चल दी। नामकरण तो बहाना था, सीधी वह मक्खन के
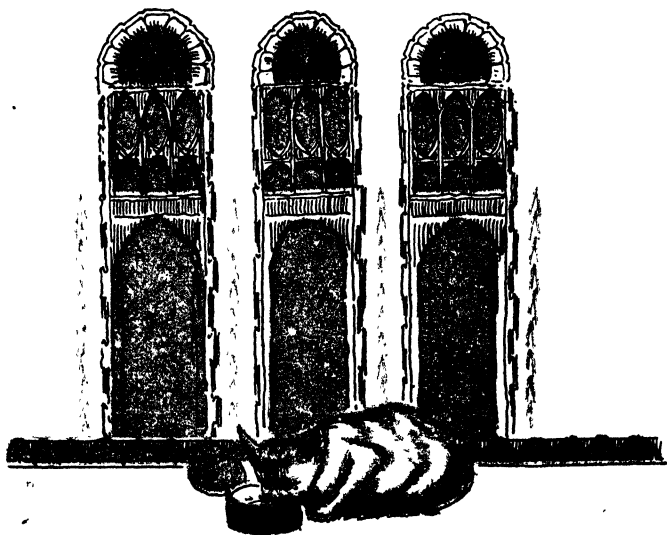
डिब्बे के पास पहुँची और उसने उसमें से जी भर कर खाया ।

बाकी सारा दिन धूप में बिता कर वह अपने साथी के पास लौट आई ।

चूहे ने पूछा, 'कैसा रहा ! क्या नाम रखा तुमने भतीजे का ?'

बिल्ली को अभी मक्खन के डिब्बे का ही ध्यान बना था । उसने तपाक से कहा—'सिर हज़्म ।'

'सिर हज़्म ?' चूहे ने आश्चर्य से पूछा, 'क्या ग़जीब नाम है !'

कुछ दिनों बाद बिल्ली को फिर स्वादिष्ट मक्खन की याद सताने लगी । उसने चूहे से कहा, 'आज तुम अकेले रहना प्यारे ! आज मेरी एक भतीजी का नामकरण है । मुझे ही पुरोहित का काम करना होगा । मना करते अच्छा नहीं लगता ।'

चूहा बेचारा करता तो क्या ? बिल्ली सीधी गिर्जा-घर पहुँची, और खूब डट कर मक्खन खाया । बाकी सारे दिन इधर-उधर जी बहला कर वह शाम को घर लौट आई ।

चूहे ने पूछा, 'कैसा रहा ! क्या नाम रखा गया बच्ची का ?'

बिल्ली को अभी इसी बात का सोच था कि उसने और ज्यादा मक्खन क्यों न खा लिया, इसी ध्यान में उसने एकाएक उत्तर दिया--'आधा गायब ।'

'आधा गायब ?' चूहा बोला, 'ऐसा नाम तो मैंने कभी नहीं सुना !'

फिर कुछ दिन बीतने पर बिल्ली को बेचैनी होने लगी । उसने सोचा, 'मान लो, वह डिब्बा किसी और के ही हाथ पड़ जाये तो ? मुझे फिर जाना ही चाहिए ।' इसलिए सुबह को उसने चूहे से कहा,'अब फिर तीसरी बार भी मुझे ही पादरी का काम करना है । जितनी जल्दी हो सका, लौट आऊँगी ।'

बिल्ली फिर चल दी । चूहा बेचारा घर की सँभाल करता रहा । इस बार बिल्ली ने बचा हुआ सारा मक्खन सफाचट कर डाला । उसने मन में कहा, 'आखिर इसे पाया भी तो मैंने ही था । पड़ा-पड़ा खराब होता, इससे तो अच्छा रहा कि अभी खा डाला गया ।'

शाम को वह फिर घर लौट आई । चूहे ने फिर पूछा, 'कैसा रहा ! क्या नाम रखा गया बच्चे का ?'

बिल्ली को खाली डिब्बे के ध्यान से अफसोस हो रहा था । उसने जवाब दिया--'कुल खत्म ।'

'कुल खत्म ?' चूहे ने कहा, 'ऐसा नाम तो मैंने कभी सुना ही नहीं ।' फिर उसने सोचा, हो सकता है मेरे सवालों

से बिल्ली परेशान हो उठी हो। इसलिए वह गुड़ीमुड़ी होकर सो रहा।

अब बिल्ली के लिए नामकरण में जाना बन्द हो गया। घर का भोजन भी तेजी से घटने लगा। जाड़ों का मौसम बढ़ा आ रहा था। छिपा कर रखे मक्खन का ध्यान करके चूहा बोला, 'अब वह मक्खन का डिब्बा घर ले आया जाये। सड़ाना तो है नहीं उसे।'

बिल्ली ने खीझ कर मन ही मन कहा, 'ऐसे काम नहीं चलेगा।' फिर उसने सोचा, 'क्यों न मैं खाली डिब्बे को और कहीं छिपा दूँ!'

चूहे को रोक पाने में वह सफल न हो सकी तो उसके साथ गिर्जाघर गई। वे दोनों उस डिब्बे के पास पहुँचे, जो अब खाली पड़ा था।

अब चूहा समझ गया कि क्या बात हुई थी। वह बिल्ली को बुरा-भला कहने लगा, "अच्छा अब समझा मैं कि तुम्हारे उन नामों का क्या मतलब था। तुम खुद मक्खन खा गईं। पहले—'सिर हज्म'; फिर 'आधा गायब', और अब....!"

चोरी का पता लग गया, इस बात पर नाराज होकर बिल्ली बोल उठी, 'हाँ, एक नाम और, फिर मैं तुम्हें भी खा जाऊँगी।'

वे दोनों उस डिब्बे के पास पहुँचे, जो अब खाली पड़ा था।

— पृ० ६०

अभागा चूहा, अपने शब्दों को न रोक सका। उसने कह ही दिया—'कुल खत्म!'

उसके ऐसा कहते ही बिल्ली ने झपट कर उसे खत्म कर दिया। इस तरह उनकी दोस्ती का अन्त हुआ
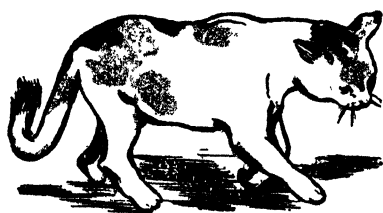
एक जादूगर था। वह भिखारी का वेश बना कर छोटी लड़कियों की तलाश में घर-घर घूमा करता था। जब कभी वह कोई छोटी लड़की पा जाता तो उसे लुभा कर भगा ले जाता। फिर कोई भी पता नहीं लगा सकता था कि वह लड़की कहाँ गई और लड़की तो कभी लौट कर आती ही न थी।

एक दिन वह एक ऐसे घर पर पहुँचा जिसमें तीन सुन्दर लड़कियाँ रहती थीं। वह लड़खड़ा कर चलनेवाला एक गरीब बुड्ढा-सा जान पड़ता था। उसके कन्धे पर एक बड़ा-सा झोला लटका था, मानो भीख रखने के लिए हो। वह कुछ खाने को माँग रहा था। उस पर दया करके सबसे बड़ी लड़की एक रोटी देने आई। उसने रोटी ले ली, और लड़की को भी उससे छूकर अपने झोले में डाल लिया। लड़की एक चीख भी न निकाल पाई और वह उसे लेकर

चम्पत बना। पास के एक अँधेरे जंगल से होकर वह अपने किले में पहुँच गया। वहाँ जा कर उसने लड़की को छोड़ दिया और कहा कि आनन्द से रहो। लड़की ने जिस चीज़ की भी इच्छा की, उसने तुरन्त दे दी।

दो दिन बाद वह लड़की से बोला, 'अब मुझे बाहर जाना है। ये हैं किले के सभी कमरों की चाभियाँ। जो चाहो करती रहना, लेकिन एक कमरा ऐसा है जिसमें तुम मत जाना। गुच्छे की सबसे छोटी चाभी से वह खुलता है। अगर कमरे में जाओगी तो तुम्हें मार डालूँगा।'

लड़की न उसका कहना मान लिया। फिर चलने से पहले जादूगर ने उसे एक अण्डा देकर कहा, 'सँभाल कर रखना इसे, अपनी आँख के सामने रखना। अगर यह खो गया तो तुम्हें अपने प्राण गँवाने पड़ेंगे।'

इतना कह कर जादूगर चला गया। मन बहलाने के लिए लड़की तहखाने से अटारी तक सभी कमरों को देखती फिरी। अन्त को वह उस कमरे के पास पहुँची जिसमें जाने को मना किया गया था। लेकिन वह अपनी उत्सुकता न रोक सकी। दरवाजे का ताला खोल कर वह अन्दर गई। कमरे में कोई सामान न था। केवल बीच में एक बड़ा-सा कड़ाहा रखा था जिसमें खून की तरह गहरे लाल रंग का पदार्थ भरा था। लड़की डर गई। उसे अपने काम पर पछतावा हुआ। वह भागने को हुई; लेकिन डर के मारे काँपती उसकी उँगलियों में से छूट कर अण्डा सीधा कड़ाहे में जा गिरा। लड़की ने कड़ाहे में अपना हाथ डाल कर अण्डा निकाल लिया। फिर उसने तेजी से दरवाजे का ताला लगा दिया। उसने अण्डे को बार-बार धोया और रगड़ कर पोंछा, लेकिन वह उसे फिर से उजला नहीं बना सकी।

अगले दिन जादूगर घर लौट आया। उसने चाभियों का गुच्छा और अण्डा वापस माँगा। लड़की ने उसे वे

चीजें लौटा दीं। वह भय से काँप रही थी। जादूगर को फौरन पता चल गया कि इसकी आज्ञा का उल्लंघन किया गया है।

वह कह उठा, 'उस कमरे में तुम मेरी इच्छा के विरुद्ध गईं। अब तुम्हें अपनी इच्छा के विरुद्ध जाना होगा। तुम्हारे प्राण नहीं बचेंगे।' इसके बाद वह लड़की को पकड़ कर घसीटता हुआ ले गया और उसी कमरे में डाल दिया।

अगले दिन वह फिर भिखारी के रूप में उसी घर पर पहुँचा। इस बार दूसरी बहिन ने आकर उसे एक रोटी दी। रोटी से उसने लड़की को छुआ और उसकी बड़ी बहिन की तरह ही उसे भी झोले में डाल कर अपने किले में ले गया।

उसे भी वैसे ही आदेश देकर वह फिर चल दिया। इस लड़की ने भी ठीक अपनी बहिन की तरह ही किया। जिस कमरे में जाने को मना किया गया था, उसका दरवाजा खोल कर वह घुस गई। अपनी बहिन के मिल जाने की खुशी में उससे भी अण्डा उस लाल कड़ाहे में गिर पड़ा। हालाँकि दोनों ने मिल कर उसे साफ करने की कोशिश की, लेकिन अण्डा लाल ही बना रहा। दोनों वहाँ से भाग जाने का सोच रही थीं; लेकिन तभी जादूगर लौटता सुनाई दिया। इसलिए मझली बहिन को विवश होकर

दरवाज़े का ताला लगा देना पड़ा और वह जादूगर से मिलने चल दी। जादूगर ने जब अण्डे को रंगा हुआ देखा तो उसने उस लड़की को भी उसी कमरे में डाल दिया।

अगले दिन वह तीसरी बहिन के लिए पहुँचा, और उसे भी अपने साथ ले आया। उसे भी वही आदेश देकर वह चल दिया। लेकिन यह लड़की जरा समझदार थी। पहले तो उसने अण्डे को एक सुरक्षित स्थान पर रख दिया। इसके बाद वह सब कमरों में घूम-फिर कर अपना मन बहलाने लगी। जिस कमरे के लिए मना किया गया था, उसके पास पहुँचने पर उसने भी उसे खोल डाला। यह देख कर कि उसकी बहिनें जिन्दा हैं, उसे बहुत खुशी हुई। वे दोनों बिना भोजन के बेचैन थीं, इसलिए उसने उन्हें भोजन दिया। जब वे स्वस्थ हुईं तो उसने उन्हें निकाल कर एक और जगह छिपा दिया और धीरज बँधाया कि जल्दी ही तुम्हें घर लौटा देने का उपाय खोजूँगी।

वापस आने पर जादूगर ने चाभियों का गुच्छा और अण्डा माँगा। अण्डे को साफ-सफेद देख कर उसने लड़की से कहा, 'तुम परीक्षा में सफल हुईं, मैं तुम्हें अपनी दुलहिन बनाऊँगा। जो चाहो सो माँग लो।'

लड़की ने जवाब दिया, 'मैं तुम्हारी दुलहिन तो बन जाऊँगी, लेकिन पहले जाकर मेरे पिता जी को सोने से भरा

एक झोला दे आओ, ताकि वे अपनी सहमति दे दें। ' पहले यह काम करो, इस बीच, मैं विवाह के भोज की तैयारी करूँगी।'

जादूगर को अपनी इच्छा से दुलहिन बननेवाली लड़की पाकर बड़ा आनन्द हुआ। इसलिए उसने लड़की की बात खुशी से मान ली। जब वह भोजन करने बैठ गया तो लड़की उस कमरे में पहुँची जहाँ उसने अपनी दोनों बड़ी बहिनों को छिपा रखा था।

वह बोली, 'आओ, झोले में बैठ जाओ। घर पहुँचते ही पिताजी से कहना कि मदद के लिए चले आएँ, लेकिन जादूगर को भी यहाँ वापस आने दें; क्योंकि अगर इसे मार नहीं डाला गया तो हम लोग कभी सुरक्षित नहीं रह पाएँगे।' अपनी बहिनों को झोले में बैठा कर उसने उन्हें सोने से ढँक दिया। इससे वे बिल्कुल दिखाई नहीं दे रही थीं।

फिर उसने जादूगर को बुला कर कहा, 'यह रहा झोला, देखो, झटपट ले जाओ, रास्ते में कहीं रुकना मत, खिड़की में से देखती रहूँगी मैं।'

झोला लेकर जादूगर चल दिया। वह बहुत भारी था। बहुत थक जाने पर उसने उसे ज़मीन पर रख दिया। लेकिन उसी क्षण आवाज़ आई, 'देख रही हूँ मैं, जल्दी करो।'

जादूगर ने समझा कि यह मेरी दुलहिन की ही आवाज़ है। उसे क्या मालूम कि मझली बहिन बोल रही है; छोटी बहिन ने ही उससे ऐसा करने को कह दिया था। हर बार जब वह सुस्ताने के लिए रुकता, वही आवाज़ आती और उसके आग्रह से वह आगे बढ़ जाता। आखिरकार वह झोला लेकर लड़की के पिता के घर पहुँच गया।

इस बीच में दुलहिन बननेवाली लड़की ने किले में भोज की तैयारी कर ली और नौकरों से कहा कि जादूगर के मित्रों और अन्य साथी 'जादूगरों को बुला लाओ।' फिर उसने एक बड़ा सा शलगम लेकर उसे इस तरह काटा कि उसमें आँखों और दाँतों के से चिन्ह बन गये। उसके चारों ओर एक फीता लपेट कर उसने उसे सबसे ऊपर की खिड़की में इस तरह टिका दिया मानो वहाँ से कोई झुक कर अहाते में देख रहा हो।

इसके बाद उसन प्याला भर शहद अपने कपड़ों पर उड़ेल लिया। एक ऐसे बिस्तर को उधेड़ कर जिसमें पंख भरे हुए थे उसने अपने चारों ओर पंख लपेट लिए। अब वह पक्षी जैसी दिखाई देने लगी।

फाटक के नौकर के हट जाने से वह बेखटके बाहर निकल आई। थोड़ी देर बाद उसे जादूगर के कुछ मेहमान मिले। उन्होंने उससें पूछा कि कहाँ से आ रही है, क्योंकि

पहले कभी जादूगर के क़िले से निकल कर कोई भी गया हो, ऐसा न था।

पक्षी बनी लड़की ने कहा, 'मैं पक्षी राजा के पास से आई थी। राजा ने नई दुलहिन को एक उपहार भेजा था। मैं उसे देकर लौट रही हूँ। दुलहिन खिड़की पर खड़ी आप की राह देख रही है।'

मेहमान लोग आगे बढ़ गये और चतुर लड़की और भी तेज़ी से चल दी।

फिर कुछ देर बाद दूल्हा जादूगर से उसकी भेंट हुई। उसे भी उसने वही उत्तर दिया।

अहाते में पहुँच कर जादूगर ने ऊपर की ओर आँख उठा कर देखा तो समझा कि उसकी दुलहिन उसकी प्रतीक्षा कर रही है।

अपने मेहमानों के साथ उसने किले में प्रवेश किया। उसे मूर्ख बनाने की जो चाल खेली गई थी, उसे वह जान भी न पाया था कि तीनों लड़कियों के भाई और रिश्तेदार किले के दरवाज़े पर आ पहुँचे। उन्होंने भीतर जाने की कोशिश न की, बल्कि दरवाज़ा बन्द कर दिया, जिससे कोई भागने न पाये, और झाड़-झंखाड़ों को इकट्ठा करके मकान में आग लगा दी। इस तरह जादूगर और उसके साथी जल कर राख हो गये और सब लोगों के जीवन की सुरक्षा हुई। ★

एक राजा और रानी के कोई सन्तान न थी। वे हमेशा सन्तान की इच्छा करते रहते थे।

एक दिन जब रानी नहा रही थी और रोज़ की तरह इच्छा कर रही थी कि उसके एक लड़की होती, सहसा एक मेंढक कूद कर आया और बोला—

'यह साल खत्म होने से पहले ही तुम्हारी इच्छा पूरी हो जायेगी।'

मेंढक ने जैसी भविष्यवाणी की थी, वैसा ही हुआ। रानी को एक सन्तान हुई। वह अत्यधिक सुन्दर थी। राजा और रानी हर्षमग्न हो उठे। उन्होंने एक शानदार दावत दी। राज्य भर के सभी बड़े आदमियों को उसमें बुलाया गया। बच्चों को प्यार करनेवाली सभी सयानी औरतें भी बुलायी गयीं। राज्य में इस तरह की सयानी औरतें तेरह थीं। लेकिन राजा ने केवल बारह को ही बुलाया, क्योंकि

और अधिक मेहमानों के लिए उसके पास सोने के बर्तन नहीं थे।

दावत अत्यन्त धूमधाम से हुई। उसके समाप्त हो जाने पर सयानी औरतों ने राजकुमारी को अनूठे उपहार दिये। पहली औरत ने राजकुमारी को सुन्दरता दी, दूसरी ने ऐश्वर्य दिया, तीसरी ने दयालुता दी, चौथी ने चतुराई दी। औरों ने भी इसी प्रकार के उपहार दिये। बारहवीं औरत अपना उपहार देने ही वाली थी कि एकाएक तेरहवीं सयानी बड़े क्रोधपूर्वक आ धमकी। दावत में उसे नहीं बुलाया गया था। इसलिए किसी से बिना कुछ कहे-सुने वह चीख उठी, 'अपने पन्द्रहवें जन्मदिन पर राजकुमारी तकली से अपनी उँगली छेद कर मर जायेगी।' इतना कह कर वह चुपचाप चली गई।

मेहमान लोग भयभीत हो उठे। बारहवीं सयानी औरत अभी नहीं बोल पाई थी। वह आगे आकर बोली, 'राजकुमारी मरेगी नहीं, बल्कि सौ साल पूरे होने तक सोती रहेगी।' बात यह थी कि बारहवीं सयानी में शाप को मिटा देने की शक्ति नहीं थी, वह उसे केवल कम कर सकती थी।

इस संकट से राजकुमारी को बचाने के लिए राजा ने आज्ञा दे दी कि राज्य भर की सारी तकलियाँ नष्ट कर दी जाएँ। समय पाकर राजकुमारी में वे सभी गुण प्रकट हुए

जो कि सयानी औरतों ने उसे दिये थे। राज्यभर में उसकी सुन्दरता और उसके स्वभाव की चर्चा फैल गई। जो कोई उसे देखता वही उससे प्रेम करने लगता था।

उसका पन्द्रहवाँ जन्म-दिन आया। संयोग से उस दिन राजा और रानी महल में न थे। इसलिए वह बिल्कुल अकेली थी। मन बहलाने की कोई चीज़ खोजने के लिए वह एक कमरे से दूसरे कमरे में घूम रही थी। उसे एक चक्करदार ज़ीना दिखाई दिया जो एक छोटी-सी मीनार तक गया था। वह खुश होकर उस ज़ीने पर चढ़ गई और मीनार के दरवाजे पर पहुँची। दरवाज़े के ताले में जँग खाई चाभी लगी थी।

चाभी को घुमाते ही दरवाज़ा पूरा खुल गया। कमरे में उसने देखा कि एक बूढ़ी औरत बैठी है जिसके हाथ में तकली है। राजकुमारी ने उसे प्रणाम करके पूछा, 'क्या कर रही हो?'

बुढ़िया ने सिर हिला कर कहा, 'पटसन बुन रही हूँ।'

राजकुमारी ने फिर पूछा, 'तुम्हारे हाथ में यह घूम क्या रहा है?' और उसने तकली लेने को अपना हाथ बढ़ा दिया। उसके ऐसा करते ही सयानी औरत का शाप पूरा हो गया। राजकुमारी की उंगली घायल हो गई और वह उसी क्षण पास के गद्दे पर अचेत-सी होकर पड़ रही। उसी

समय महल के और सब लोग भी गहरी नींद में पड़ रहे। राजा और रानी अभी-अभी लौट कर आए थे, वे भी अपने दरबारियों के बीच सो रहे। रसोइया रसोईघर में सो रहा, घोड़े घुड़साल में सो रहे और कबूतर घर की छत पर सो रहे। इसी तरह, मक्खियाँ दीवारों पर, आग चूल्हे में, और पकता हुआ माँस, ये सब भी अचेत हो रहे। यहाँ तक कि पेड़ों के पास हवा चलनी बन्द हो गई और पत्तियों ने हिलना

छोड़ दिया। शीघ्र ही महल के चारों ओर काँटेदार गुलाब के झाड़ उगने शुरू हो गये। जैसे-जैसे वर्ष बीतते गये, वे अधिक लम्बे और घने होते गये। यहाँ तक कि बुर्ज के ऊपर का झंडा भी उनसे ढक गया।

कुछ ही दिनों में गुलाब कुमारी की अद्भुत कहानी राज्यभर में फैल गई। उस सोती हुई राजकुमारी को लोग गुलाब कुमारी कहने लगे थे। फिर तो, दूर देशों से आ-आ कर राजकुमार उस महल में प्रवेश करने की कोशिश करने लगे। लेकिन कंटीले झाड़ों में से होकर जाना सम्भव न था। जब वे ज्यादा ज़ोर करते तो उन झाड़ों में उलझ कर रह जाते और घायल होकर वहीं मर जाते।

बहुत वर्षों बाद वहाँ एक राजकुमार पहुँचा। संयोग से उसने राजमहल और उसे घेरे खड़े गुलाब के झाड़ों की कहानी एक किसान के मुँह से सुन ली। उसने यह भी सुना कि तमाम शाही दरबार एक सौ साल से सोया पड़ा है। जिस बूढ़े आदमी ने उसे यह कहानी सुनाई उसने भी अपने दादा से सुनी थी। उसने यह भी बताया कि जितने भी राजकुमारों ने कंटीले झाड़ों को पार करने की कोशिश की है, वे सभी नष्ट हो गये हैं।

इस राजकुमार ने भी कोशिश करनी चाही। लोगों ने समझाया, लेकिन इसने उनकी बात नहीं मानी। वह

बोला, 'मुझे किसी बात का डर नहीं है। मैं देखूँगा कंटीले झाड़ कैसे हैं!'

राजकुमारी के सोते रहने के सौ वर्षों का यह आखिरी दिन था। राजकुमार जब झाड़ों के पास पहुँचा तो काँटों की जगह फूल खिल उठे और झाड़ों ने उसे रास्ता दे दिया। जब वह उनमें से गुजर गया तो वे फिर बन्द हो गये।

राजकुमार उस अहाते में पहुँचा जहाँ कुत्ते और घोड़े सोए पड़े थे। ओरियों पर कबूतर अब भी अपने पंखों में सिर गड़ाए बैठे थे। महल के भीतर पहुँचने पर उसने उस रसोइये को देखा जो कि नौकर के बाल खींचते-खींचते ही सो रहा था, नौकर के बाल अब भी उसके हाथ में थे। मक्खियाँ अब भी दीवारों पर सोई हुई थीं और दरबारी लोग सभाभवन में सोए पड़े थे। वह उस सिंहासन के पास पहुँचा जहाँ राजा और रानी सो रहे थे। अन्त को वह मीनार के उस छोटे से कमरे में पहुँचा जहाँ राजकुमारी सो रही थी। उसके अदभुत सौन्दर्य पर राजकुमार की दृष्टि अटकी रह गई। उसने झुक कर धीरे से उसे चूम लिया। राजकुमारी ने अपनी आँखें खोल दीं और मुस्करा कर राजकुमार का अभिवादन किया।

वे दोनों साथ-साथ चक्करदार सीढ़ियों पर से उतरे। उसी समय राजा-रानी और सब दरबारी भी जाग उठे और

एक-दूसरे की ओर आश्चर्य से ताकने लगे। अहाते में कुत्ते भूँक उठे और घुड़साल में घोड़े हिनहिना उठे। छत पर बैठे कबूतर पंखों में से सिर उठा कर उड़ चले। दीवारों पर मक्खियाँ भिनभिना उठीं, आग फिर चट-चटाने लगी और माँस फिर पकने लगा। रसोइये ने आखिरकार नौकर के बाल खींच ही लिए। सारे राजमहल में रोजाना की-सी आवाज़ें भर उठीं, मानो कुछ हुआ ही न हो।

राजकुमार और गुलाब कुमारी की शादी धूमधाम से हुई। फिर वे हमेशा खुशी के साथ रहे।

एक रानी थी। उसके कोई सन्तान नहीं थी। सन्तान पाने की इच्छा उसे हमेशा बनी रहती थी।

एक दिन स्वप्न में एक देवदूत उसके सामने प्रकट होकर बोला, 'अब तुम प्रसन्न हो जाओ। तुम्हें एक पुत्र प्राप्त होगा। वह जो भी इच्छा करेगा, पूरी होगी।'

रानी दौड़ी-दौड़ी राजा के पास गई और उसे अपना अद्भुत सपना कह सुनाया। समय पाकर उसे एक पुत्र हुआ। राजा और रानी इससे आनन्दमग्न हो उठे।

रानी रोज अपने पुत्र को महल के उद्यान में ले जाती और वहाँ सरोवर में उसे स्नान कराती।

एक दिन रानी बच्चे को गोद में लेकर सोई थी। राजा का रसोइया बच्चे के उस अद्भुत गुण के बारे में जानता था, इसलिए वह उसे उठा ले गया। रसोइये ने एक मुर्गी मार कर रानी के कपड़ों पर उसका खून छिड़क दिया।

इसके बाद उसने बच्चे को एक सुरक्षित स्थान पर ले जाकर छिपा दिया, और राजा के पास जाकर चिल्लाया कि रानी की लापरवाही से जँगली जानवर बच्चे को उठा ले गये और उसे चीर-फाड़ डाला।

रानी के कपड़ों पर खून देख कर राजा ने उस बात पर विश्वास कर लिया। उसने अत्यन्त क्रुद्ध होकर आज्ञा दी कि एक ऐसी ऊँची मीनार बनवाई जाय जिसमें रोशनी तक जाने की जगह न हो। उस मीनार में राजा ने रानी को कैद कर दिया ताकि वह सात साल तक उसमें बिना भोजन पानी के पड़ी रहे और मर जाये। लेकिन सात साल तक रोज़ सफेद कबूतर का एक जोड़ा आकर रानी को भोजन-पानी देता रहा।

रसोइये ने मन में सोचा, 'अगर यह बात सच है कि इस बच्चे में ऐसी शक्ति है कि इच्छा करते ही इसकी बात पूरी हो जाय, तो मेरे यहाँ रहने पर यह मुझे हानि पहुँचा सकता है। इसलिए महलों से भाग कर वह वहाँ पहुँचा जहाँ बच्चे को छिपा रखा था। बच्चा अब इतना बड़ा हो गया था कि बोल सके। रसोइये ने उससे कहा कि वह एक ऐसे बड़े से महल की इच्छा करे जिसमें खूब साज-सामान और उद्यान हो। जैसे ही बच्चे ने रसोइये की बात दुहराई, उसकी इच्छा के अनुसार हर चीज़ प्रकट हो गई।

कुछ दिन बाद ही रसोइये ने बच्चे से फिर कहा, 'यहाँ तुम अकेले हो, एक सुन्दर लड़की की इच्छा करो जो तुम्हारी साथिन बने।' बालक ने वैसा ही किया, और तुरन्त ही उसके सामने एक अत्यन्त रूपवती कन्या प्रकट हो गई।

वे दोनों बराबर साथ-साथ खेलते और एक-दूसरे को खूब चाहने लगे। रसोइया आलस्य में पड़ा-पड़ा आराम से दिन बिताने लगा।

एक दिन रसोइये ने सोचा, हो सकता है कि कभी यह राजकुमार अपने पिता को देखने की इच्छा करे और इस तरह मुझे हानि पहुँचाए। इसलिए उसने लड़की को अपने पास बुला कर कहा—'आज शाम को जब लड़का सो जाय तो तुम उसके कलेजे में यह चाकू भोंक देना, और उसकी जीभ लाकर मुझे देना। अगर ऐसा नहीं करोगी, तो उसकी जगह तुम्हें प्राणों से हाथ धोने पड़ेंगे।'

रसोइया चला गया और दूसरे दिन सुबह को लौटा। लड़की ने उसकी दुष्ट आज्ञा नहीं मानी थी। वह बोली, 'अपने निर्दोष साथी की हत्या मैं क्यों करूँ, उसने किसी की कोई हानि नहीं की है।'

रसोइये ने कहा, 'अगर मेरा कहना नहीं करोगी तो उसकी जगह मैं तुम्हें मार डालूँगा।'

रसोइये के चले जाने पर लड़की ने एक बछड़ा मँगवाया और उसकी जीभ काट कर रख ली।

रसोइये को लौट आया जान कर उसने लड़के को बिस्तर में छिपा दिया और उसके ऊपर चादर ढक दी।

रसोइया सामने आते ही चिल्लाया, 'दे मुझे लड़के की जीभ!' लड़की ने उसे बछड़े की जीभ पकड़ा दी। तभी राजकुमार चादर को एक ओर फेंक कर उठा और चिल्लाया, 'ओ दुष्ट, मुझे मार डालना चाहता है! अब सुन अपनी सज़ा! मेरी इच्छा है कि तू काला कुत्ता बन जा और तेरी

गर्दन में सोने की जँजीर रहे। तू लाल अँगारे खाता रह जिससे तू आग की लपटें उगले।'

राजकुमार के यह शब्द कहते ही, रसोइया काला कुत्ता बन गया और उसकी गर्दन में सोने की जंज़ीर पड़ गई। वह अंगारे खाकर आग उगलने लगा।

कुछ दिनों तक राजकुमार महल में ही रहा। फिर उसे अपनी माँ की याद हो आई। वह सोचने लगा कि मेरी माँ जीवित है या नहीं। इसलिए उसने लड़की से कहा—'मैं अपने पिता के पास जा रहा हूँ। अगर तुम भी साथ चलो तो मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा।'

लड़की ने जवाब दिया, 'मुझसे इतनी दूर की यात्रा कैसे हो पायेगी, और उस अपरिचित देश में जहाँ मुझे कोई भी नहीं जानता, मेरा क्या होगा।'

नौजवान राजकुमार ने उसे छोड़ जाना नहीं चाहा। लेकिन जब लड़की ने अपना विचार नहीं बदला तो उसने इच्छा की कि वह एक सुन्दर फूल बन जाये ताकि वह उसे उसी रूप में अपने साथ ले जा सके।

कुत्ते की जंजीर पकड़ कर राजकुमार चल दिया और अपने देश जा पहुँचा।

वहाँ पहुँच कर उसने उस मीनार का पता लगाया जिसमें उसकी माँ कैद थी। लेकिन वह मीनार थी बहुत ऊँची।

इसलिए राजकुमार ने उसकी चोटी तक पहुँचने के लिए एक सीढ़ी की इच्छा की। ऊपर चढ़ कर उसने उसमें झाँका और कहा, 'ओ रानी माँ, क्या तुम अभी जीवित हो?'

रानी ने सोचा, यह आवाज़ उसी कबूतर की होगी जो उसके लिए भोजन लाता है, इसलिए जवाब दिया, 'मैं सन्तुष्ट हूँ, अभी-अभी भोजन किया है मैंने।'

इस पर नौजवान राजकुमार ने कहा, 'मैं तुम्हारा बेटा हूँ माँ! जंगली जानवरों ने मुझे नहीं मारा था। मैं अभी जीवित हूँ, और तुम्हें फौरन ही मुक्त कराऊँगा।'

इसके बाद वह नीचे उतर आया और राजा के महल में पहुँचा। वहाँ उसने अपने आप को शिकारी बताया और राजा की नौकरी पाने की इच्छा प्रकट की। राजा ने जवाब दिया कि उसे नौकरी तभी दी जा सकती है जब कि वह थोड़ा-सा हिरन का माँस ले आए। राज्य भर में राजा को हिरन का माँस कहीं नहीं मिला था।

नौजवान शिकारी इस बात के लिए तैयार हो गया कि राजा जितना चाहे उतना हिरन का माँस वह लाकर देगा। उसने कहा कि और सब शिकारी उसके साथ जायँ।

वे लोग चल दिये। थोड़ी ही दूर जाने पर राजकुमार ने उनसे एक घेरा बना लेने को कहा। बीच की खुली जगह के बीचो-बीच वह स्वयं खड़ा होकर इच्छा करने लगा।

तुरन्त ही दो सौ से ज्यादा हिरन उस घेरे में आ पहुँचे, और शिकारियों ने जल्दी-जल्दी उन्हें मार गिराया। साठ गाड़ी भर के हिरन का माँस राजा के महल में पहुँचा दिया गया।

इतने अधिक माँस को पाकर राजा बहुत खुश हुआ। उसने एक बड़े भोज की तैयारी की आज्ञा दी। उस भोज में सभी दरबारी बुलाए गये। भोज के समय राजा ने हठ किया कि नौजवान राजकुमार जो कि शिकारी के वेश में था, उसके पास ही बैठे। नौजवान ने कहा भी कि वह तो केवल एक मामूली शिकारी है, लेकिन राजा ने उसकी बात नहीं मानी।

बैठते ही राजकुमार को अपनी माँ की याद आई। वह इच्छा करने लगा कि उपस्थित व्यक्तियों में से कोई राजा से पूछे कि रानी अभी जीवित है या मीनार में ही मर गई।

जैसे ही उसने इच्छा की, राजा का सेनापति बोल उठा, 'महाराज, हम लोग तो यहाँ खुशी के साथ भोज मना रहे हैं, महारानी जी कहाँ हैं ? मीनार में वे अभी जीवित हैं या मर गईं ?'

राजा ने उत्तर दिया, 'उसके बारे में मैं एक शब्द भी सुनना नहीं चाहता। उसी की लापरवाही से मेरे प्यारे बेटे को जंगली जानवर उठा कर ले गये थे।'

राजा के इतना कहते ही शिकारी उठ खड़ा हुआ और कहने लगा, 'महाराजाधिराज, मेरे पिताजी, महारानी अभी जीवित हैं। मैं आपका पुत्र हूँ। जंगली जानवरों ने मुझे नहीं मारा था। बात यह हुई कि आपका दुष्ट रसोइया ही, जब मेरी माता जी सो रही थीं, तो उनकी गोद में से मुझे उठा ले गया था, और आपको धोखा देने के लिए उनके कपड़ों को उसने मुर्गी के खून से रंग दिया था।

इसके बाद राजकुमार ने वह जंज़ीर पकड़ कर खींची जिसमें कुत्ता बँधा था, और कहा—'यह है वह दुष्ट।' फिर उसने दहकते हुए अंगारे मँगवाये और कुत्ते को आज्ञा दी कि वह उन्हें खाए। उन्हें खाकर कुत्ता मुँह से आग उगलने लगा।

'तब राजकुमार ने इच्छा की कि रसोइया अपने असली रूप में आ जाए। सभी दरबारियों के सामने कुत्ता रसोइया बन गया। वह सफेद लम्बा कोट पहने था, और हाथ में चाकू लिए था।

तब तो राजा रसोइये की ओर देख कर अत्यन्त क्रुद्ध हुआ, और उसने आज्ञा दी कि वह मीनार की सबसे अंधेरी कालकोठरी में डाल दिया जाए।

राजकुमार ने पूछा, 'पिताजी, क्या मैं उस लड़की को भी आपको दिखाऊँ, जिसने अपनी जान को खतरे में डाल

कर भी मेरी रक्षा की।' राजा ने उसकी बात खुशी से स्वीकार की।

राजकुमार बोला, 'इस फूल के रूप में उसे देखिए।' इतना कह कर उसने अपनी छाती पर खोंसे हुए सुन्दर फूल को निकाल कर राजा के सामने रख दिया।

सभी उपस्थित लोग कह उठे कि इतना सुन्दर फूल उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था।

'अब आप लोग उस कन्या को भी देखिये' यह कह कर राजकुमार ने इच्छा की कि वह फिर कन्या का रूप धारण कर ले। तुरन्त ही वहाँ उस फूल के समान ही सुन्दर एक कन्या प्रकट हो गई।

राजा ने अत्यन्त शीघ्रता से दो नौकरों को भेजा कि वे मीनार पर जाकर रानी से क्षमा माँगें और उससे प्रार्थना करें कि वह आकर भोज में अपना सम्मानीय स्थान ग्रहण करे।

रानी को अब खाने-पीने की इच्छा बिल्कुल नहीं थी। उसने नम्रता से कहा, 'जिस दयालु ईश्वर ने मुझे यह दिन दिखाया है, वही मुझे शीघ्र ही मुक्त भी कर देगा।'

इसके कुछ दिनों बाद रानी का देहान्त हो गया। मरते समय रानी ने कहा कि मैं प्रसन्न हूँ और शान्ति में हूँ। जो दो कबूतर उसे मीनार में खाना देते रहे थे, समाधि तक उसके

पीछे-पीछे गये, और सब लोगों के लौट आने पर भी वे कबूतर वहीं मँडराते रहे।

राजा को रानी का शोक बना रहा, और इसी में उसकी मृत्यु हो गई। राजकुमार ने फूल कन्या से विवाह कर लिया। वे लोग राजा और रानी बन कर प्रसन्नतापूर्वक बहुत वर्षों तक राज्य करते रहे।
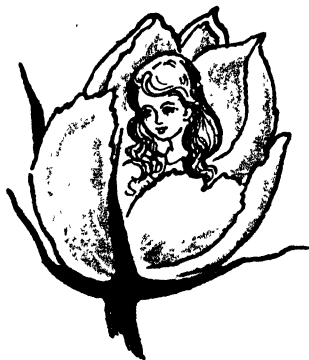
एक कुत्ता था। उसका मालिक उसकी तनिक भी परवाह न करता था। अक्सर बेचारे कुत्ते को ज़ोर की भूख सहनी पड़ती थी। अन्त को जब न रहा गया तो वह भाग खड़ा हुआ। उस समय वह बड़ा उदास और दुःखी था।

रास्ते में उसे एक गौरैया मिली, जो बोली, 'इतने उदास क्यों हो दोस्त ?' कुत्ते ने जवाब दिया, 'मैं बहुत ही भूखा हूँ, खाने को कुछ भी नहीं मिला है मुझे।' गौरैया ने कहा, 'इतनी-सी बात है तो चलो मेरे साथ पास के शहर में, और मैं तुम्हें छक के भोजन कराऊँगी।'

वे लोग साथ-साथ शहर में गये। एक कसाई की दुकान के पास पहुँचने पर गौरैया ने कुत्ते से कहा, 'ज़रा देर यहीं खड़े रहो, तब तक मैं जाकर अपनी चोंच से तुम्हारे लिए माँस का टुकड़ा गिराती हूँ।' गौरैया जाकर दुकान के तख्ते पर बैठ गई। उसने गौर से इधर-उधर निगाह डाली कि

कोई देख तो नहीं रहा है, फिर उसने एक बोटी पर चोंच मार कर एक टुकड़ा नीचे गिरा दिया। कुत्ता उस पर झपट पड़ा, और उसे लेकर एक कोने में चला गया। वहाँ जाकर वह जल्दी-जल्दी सारा टुकड़ा खा गया।

गौरैया ने कहा, 'चाहो तो और दिलाऊँ। दूसरी दुकान पर चलो, वहाँ भी मैं चोंच मार एक टुकड़ा गिरा दूँगी।' जब कुत्ते ने इस टुकड़े को भी खा लिया तो गौरैया बोली, 'कहो दोस्त, खूब खाने को मिल गया न?' कुत्ते ने कहा, 'मांस तो खूब मिल गया, इसके ऊपर से खाने को एक रोटी का टुकड़ा और होता।' गौरैया बोली, 'चलो मेरे साथ, वह भी मिल जाएगा तुम्हें।'

वह उसे एक नानबाई की दुकान पर ले गई, और खिड़की में रखी दो रोटियों को चोंच मार कर गिरा दिया। कुत्ते की अभी और खाने की इच्छा थी। इसलिए वह उसे दूसरे नानबाई की दुकान पर ले गई, और फिर उसके लिए थोड़ी सी रोटी अपनी चोंच से गिरा दी। जब कुत्ता खा चुका तो गौरैया ने पूछा, 'अब तो काफी हो गया न?' कुत्ते ने कहा, 'हाँ, आओ, अब शहर के बाहर की तरफ थोड़ा घूमने चलें।

वे दोनों राजमार्ग पर चल पड़े। मौसम में गर्मी थी, इसलिए थोड़ी ही दूर जाने पर कुत्ता बोल उठा, 'मैं तो बहुत थक गया हूँ, एक झपकी ले लूँ।' गौरैया ने कहा, 'ठीक है,

तबतक मैं उस झाड़ी पर बैठी रहूँगी।' कुत्ता सड़क पर लेट रहा और गहरी नींद लेने लगा। उसी समय उधर से एक गाड़ीवाला आया। उसकी गाड़ी में तीन घोड़े जुते थे और शराब के दो कुप्पे रखे थे।

गौरैया ने देखा गाड़ीवाले का ध्यान कुत्ते को बचा कर गाड़ी चलाने की ओर नहीं है, तो वह चिल्लाई, 'रोक, रोक, गाड़ीवान! नहीं तो तेरा बुरा होगा।' गाड़ीवालेन कहा, 'क्या बुरा होगा री चिड़िया, तू कर क्या सकती है मेरा?' और उसने गाड़ी कुत्ते के ऊपर हाँक दी। बेचारा कुत्ता पहियों से दब कर मर गया।

'गौरैया चिल्ला पड़ी, 'अरे दुष्ट हत्यारे, तू ने मेरे मित्र कुत्ते को मार डाला। अब सुन। इसके लिए तुझे अपना सब कुछ खो देना पड़ेगा।' गाड़ीवाले ने कहा, 'जा! जो तेरे जी में आए सो कर। तू बिगाड़ क्या सकती है मेरा?' और आगे बढ़ गया।

गौरैया गाड़ी के अन्दर घुस गई, और शराब के एक कुप्पे की डाट पर चोंच मार मार कर उसे ढीला कर दिया। गाड़ी वाला देख भी न पाया और तमाम शराब उसमें से बह गई। जब उसने देखा कि गाड़ी पर से कुछ चू रहा है तो कुप्पा खाली हो चुका था। वह चिल्ला उठा, 'हाय! मैं कितना अभागा हूँ!' 'गौरैया ने कहा, 'अभी क्या अभागे

हुए हो।' और वह गाड़ी में जुते एक घोड़े के सिर पर बैठ कर चोंचें मारने लगी। घोड़ा घबड़ा कर पीछे को टाँगें फेंकने लगा।

गाड़ीवाले ने जब यह देखा तो उसने अपनी कुल्हाड़ी निकाल कर गौरैया की ओर चलाई। गौरैया तो उड़ गई, लेकिन कुल्हाड़ी घोड़े के सिर पर इतने ज़ोर से पड़ी कि वह वहीं ढेर हो गया।

गाड़ीवाला चिल्ला उठा, 'हाय! मैं कितना अभागा हूँ!' गौरैया ने कहा—'अभी कहाँ हो तुम अभागे?' गाड़ीवाला आगे बढ़ा तो गौरैया फिर गाड़ी में घुस गई और चोंच मार-मार कर दूसरे कुप्पे की डाट भी ढीली कर दी, उसमें से भी सारी शराब ढुरक गई। गाड़ीवाले ने देखा तो कह उठा, 'महा अभागा हूँ मैं।'

गौरैया ने जवाब दिया, 'अभी नहीं हो महा अभागे।' और वह दूसरे घोड़ेके सिर पर बैठ कर चोंच मारने लगी। गाड़ीवान ने फिर उस पर तेज़ी से कुल्हाड़ी चलाई, लेकिन गौरैया उड़ गई और कुल्हाड़ी का वार दूसरे घोड़े पर पड़ा जो कि वहीं ढेर हो गया। गाड़ीवाला चिल्ला उठा, 'अब तो मैं पूरा अभागा हो गया।'

गौरैया ने कहा, 'अभी नहीं हुए हो पूरे अभागे।' और वह तीसरे घोड़े के सिर पर बैठ कर चोंच मारने लगी।

गाड़ीवान गुस्से में पागल हो उठा, बिना आगा-पीछा देखे उसने फिर गौरैया पर वार किया, लेकिन इस बार वह अपने तीसरे घोड़े से हाथ धो बैठा। वह फिर चिल्ला उठा, 'हाय ! मैं बिल्कुल अभागा हूँ।' गौरैया ने जवाब दिया, 'अभी नहीं हो बिल्कुल अभागे, अब मैं तुम्हारे घर चल कर तुम्हें सज़ा दूँगी।'

लाचार होकर गाड़ीवाले ने गाड़ी वहीं छोड़ दी और क्रोध में भरा हुआ घर पहुँचा। अपनी पत्नी से बोला, 'कैसी किस्मत की मार है, मेरी शराब भी तमाम बिखर गई और मेरे तीनों घोड़े भीं चल बसे।' पत्नी ने कहा, 'एक दुष्ट चिड़िया घर में आई थी और अपने साथ दुनिया भर की तमाम चिड़ियों को ले आई थी। वे सब अटारी में रखे हमारे अनाज पर टूट पड़ीं, और अब भी बड़ी तेज़ी से खा रही हैं।'

गाड़ी वाले ने ऊपर जाकर देखा तो हजारों चिड़ियाँ अनाज़ खा रही थीं और गौरैया उनके बीच में थी। सारा अनाज चुक गया, यह देखकर गाड़ीवाला चीख उठा, 'हाय, हाय ! अभागा हूँ मैं, अभागा हूँ मैं !' गौरैया ने कहा, 'अभी नहीं हो अभागे।' अपने हत्यारेपन के लिए अभी तो तुम्हें जान से हाथ धोना पड़ेगा।' यह कह कर वह उड़ गई।

गाड़ीवाला यह समझ कर कि अब तो जो कुछ भी मेरे पास था सभी नष्ट हो गया, नीचे जाकर रसोई-घर में बैठ
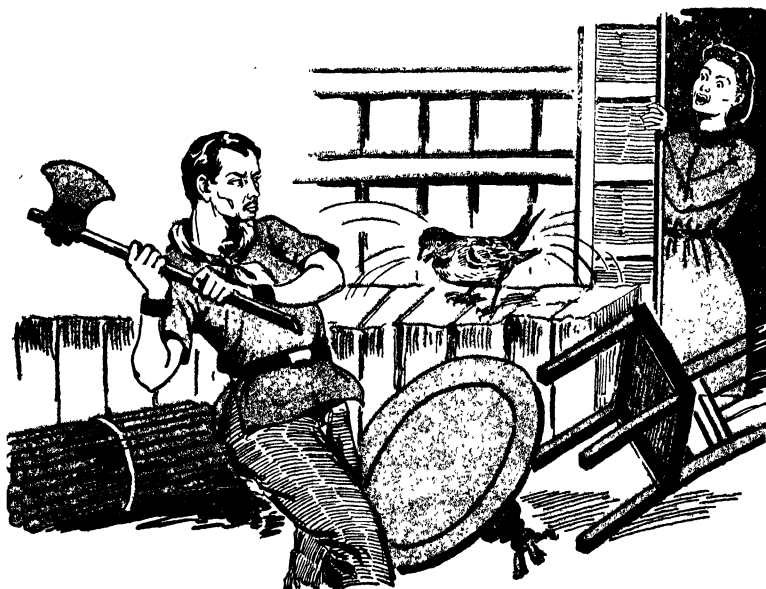
गया । उसे अपने किये पर पछतावा अब भी नहीं था, इसलिए गुस्से में भरा बैठा था । गौरैया खिड़की पर बैठ कर कहने लगी, 'गाड़ीवान, तुम्हें अपने हत्यारेपन के लिए जान से हाथ धोना पड़ेगा ।' गाड़ीवाला और भी गुस्से में भर उठा, उसने कुल्हाड़ी उठा कर गौरैया की ओर दे मारी । लेकिन गौरैया तो बच गई और खिड़की चूर-चूर हो गई ।

गौरैया फुदक कर भीतर आ गई और दरवाजे के पास बैठ कर बोली, 'गाड़ीवान, तुम्हें जान से हाथ धोना पड़ेगा ।' गाड़ीवाला गुस्से से पागल और अंधा हो उठा, उसने दरवाजे

ग्रिम की

के किवाड़ पर इतनी जोर से चोट की कि उसके दो टुकड़े हो गये। गौरैया इधर-उधर फुदकने लगी। गाड़ीवान और उसकी स्त्री ने क्रोध में भर कर अपनी सारी मेजें कुर्सियाँ, अलमारियाँ, शीशे और यहाँ तक कि दीवारें तक तोड़ डालीं, लेकिन चिड़िया का वे बाल भी बाँका न कर सके।

आखिरकार एक बार उन्होंने चिड़िया को पकड़ ही लिया। स्त्री बोली, 'इसे अभी खत्म कर दूँ।' गाड़ीवान ने कहा, 'नहीं, ऐसा करना तो इसके साथ रहम होगा। इसे तो हम तड़पा-तड़पा कर मारेंगे, फिर इसे खाएँगे।' गौरैया अब भी पर फड़फड़ा कर कहती आ रही थी, 'गाड़ीवान, तुम्हें जान से हाथ धोना पड़ेगा।'

गाड़ीवाले का धैर्य जाता रहा। स्त्री को कुल्हाड़ी देकर बोला, 'कुल्हाड़ी मार कर मेरे हाथ में ही चिड़िया को खत्म कर दो।' स्त्री ने कुल्हाड़ी उठाई। लेकिन निशाना चूक गया और कुल्हाड़ी जाकर गाड़ीवान की गर्दन पर पड़ी। गाड़ीवान वहीं ढेर हो गया। गौरैया मज़े से अपने घोंसले को लौट गई।

एक राजा का एक सुन्दर बगीचा था। उस बगीचे में एक ऐसा पेड़ था जिसमें सुनहरे अनार लगते थे। उन अनारों को रोज गिना जाता था। जब वे अनार पकने को आए तो पता चला कि हर रात को एक अनार गायब हो जाता है। राजा को इससे बड़ा क्रोध आया। उसने माली को हुक्म दिया कि सारी रात पेड़ के नीचे जग कर रखवाली किया करो।

माली ने अपने सबसे बड़े बेटे को रखवाली का काम सौंपा। लेकिन रात को कोई बारह बजे माली का बेटा सो गया और सुबह को फिर एक अनार कम पाया गया।

माली ने अपने दूसरे बेटे को रखवाली का काम सौंपा, लेकिन रात को बारह बजे वह भी सो गया और सुबह फिर एक अनार कम पाया गया।

इसके बाद तीसरे बेटे ने कहा, 'अब मैं रखवाली करूँगा।' माली ने सोचा, 'यह अभी बच्चा है, सम्भव है, रात को इसे कोई हानि पहुँच जाए', इसलिए उसने तीसरे बेटेको रखवाली

करने से रोकना चाहा। लेकिन जब बेटा नहीं माना तो माली को आज्ञा देनी पड़ी।

माली का तीसरा बेटा रखवाली करने के लिए रात को पेड़ के नीचे जा बैठा। जैसे ही बारह का गजर खड़का, उसे हवा में फड़फड़ाहट की आवाज़ सुनाई दी। शुद्ध सोने की बनी हुई एक चिड़िया उड़ती हुई आई। जैसे ही उसने एक अनार पर अपनी चोंच मारी, माली के बेटे ने कूद कर उस पर एक तीर छोड़ दिया। लेकिन तीर से चिड़िया को कोई हानि नहीं पहुँची। सिर्फ उसका एक सुनहरी पंख कट कर गिर पड़ा। चिड़िया उड़ गई।

सुबह को सुनहरी पंख राजा के पास लाया गया। सभा बुलाई गई। सभी लोगों ने कहा कि, यह पंख सारे राज्य की सम्पत्ति से भी अधिक मूल्यवान है। राजा बोला, 'एक पंख से मेरा क्या काम चलेगा, मुझे तो समूची चिड़िया मिलनी चाहिए।'

माली का सबसे बड़ा बेटा सुनहरी चिड़िया की तलाश में निकल पड़ा। थोड़ी दूर जाने पर उसे एक जंगल मिला, वहाँ एक लोमड़ी बैठी थी। माली के बेटे ने उस लोमड़ी को मारने के लिए अपने धनुष पर तीर चढ़ाया। लोमड़ी बोल उठी, 'मुझे मत मारो, मैं तुम्हें नेक सलाह दूँगी। मैं जानती हूँ कि तुम घर से किसलिए चले हो, तुम सुनहरी चिड़िया

की तलाश में हो । शाम तक तुम एक गाँव में पहुँच जाओगे । वहाँ पहुँचने पर तुम्हें आमने-सामने दो सरायें दिखाई देंगी । उनमें से एक बहुत सुन्दर और आरामदेह जान पड़ेगी । उसमें मत जाना । दूसरी सराय में रात को आराम करना इस बात का खयाल मत करना कि वह बहुत भद्दी-सी दिखाई देती है ।'

माली के लड़के ने सोचा, 'यह बेचारी लोमड़ी सुनहरी चिड़िया के बारे में क्या जान सकती है !' इसलिए उसने लोमड़ी पर तीर छोड़ दिया । लेकिन निशाना चूक गया । लोमड़ी पीठ पर पूँछ रखकर भाग गई ।

माली का बेटा अपने रास्ते पर आगे बढ़ा । शाम को वह उसी गाँव में पहुँच गया जहाँ दो सरायें थीं । उनमें से एक सराय में भोजन और नाच-गान चल रहा था, दूसरी बहुत गन्दी और भद्दी दिखाई देती थी । लड़के ने सोचा, 'इस शानदार जगह को छोड़कर अगर उस गन्दी जगह में जाऊँ तो मुझसे ज्यादा मूर्ख कौन होगा !' इसलिए वह खूबसूरत सराय में ही गया, और मजेदार खाने-पीने के आगे सुनहरी चिड़िया तो क्या, अपने देश तक को भूल बैठा ।

समय बीतता गया । माली का बड़ा लड़का जब घर नहीं लौटा तो छोटा लड़का सुनहरी चिड़िया की तलाश में निकला । लेकिन उसके साथ भी वैसी ही घटना हुई । उसे

ग्रिम की

भी लोमड़ी मिली, जिसने अपनी नेक राय दी। जब वह दोनों सरायों के पास पहुँचा तो उसने देखा कि उसका बड़ा भाई उस सराय की खिड़की पर खड़ा है जहाँ खूब खुशियाँ मनाई जा रही हैं। बड़े भाई ने जब उसे अपने पास बुलाया तो वह वहाँ जाने के लालच को न रोक सका। वहाँ पहुँच कर वह भी सुनहरी चिड़िया और अपने घर के बारे में सब कुछ भूल गया।

और समय बीता। अब माली के सबसे छोटे लड़के ने सुनहरी चिड़िया की तलाश में जाने की इच्छा प्रकट की। लेकिन उसके बाप ने बहुत दिनों तक उसकी बात पर ध्यान ही न दिया। बात यह थी कि वह अपने इस बेटे को ज्यादा प्यार करता था। उसे डर था कि कहीं इस पर भी कोई मुसीबत न आ पड़े और उस कारण यह भी घर न लौट सके। आखिरकार जब लड़का किसी तरह न माना तो माली को राज़ी होना पड़ा।

जंगल में पहुँच कर इसे भी वही लोमड़ी मिली और उसने अपनी राय इसे दी। लेकिन लोमड़ी के प्रति इसका बर्ताव अपने भाइयों की तरह न रहा। इसने लोमड़ी की जान लेने की कोशिश करने के बजाय उसे धन्यवाद दिया। इसलिए लोमड़ी बोली, 'मेरी पूँछ पर बैठ जाओ, तुम्हारी

यात्रा जल्दी पूरी हो जाएगी।' लड़का उस की पूँछ पर बैठ गया। लोमड़ी बड़ी तेज़ी से दौड़ने लगी।

गाँव में पहुँच कर, लड़के ने लोमड़ी की बात पर अमल किया। बिना आगा-पीछा देख वह उस भद्दी सराय में चला गया और रात भर मज़े से वहीं आराम किया। सुबह जब वह आगे की यात्रा की तैयारी कर रहा था, लोमड़ी फिर आ पहुँची और बोली, 'नाक की सीध में जाने पर तुम्हें एक महल मिलेगा, उसके आगे सिपाहियों का एक दल गहरी नींद में पड़ा खर्राटे भर रहा होगा। उनकी कुछ परवाह मत करना, महल में चले जाना। तुम उस कमरे में पहुँच जाओगे जहाँ लकड़ी के पिंजड़े में सुनहरी चिड़िया दिखाई देगी। पास में ही एक सुन्दर सुनहरी पिंजड़ा रखा होगा। तुम इस

बात की कोशिश मत करना कि चिड़िया को भद्दे पिंजड़े में से निकाल कर सुन्दर पिंजड़े में रखा जाए। अगर करोगे तो पछताओगे।

लोमड़ी ने अपनी दुम फैला दी, लड़का उस पर बैठ गया, और वे दोनों बहुत तेजी से दौड़ने लगे।

महल के आगे सब कुछ वैसा ही था जैसा कि लोमड़ी ने बताया था। लड़के ने भीतर जाकर उस कमरे का पता लगा लिया जहाँ लकड़ी के पिंजड़े में सुनहरी चिड़िया बन्द थी। सुनहरा पिंजड़ा भी वहीं था। पास में वे सुनहरे सेब भी रखे थे जो कि राजा के बगीचे से चोरी गये थे। लड़के ने सोचा, ऐसी अच्छी चिड़िया को ऐसे भद्दे पिंजड़े में ले जाना तो ठीक नहीं होगा। इसलिए उसने लकड़ी के पिंजड़े की खिड़की खोलकर चिड़िया को पकड़ लिया और उसे सुनहरे पिंजड़े में रख दिया। इस पर चिड़िया इतने जोर से चीखने लगी कि तमाम सिपाही जाग गये, और लड़के को कैदी बनाकर राजा के पास ले गये।

अगले दिन उसका न्याय करने के लिए सभा बुलाई गई। लड़के को मौत की सजा दी गई। लेकिन यह शर्त रख दी गई कि अगर वह राजा को ऐसा सुनहरा घोड़ा लाकर दे सके जो कि हवा की तरह तेज दौड़ता हो, तो उसे छोड़ दिया जाएगा, साथ ही सुनहरी चिड़िया भी उसे दे दी जाएगी।

लड़का अफसोस करता हुआ, फिर यात्रा पर चल पड़ा। एकाएक उसे फिर वही लोमड़ी मिली। वह बोली, 'देखा, मेरी सलाह न मानने का क्या नतीजा निकला! खैर, मैं अब तुम्हें सुनहरा घोड़ा को पाने की तरकीब बताती हूँ, लेकिन तुम्हें मेरे कहने के अनुसार चलना होगा। नाक की सीध में जाने पर तुम्हें एक महल मिलेगा, जहाँ सुनहरी घोड़ा अस्तबल में बंधा खड़ा है। पास में ही साईस गहरी नींद में पड़ा खर्राटे भर रहा होगा। घोड़े को तुरन्त लेकर वहाँ से चल देना। लेकिन ध्यान रहे कि उस पर चमड़े की पुरानी जीन ही कसना, वहीं पास में रखी सुनहरी जीन मत बाँधना।' लड़का फिर लोमड़ी की दुम पर बैठ गया और वह बड़ी तेजी से दौड़ने लगी।

महल में पहुँचने पर सब कुछ लोमड़ी के बताए अनुसार ही मिला। साईस गहरी नींद में पड़ा सो रहा था, उसका हाथ सुनहरी जीन पर था। घोड़े को देखकर लड़के ने सोचा, ऐसे अच्छे घोड़े पर चमड़े की पुरानी जीन रखना नादानी होगी। इस पर सुनहरी जीन ही रखी जानी चाहिए। जैसे ही उसने सुनहरी जीन उठाई, साईस जग पड़ा और इतनी जोर से चिल्लाने लगा कि तमाम रखवाले वहाँ दौड़ आये। उन्होंने लड़के को कैद कर लिया। अगले दिन सभा में उसका न्याय हुआ और उसे मौत की सजा दी गई। लेकिन शर्त

रखी गई कि अगर वह सुन्दरी राजकुमारी को ला देगा, तो उसे छोड़ दिया जायेगा, और सुनहरी चिड़िया और सुनहरी घोड़ा दोनों उसे दे दिये जाएँगे।

बेचारा लड़का फिर उदास होकर चल पड़ा। लोमड़ी आकर फिर उससे बोली, 'तुमने मेरी बात पर ध्यान क्यों नहीं दिया। अगर तुमने ध्यान दिया होता, तो तुम्हें चिड़िया और घोड़ा दोनों मिल जाते। अब मैं फिर एक बार तुम्हें सलाह देती हूँ। सीधे जाओ, शाम तक तुम एक महल में पहुँच जाओगे। रात को बारह बजे उस महल की राजकुमारी स्नानघर में जाती है। उसके पास जा कर उसे एक प्यार देना। वह इस बात पर राजी हो जाएगी कि तुम उसे आगे साथ ले आओ। लेकिन ध्यान रहे कि तुम उसे माँ-बाप से आज्ञा लेने मत जाने देना।' लोमड़ी ने अपनी दुम फैला दी, लड़का उस पर बैठ गया, और वे बड़ी तेजी से दौड़ने लगे।

महल में पहुँचने पर सब कुछ वैसा ही था जैसा कि लोमड़ी ने बताया था। रात को बारह बजे राजकुमारी स्नान करने जा रही थी, लड़के ने उसके पास पहुँच कर उसे प्यार किया। राजकुमारी उसके साथ चलने को राजी हो गई। लेकिन उसने बहुत गिड़गिड़ा कर कहा कि पिता से आज्ञा ले लेने दो। पहले तो लड़के ने मना कर दिया। लेकिन राजकुमारी रोते-रोते उसके पैरों पर गिर पड़ी।

अन्त को उसे मानना पड़ा। जैसे ही राजकुमारी अपने पिता के दरवाजे पर पहुँची, रखवाले जग पड़े और उन्होंने लड़के को कैद कर लिया।

लड़का राजा के सामने लाया गया। राजा बोला, 'मेरी लड़की तुम्हें तभी मिल सकती है जब कि तुम आठ दिन के भीतर उस पहाड़ी को खोद कर फेंक दो जो कि मेरी खिड़की के आगे के दृश्य को रोक रही है।' वह पहाड़ी इतनी बड़ी थी कि दुनिया भर के आदमी मिल कर भी उसे नहीं हटा सकते थे। लड़का सात दिन तक उस काम में लगा रहा, लेकिन बहुत ही जरा-सा काम हो पाया। तभी लोमड़ी आकर बोली, 'तुम लेट कर सो जाओ, तुम्हारा काम मैं करती हूँ।' सुबह को जब वह उठा तो पहाड़ी का कहीं पता भी न था। वह खुश होकर राजा के पास पहुँचा और कहा कि अब पहाड़ी हटा दी गई है, इसलिए राजकुमारी मुझे दे दीजिये।

राजा को अपना वचन रखना पड़ा। लड़का राजकुमारी को लेकर चल दिया। तभी लोमड़ी आकर बोली, 'अरे! राजकुमारी, घोड़ा और चिड़िया—इन तीनों को क्यों नहीं लेते?' लड़के ने कहा, 'किस तरह?' लोमड़ी ने कहा, 'इसमें क्या रखा है। राजा के पास जाओ, वह राजकुमारी को माँगेगा। उससे कहना यह रही राजकुमारी। इस पर राजा बहुत खुश हो उठेगा। तुम्हें सुनहरी घोड़ा मिल

जायेगा। सबसे विदा लेने के लिए तुम हाथ मिलाना। राजकुमारी से सबसे बाद में हाथ मिलाना। हाथ मिलाते ही उसे पकड़ कर फुर्ती से घोड़े पर चढ़ा देना, और खुद भी कूद कर चढ़ बैठना, फिर तेजी से भाग खड़े होना।'

सब कुछ वैसा ही हुआ। इसके बाद लोमड़ी बोली, 'जिस महल में सुनहरी चिड़िया है, तुम जब वहाँ पहुँचोगे तो मैं राजकुमारी के साथ दरवाजे पर रुकी रहूँगी। तुम घोड़े पर चढ़ कर भीतर राजा के पास जाना। जब वह देख लेगा कि तुम उसका मनचाहा घोड़ा ले आए हो, तो वह चिड़िया

को मँगवायेगा । तुम घोड़े पर बैठे ही बैठे कहना कि मैं देखना चाहता हूँ कि यह असली सुनहरी चिड़िया है या नहीं । जब चिड़िया हाथ में आ जाये, तो तुम भाग खड़े होना ।'

इस बार भी लोमड़ी के कहे अनुसार ही सब कुछ हुआ । लड़का चिड़िया ले आया, राजकुमारी को फिर घोड़े पर चढ़ा लिया और वे लोग एक बड़े जंगल में पहुँच गये । वहाँ लोमड़ी आकर बोली, 'मुझे मार कर मेरा सिर और हाथ-पैर काट डालो ।' लड़का इसके लिए कैसे राजी होता । लोमड़ी ने कहा, 'अच्छा, मैं फिर तुम्हें नेक सलाह देती हूँ, फाँसी से किसी को मत छुड़ाना, और किसी नदी के किनारे भी मत बैठना ।' लोमड़ी चली गई । लड़के ने सोचा, 'इस सलाह पर चलना तो कोई मुश्किल काम नहीं है ।'

राजकुमारी के साथ वह घोड़े पर चल दिया, और उस गाँव में पहुँच गया जहाँ उसके दोनों भाई थे । वहाँ उसे बड़ा शोर-गुल सुनाई दिया । पूछने पर मालूम हुआ कि दो आदमियों को फाँसी दी जानेवाली है । पास जाने पर उसने देखा कि वे दोनों उसके भाई ही थे जो कि अब डाकू हो गये थे । लड़के ने पूछा, 'क्या इन्हें बचाया नहीं जा सकता ?' लोगों ने बताया कि उन्हें तभी बचाया जा सकता है जबकि वह उनके लिए अपना सारा धन दे डाले । लड़के ने बिना आगा-पीछा सोचे, जितना भी धन माँगा गया, दे डाला ।

उसके भाइयों को छोड़ दिया गया। वे लोग उसके साथ घर को चल दिये।

जब वे उस जंगल में पहुँचे जहाँ पहले-पहल लोमड़ी मिली थी, तो दोनों भाइयों ने कहा, 'आओ थोड़ी देर नदी किनारे बैठ कर आराम करें और खायें-पियें।' सबसे छोटा भाई लोमड़ी की सलाह भूल गया और उनके साथ नदी के किनारे बैठ गया। उसके मन में कोई शक नहीं था। उसके भाइयों ने पीछे से आकर उसे नदी में ढकेल दिया। राजकुमारी, घोड़ा और चिड़िया को लेकर वे लोग अपने स्वामी राजा के पास पहुँचे और बोले, 'यह सब हम अपनी मेहनत से लाए हैं।' इस पर बड़ी भारी खुशी मनाई गई। लेकिन घोड़े ने खाना छोड़ दिया, चिड़िया ने गाना छोड़ दिया और राजकुमारी बैठ कर रोने लगी।

सबसे छोटा भाई नदी में जा पड़ा था। सौभाग्य से नदी में ज्यादा पानी नहीं था लेकिन गिरने से उसकी हड्डियाँ-पसलियाँ टूट गईं। नदी का कगार इतना ऊँचा था कि उसे निकलने का रास्ता कहीं न मिला। लोमड़ी फिर एक बार उसके पास पहुँची और बोली, 'तुमने मेरी सलाह नहीं मानी न! मान लेते तो तुम पर कोई भी मुसीबत नहीं आती।' लड़के ने अपनी गलती स्वीकार की। लोमड़ी ने कहा, 'तुम्हें यहाँ कैसे छोड़ जाऊँ! मेरी पूँछ कस कर पकड़

लो ।' लड़के ने वैसा ही किया । लोमड़ी ने उसे खींच कर नदी से बाहर निकाला, और बोली, 'तुम्हारे भाई अगर तुम्हें पा जाएँ तो मार डालेंगे ।' इसलिए लड़के ने एक गरीब आदमी का भेष बना लिया और छिप कर राजा के दरबार में पहुँचा । जैसे ही वह दरवाजे पर पहुँचा कि घोड़े ने खाना शुरू कर दिया, चिड़िया ने गाना शुरू कर दिया और राजकुमारी ने रोना बन्द कर दिया । वह सीधा राजा के पास पहुँचा और अपने भाइयों की सारी दुष्टता कह सुनाई । उन दोनों को पकड़वा कर सजा दी गई । सबसे छोटे भाई को राजकुमारी लौटा दी गई । राजा की मृत्यु के बाद गद्दी भी उसी को मिली ।

बहुत दिनों बाद एक दिन वह घूमता हुआ जंगल की तरफ जा निकला । वहाँ उसे वही लोमड़ी मिली । लोमड़ी गिड़-गिड़ा कर बोली, 'मुझे मार कर मेरा सिर और हाथ-पैर काट डालो ।' राजा ने उसका कहना कर दिया । देखा क्या कि लोमड़ी एक आदमी के रूप में जी उठी । वह आदमी भी और कोई नहीं, राजकुमारी का भाई था, जो कि बहुत वर्षों से गायब था ।
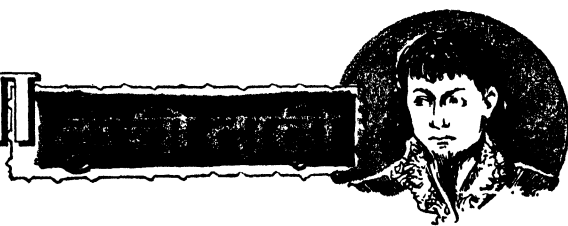
एक राजा के एक सुन्दर कन्या थी। उस कन्या को इतना गर्व था कि उसे कोई वर पसन्द न आता था। जो कोई भी इस उद्देश्य से आता, उसे वह अस्वीकार तो कर ही देती, उसका मजाक भी बनाती थी।

अन्त को उसके पिता ने एक बड़े भोज में पास के और दूर के सभी कुलीन लोगों को बुला भेजा। आने पर उन लोगों की योग्यता के अनुसार स्वागत किया गया। पहला स्थान नौजवान राजाओं का था, उसके बाद राजकुमारों का, फिर जागीरदारों आदि का।

स्वयं राजकुमारी को उनका सम्मान करने के लिए भेजा गया। लेकिन हमेशा की भाँति उसने हर किसी में कोई न कोई दोष निकाल खड़ा किया। कोई इतना मोटा था जैसे मटका, कोई इतना दुबला था जैसे बबूल का पेड़, किसी की बुद्धि उसके शरीर जैसी ही स्थूल थी, कोई बहुत

कुबड़े था तो कोई सुग्गे जैसा दिखता था। इसी तरह वह एक के बाद दूसरे पर हँसती और उसके नाम धरती रही। अन्त में वह एक ऐसे नौजवान राजा के पास पहुँची, जो था तो बहुत सुन्दर लेकिन उसकी ठोड़ी जरा टेढ़ी थी। राजकुमारी ठहाका मार के हँस पड़ी और बोली, 'देखिये! आपकी दाढ़ी क्या है, बस कूँची समझिये।' उस दिन से बेचारे राजा का नाम ही 'कूँची-दाढ़ी' पड़ गया।

राजकुमारी के पिता ने देखा कि इस लड़की ने तो सभी का मजाक उड़ा डाला, हालाँकि इनमें से कोई भी इसका पति होने के अयोग्य न था, तो उसे बड़ा क्रोध आया। उसने कहा, 'अच्छा, अब इतने माननीय और वर तो कहीं मिलने के नहीं, इसलिए जो भी पहला भिखारी महल के दरवाज़े पर आयेगा, उसी से राजकुमारी को विवाह करना पड़ेगा।'

सभी मेहमान चले गये। कुछ दिनों बाद राजमहल के द्वार पर एक गवैया आया। राजा ने उसकी आवाज सुन कर उसे अपने सामने बुलवाया। साथ ही उसने राजकुमारी को भी बुलवा लिया।

राजा ने गवैये को फिर से गाने की आज्ञा दी। जब वह गा चुका तो राजा ने कहा, 'तुम बहुत अच्छा गाते हो, इसलिए मैं अपनी कन्या तुम्हें इनाम में देता हूँ।'

राजकुमारी गिड़गिड़ाती रही । राजा बोला, 'अब गिड़-गिड़ाने से कुछ नहीं होगा । जो भी पहला भिखारी आये, तुम्हें उसी को दे डालने का मैं प्रण कर चुका हूँ । मैं उस प्रण का पालन अवश्य करूँगा ।'

पुरोहित को बुला कर गवैये भिखारी के साथ राज-कुमारी का विवाह कर दिया गया । राजकुमारी ने प्रार्थना की कि मुझे महल में ही रहने दो; लेकिन राजा ने उसकी इस प्रार्थना को भी यह कह कर ठुकरा दिया, 'जाओ, अपने पति के भाग्य का साथ दो, अब उसी के साथ रह कर दुनिया का रंग देखो ।'

घुमक्कड़ गवैया उसे लेकर चल दिया । ऊबड़-खाबड़ पहाड़ी रास्ते पर भी वह उसके साथ जाने को विवश थी ।

कुछ देर बाद वे लोग बड़े-से जगल में पहुँचे । राज-कुमारी ने पूछा, 'किसका है यह जंगल ?'

भिखारी ने जवाब दिया,'राजा कूँची-दाढ़ी का, अच्छा होता कि तुम उसी से विवाह कर लेतीं । तब यह जंगल तुम्हारा हो जाता ।'

थकी-माँदी राजकुमारी बोल उठी, 'हाय, मैं ऐसी मूर्ख रही !'

इसके बाद वे लोग सुन्दर सपाट घास के मैदान में आ गये । राजकुमारी ने फिर पूछा कि यह मैदान किसका है ?

फिर उसे वही उत्तर मिला, 'राजा कूँची-दाढ़ी का ।'

एक बड़े शहर में पहुँचने पर राजकुमारी को पता चला कि वह राजा कूँची-दाढ़ी की राजधानी थी ।

राजकुमारी पछता कर कहने लगी, 'हाय, मैंने उससे विवाह नहीं कर लिया, उलटे उसका मजाक बनाया ।'

भिखारी ने टोका, 'यह सब व्यर्थ बात बन्द करो । तुमने मुझसे विवाह किया है, मैं हूँ तुम्हारा पति । अब मुझसे बढ़ कर और कोई नहीं हो सकता तुम्हारे लिए ।

आखिरकार वे एक छोटी-सी कुटिया पर पहुँचे । भिखारी वहीं रुक गया । राजकुमारी चिल्ला उठी--'हे भगवान्, किसकी है यह वाहियात झोपड़ी ?'

उसका पति बोला, 'यही है हमारा घर। इसी में हम रहेंगे।'

कुटिया में घुसने के लिए सुन्दरी लम्बी राजकुमारी को झुक कर जाना पड़ा। भीतर जाकर उसने चारों ओर नजर डाली और खीझ कर बोली, 'नौकर लोग कहाँ हैं?'

भिखारी ने उत्तर दिया, 'अरे, हम निर्धनों के पास नौकर कहाँ? तुम्हीं को सब काम करना होगा। आग जला कर उस पर बर्तन चढ़ा दो और मेरे लिए भोजन तैयार करो। मैं बहुत थक गया हूँ और भूखा हूँ।'

राजकुमारी ने तो कभी चूल्हे पर चढ़ा बर्तन तक न देखा था, किसी तरह का खाना बनाने की बात ही क्या! अन्त को, बुरा-भला कहते हुए और झींकते हुए, भिखारी को ही भोजन बनाना पड़ा। खाने के लिए अधिक नहीं था, इसलिए उन दोनों को जल्दी ही सो जाना पड़ा। सुबह, भिखारी ने राजकुमारी को तड़के ही जगा कर घर की सँभाल-सुधार करने को कहा। राजकुमारी बेचारी के पास चीखने चिल्लाने के सिवा और कुछ न था।

कुटिया में जो थोड़ा-बहुत अनाज-पानी था उसके खत्म हो जाने पर पति बोला, 'ऐसे काम नहीं चलने का। अगर पका नहीं सकतीं तो तुम्हें और कुछ काम करना होगा। टोकरियाँ बुनो। मैं जाकर तुम्हारे लिए सरपत तोड़े लाता हूँ।'

तुरन्त जाकर वह गट्ठर भर सरपत ले आया। लेकिन उससे राजकुमारी की उँगलियाँ कट गईं और खून बहने लगा।

पति ने कहा, 'ऐसे नहीं चलेगा। बेचने के लिए तुम्हें कुछ कपड़ा बुनना होगा।'

मोटे सूत से भी राजकुमारी के हाथ कट गये। पति का धैर्य जाता रहा। वह चीख उठा, 'तुमसे कुछ भी होगा क्या? एकदम बेकार हो तुम। मैं जाकर कुछ मिट्टी के बर्तन लाता हूँ। बाजार में बैठ कर तुम उन्हें बेचना, और मैं गाऊँगा।'

बेचारी राजकुमारी बहुत गिड़गिड़ाई कि मुझे कुटिया में अकेली ही छोड़ दो, क्योंकि उसे डर था कि बाजार में आदमी मुझे पहचान लेंगे। लेकिन उसका पति न माना। थोड़े से मिट्टी के बरतन लाकर उसने उन्हें बेचने के लिए अपनी पत्नी को बाजार भेज ही दिया।

सुन्दर राजकुमारी से लोगों ने खूब बर्तन खरीदे। सब बिक जाने पर उसका पति और बर्तन लाकर देता रहा। एक दिन, वह रोज की तरह बाजार के कोने में अपने बर्तन लिए बैठी थी। सहसा एक मस्त घुड़सवार उसी कोने की ओर घोड़ा बढ़ाता आया और उसकी दुकान में घुस कर सारे बर्तन फोड़ डाले। वह बेचारी बैठ कर रोने लगी।

कुटियाको लौटते उसे डर लग रहा था, और जाती भी कहाँ ? लेकिन साँझ हो आने पर, कोई चारा न देख कर वह अपने पति के पास गई और उसे सारा हाल बता दिया ।

वह डरी हुई तो थी ही, पति ने भी बुरा-भला कहा । अन्त को वह बोला, 'रोना-धोना बन्द करो अब ! मैं राज-महल गया था । वहाँ रसोईघर के लिए एक नौकरानी की जरूरत है । देखें, तुम से वह काम भी हो सकेगा या नहीं । मैं तो गा-बजा कर अपनी आजीविका कमा ही लूँगा ।'

राजकुमारी अब उसी राजा के रसोईघर में नौकरानी हो गई, जिसका उसने 'कूँची-दाढ़ी' नाम धरा था, और जिससे शादी कर लेने पर वह महारानी बन जाती ।

महल के रसोइये की आज्ञा से वह बर्तन साफ करती और स्वादिष्ट भोजन की जूठन खा कर रह जाती ।

कुछ दिनों बाद महल में एक बड़ा भोज हुआ । नौक-रानी चुपके से दरवाजे के पास जाकर उस सुन्दर दृश्य को देखने लगी । अपने पहले के गर्व पर उसे पछतावा हो रहा था ।

राजा ने जब वहाँ प्रवेश किया तो उसकी नजर नौकरानी पर पड़ी । खराब से कपड़े और उदास चेहरा होने पर भी वह पहले ही जैसी सुन्दरी थी । उसकी ओर बढ़ कर राजा ने उसे पकड़ लिया । राजकुमारी ने जब देखा कि यह तो

राजा कूँची-दाढ़ी है, तो वह स्वयं को छुड़ाने लगी । उसकी जेब में रखे भोजन के टुकड़े निकल कर जमीन पर गिर पड़े । सभी मेहमान यह देख कर हँसने लगे । राजकुमारी अपनी झोपड़ी को भाग जाने के लिए कमरे में से बाहर जाने लगी ।

लेकिन राजा झटपट खिड़की में से होकर बाहर मैदान में पहुँच गया, और सीढ़ियों पर से उतरती राजकुमारी को रोक लिया ।

राजा ने कहा, 'डरो मत, मैं और तुम्हारा गवैया पति दोनों एक ही हैं । मैं ही वह सिपाही था जिसने तुम्हारे मिट्टी के बर्तन तोड़े थे । यह सब तुम्हारे गर्व की सजा थी । दुःख न मानो, अब हम नये सिरे से जीवन शुरू करेंगे ।'

राजकुमारी फूट-फूट कर रो उठी, बोली—'मैं किसी काम की नहीं हूँ, तुम्हारी पत्नी होने योग्य भी नहीं हूँ ।'

राजा उसे महल में ले गया । वहाँ बहुत-सी नौक-रानियाँ उसकी सेवा के लिए तैयार थीं । सुन्दर कपड़े धारण करके, राजकुमारी फिर भोजन के स्थान पर आई । वहाँ उसके पिता जी भी थे । भोज शुरू हुआ । अब राजकुमारी का गर्व जाता रहा था । वह अपने पति राजा कूँची-दाढ़ी के साथ हमेशा सुख से रही ।

एक बकरी के सात बच्चे थे। वह उन्हें बहुत प्यार करती थी।

एक दिन जब वह उनके खाने के लिए जंगल में कुछ तलाश करने जाने लगी तो उसने सातो बच्चों को बुला कर कहा—'किसी को भीतर मत आने देना। ऐसा न हो कि भेड़िया आ कर तुम्हें खा डाले। उसके काले पंजों और कर्कश आवाज़ से तुम उसे पहचान लेना।'

बच्चों ने जवाब दिया, 'डरो मत माँ! जैसा तुम कहती हो हम वैसा ही करेंगे।'

बकरी विदा लेकर तेज़ी से अपने रास्ते चल दी।

थोड़ी देर बाद ही किसी ने दरवाज़ा खटखटाया और यह आवाज़ सुनाई दी—'बच्चो, मुझे अन्दर आने दो, मैं तुम्हारी माँ हूँ, तुम सब के लिए उपहार लाई हूँ।'

बच्चों ने जब कर्कश आवाज़ सुनी तो समझ लिया कि भेड़िया है। इसलिए उन्होंने उत्तर दिया—'हम तुम्हें अन्दर

नहीं आने देंगे। हम जानते हैं कि हमारी माँ की आवाज़ तुम्हारी तरह कर्कश नहीं है। हमें मालूम है कि तुम भेड़िये हो।'

भेड़िया चला गया और एक दुकान पर पहुँचा। वहाँ से उसने थोड़ा-सा शहद खरीदा और अपनी आवाज़ को कोमल करने के लिए उसे खा लिया। तब वह फिर बकरी की झोपड़ी पर गया और दरवाज़ा खटखटा कर बोला, 'बच्चो, मुझे अन्दर आने दो, मैं तुम्हारी माँ हूँ, तुम सब के लिए उपहार लाई हूँ।'

बच्चों ने खिड़की में से भेड़िये का काला पंजा देख लिया था। इसलिए उन्होंने जवाब दिया—'हम तुम्हें अन्दर हर-गिज़ नहीं आने देंगे। हम जानते हैं कि हमारी माँ के पंजे तुम्हारी तरह काले नहीं हैं। हमें मालूम है कि तुम भेड़िये हो।'

इसके बाद भेड़िया रोटी बनानेवाले की दुकान पर गया और बोला, 'मेरे पैर में चोट लग गई है, उस पर थोड़ा सा गीला आटा रख दो।' रोटी बनानेवाले ने उसका कहना कर दिया। तब भेड़िया आटे की चक्कीवाले के पास गया और बोला, 'मेरे पंजों पर थोड़ा आटा छिड़क दो।' चक्की-वाला समझ गया कि भेड़िया किसी को धोखा देना चाहता है, इसलिए उसने इन्कार कर दिया; लेकिन तब भेड़िये ने

धमकी दी कि अगर मेरे पंजों पर आटा नहीं छिड़कोगे तो तुम्हें खा जाऊँगा, तो चक्कीवाला डर गया और उसने भेड़िये का कहना कर दिया।

अब भेड़िया फिर बकरी के दरवाजे पर पहुँचा और उसने पुकारा, 'बच्चो, मुझे अन्दर आने दो, मैं तुम्हारी माँ हूँ तुम सब के लिए उपहार लाई हूँ।' बच्चों ने जवाब दिया, 'हमें अपने पंजे दिखाओ, जिससे हम जान लें कि तुम हमारी माँ ही हो।' भेड़िये ने अपने पंजे खिड़की की चौखट पर रख दिये। बच्चों ने देखा कि वे सफेद थे, इसलिए उन्होंने दरवाज़ा खोल दिया। लेकिन देखा तो भेड़िया! प्राण जाने के भय से वे काँप उठे और इधर-उधर छिपने लगे। एक

चुपके से मेज़ के नीचे घुस गया, दूसरा बिस्तर के नीचे जा छिपा, तीसरा आलमारी पर चढ़ गया, चौथा दौड़ कर भण्डार घर में जा पहुँचा, पाँचवाँ चूल्हे के पीछे जा छिपा, छठा देगचे में पड़ रहा और सातवाँ दादा के उस बड़े घड़ियाल में घुस गया जो कि कोने में खड़ा था।

भेड़िये ने फौरन ही एक के बाद दूसरे को खोज निकाला और उन्हें खा गया। सिर्फ बकरी का वह बच्चा बच रहा जो कि दादा के बड़े घड़ियाल में घुस गया था। उसमें देखने का भेड़िये को ध्यान ही नहीं आया। यह समझ कर कि अब मैं सब को खा चुका हूँ, भेड़िया धीरे-धीरे भारी क़दम रखता हुआ पास के मैदान में जा पहुँचा और एक झाड़ी के नीचे गहरी नींद में पड़ रहा।

कुछ देर बाद बकरी जंगल से लौट आई। झोपड़ी के खुले दरवाज़े में से ही भयानक दृश्य उसके आगे आया। भीतर की हर चीज़ तितर-बितर थी। बिस्तर एक ओर खिचा पड़ा था, चीनी मिट्टी के बर्तन फर्श पर टुकड़े-टुकड़े हुए पड़े थे, और कोई बच्चा सामने न था। वह एक के बाद दूसरे बच्चे का नाम पुकारती गई, लेकिन कोई जवाब न मिला। अन्त को जब उसने सबसे छोटे बच्चे का नाम पुकारा तो दादा के घड़ियाल में से एक घुटी-घुटी-सी आवाज़ सुनाई दी—'ओ, प्यारी अम्मा, दरवाज़ा खोलो, मैं घड़ियाल

के भीतर हूँ।' बकरी ने घड़ियाल का दरवाज़ा खोला, सबसे छोटा बच्चा बाहर निकल आया और उसने आँखों में आँसू भर कर जो कुछ हुआ था सब कह सुनाया।

बेचारी बकरी अपने बच्चों के लिए बड़े ही दर्दभरे स्वर में रो उठी। कुछ देर बाद वह अपने सबसे छोटे बच्चे को लेकर पास के मैदान में गई और उस झाड़ी के पास पहुँची जिसके नीचे भेड़िया सोया पड़ा था। भेड़िया इतने ज़ोर के खुर्राटे भर रहा था कि उसकी आवाज़ से झाड़ी काँप उठती थी।

बकरी भेड़िये की ओर भय से देखती रही। एकाएक उसे दिखाई दिया कि भेड़िये का शरीर इस तरह हिल रहा है मानो उसके भीतर कोई जीवित प्राणी हो। बेचारी बकरी ने सोचा, 'हे भगवान्, इसके शरीर में मेरा कोई ऐसा बच्चा तो नहीं है, जिसे यह जिन्दा ही निगल गया हो।' यह विचार आते ही वह झट-पट अपनी झोपड़ी में गई और सुई-धागा और कतरनी लेकर लौट आई। उसने बड़ी होशियारी से भेड़िये का पेट चीरा। पहली कटान में बकरी के एक बच्चे ने बाहर झांका; और दूसरी कटान में वह कूद कर बाहर आ गया। फिर तो उसके चारों भाई-बहिन भी उछल कर बाहर आ गये। वे सभी बिल्कुल ठीक हालत में थे, क्योंकि भेड़िया उन्हें समूचा ही निगल गया था।

अब वे सब बहुत खुश थे। वे अपनी माँ को घेर कर नाचने-कूदने लगे। माँ ने कहा, 'दौड़ कर जाओ और सब लोग एक-एक बड़ा पत्थर का टुकड़ा ले आओ। उन पत्थरों को हम भेड़िये के पेट में रख देंगे, इसे जगायेंगे नहीं। बच्चे उछलते हुए गये और सात बड़े पत्थर उठा लाये। भेड़िया अब भी गहरी नींद में सो रहा था। बकरी ने उन पत्थरों को उठा कर उसके पेट में रख दिया, और अच्छी तरह उसकी सिलाई कर दी।

इसके तुरन्त बाद ही भेड़िया जग गया। उसने अंगड़ाई ली। पेट के भीतर के पत्थरों से वह अजीब बेचैनी महसूस करने लगा। वह अपनी प्यास बुझाने के लिए नदी की ओर चला। उसने सोचा कि बकरी के जो बच्चे उसने खा लिये हैं, उन्हीं से प्यास लग आई है। लेकिन जब वह दौड़ने लगा तो भारी पत्थर उसके पेट में खड़बड़ मचाने लगे। वह बोल उठा—

मेरे इस प्यारे शरीर में होती है खड़बड़ कैसे ?
बकरी के बच्चे इसमें, वे लगते हैं पत्थर जैसे !!

जब वह नदी पर पहुँच गया तो झुक कर पानी पीने लगा। उसके पेट के भीतर के पत्थर लुढ़क कर एक ओर सिमट आये और इस कारण भेड़िया टिका न रह सका। वह पानी में गिर कर डूब गया।

बकरी के बच्चों ने जब यह सब देखा तो वे दौड़ कर नदी के किनारे जा पहुँचे, और फिर खुशी के मारे अपनी माँ को घेर कर उछलने-कूदने लगे। वे कहते जाते थे, 'भेड़िया डूब गया, भेड़िया डूब गया!' इसके बाद वे सब अपनी झोपड़ी को लौट आये और उसे फिर से सजाने सँवारने लगे।
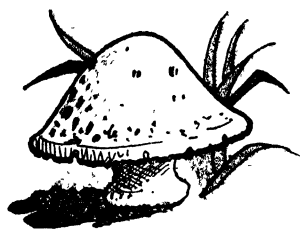
बहुत समय पहले एक राजकुमार था। घर पर रहते-रहते उसका जी घबरा उठा। वह जानता ही न था कि भय क्या है, इसलिए उसने बाहर जाने का सोचा। उसने सोचा इस तरह मुझे आज़ादी मिलेगी और मैं साहस के अद्भुत कार्य कर सकूँगा।

अपने माता-पिता से विदा लेकर वह चल दिया। जो भी रास्ता उसके सामने सीधा पड़ा उसी पर रात दिन चलता गया। उसे यह चिन्ता न थी कि वह कहाँ जा रहा है।

अन्त में वह एक बड़ क़िले पर पहुँच गया। वह क़िला एक भूत का घर था। राजकुमार कुछ थक गया था, इसलिए दरवाजे के सामने आराम करने को बैठ गया। कुछ देर बाद उसने चारों ओर देखा। दूर पर एक खुले स्थान में बहुत बड़े-बड़े गेंद रखे थे। वे भूत के खेलने के गेंद थे। राजकुमार को भी खेलने की इच्छा हुई। वह उन्हें उछालने लगा और खुशी में चिल्लाने लगा।

शोर सुन कर भूत ने खिड़की में से देखा । उसे आश्चर्य हुआ कि एक आदमी उतने भारी गेंदों से उतनी आसानी से कैसे खेल रहा है !

वह वहीं से चीखा, 'ओ कीड़े, तू मेरे गेंदों को क्यों छू रहा है ? तू इतना तगड़ा कैसे है ?'

राजकुमार ने घूम कर देखा कि आवाज़ कहाँ से आ रही है । ऊपर की ओर देखने पर उसे भूत दिखाई दिया । उसने उत्तर दिया, 'मूर्ख, दुनिया में तुम्हीं एक पहलवान नहीं हो । जो मेरे जी में आता है, सो करता हूँ ।'

भूत को क्रोध आ गया । वह नीचे उतर आया । राजकुमार अब भी गेंद उछालता रहा । भूत आश्चर्य के साथ देखता रहा, क्योंकि वे गेंदें आदमी से भी ज्यादा भारी थे ।

फिर वह चिल्लाया, 'आदमी के बच्चे, अगर तुम सचमुच उस छोटी जाति के हो तो मेरे लिए 'जीवन-वृक्ष' से एक सेब ला दो ।'

राजकुमार ने कहा, 'मैं क्यों ला दूँ ? क्या करोगे तुम उसका ?'

भूत बोला, 'मुझे अपने लिए नहीं चाहिए । मेरी पत्नी को चाहिए । सारी दुनिया में घूम कर मैंने उसकी तलाश की और नहीं पा सका ।'

राजकुमार ने गर्व से कहा, यह बात है तो मैं जल्दी ही तुम्हारे लिए वह फल ला दूँगा। मुझे कोई नहीं रोक सकता।'

भूत बोला, 'वह इतना आसान काम नहीं है। वह पेड़ एक बगीचे में है। बगीचे के चारों ओर लोहे का घेरा है। भयंकर जंगली जानवर उसकी रक्षा करते हैं, ताकि कोई उस पेड़ पर चढ़ न सके।

राजकुमार बोला, 'मुझे वे नहीं रोक सकते।'

भूत ने कहा, 'अच्छा, अगर तुम बगीचे में पहुँच जाओगे तो तुम्हें पेड़ पर लटकते हुए सुनहले सेब दिखाई देंगे। तो भी तुम उन्हें तोड़ नहीं सकोगे, क्योंकि पेड़ पर एक छल्ला है। फल तोड़ने के लिए उस छल्ले में हाथ डालना पड़ता है। आज तक यह कोई नहीं कर सका है।

राजकुमार ने उत्तर दिया, 'तब तो ऐसा करनेवाला मैं पहला आदमी होऊँगा।' भूत से विदा लेकर राजकुमार अपने रास्ते चल दिया। जंगलों, मैदानों, पहाड़ों और घाटियों में होता हुआ वह अद्भुत बगीचे के पास पहुँच गया। जैसा भूत ने बताया था, उसी तरह घेरे के बाहर जंगली जानवर पड़े सो रहे थे। लेकिन वे बहुत बूढ़े और अशक्त हो गये थे। राजकुमार उनके बीच से चुपके से गुज़र गया और वे हिले-डुले तक नहीं। वह उस जादू के बगीचे के परकोटे पर जल्दी से चढ़ गया। वह बीच में 'जीवन-वृक्ष' खड़ा

था, पत्तों के बीच सुनहले सेब चमक रहे थे ।
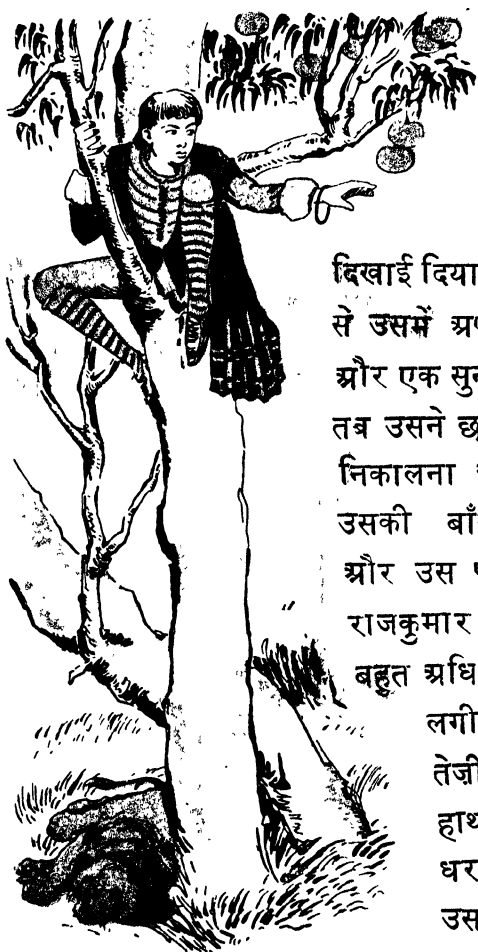
अपनी सफलता पर खूब खुश होकर राजकुमार एकदम पेड़ पर चढ़ गया । वहाँ उसे छल्ला दिखाई दिया । उसने बड़ी आसानी से उसमें अपना हाथ डाल दिया और एक सुन्दर फल तोड़ लिया । तब उसने छल्ले में से अपना हाथ निकालना चाहा । लेकिन वह उसकी बाँह पर खिसक आया और उस पर जकड़ गया । अब राजकुमार को अपने अन्दर बहुत अधिक शक्ति मालूम देने लगी । उसकी नसों में खून तेज़ी से दौड़ने लगा । हाथ में सेब लिये हुए वह धरती पर उतर आया । उसने चारों ओर देखा,

एक बड़ा-सा लोहे का फाटक दिखाई दिया। इसलिए अब वह परकोटे पर न चढ़ कर फाटक की ओर बढ़ा। उसने फाटक को झकझोरा। ज़ोर की आवाज़ के साथ वह खुल गया। उस आवाज़ से बाहर सोया हुआ शेर जाग उठा। राजकुमार आगे बढ़ता गया। शेर उठ कर उसके पीछे-पीछे चल दिया, मानो एक स्वामिभक्त बड़ा-सा कुत्ता हो।

राजकुमार भूत के पास लौट आया, और उससे बोला, 'यह है जीवन-वृक्ष का सेब। मेरा वायदा पूरा हो गया।'

भूत ने उसे झपट कर ले लिया और अपनी पत्नी के पास ले गया।

भूत की पत्नी भूत से बहुत छोटी थी। वह सुन्दर और चतुर भी थी। जब उसने देखा कि भूत की बाँह पर छल्ला नहीं है तो तुरन्त पूछा, 'तुम कब लाये यह सेब? तुम लाते तो तुम्हारी बाँह पर छल्ला होता।'

भूत ने सोचा कि राजकुमार ने जितनी आसानी से सेब दे दिया, उतनी ही आसानी से छल्ला भी दे देगा। इसलिए उसने राजकुमार के पास आकर छल्ला माँगा।

लेकिन राजकुमार ने नहीं दिया।

भूत बोला, 'जिसके पास सेब रहेगा, उसी के पास छल्ला भी रहेगा। अगर तुम नहीं दोगे तो मैं तुम से युद्ध करूँगा।'

राजकुमार युद्ध करने को पूरी तरह तैयार था। कुछ देर तक वे लोग लड़ते रहे। लेकिन छल्ले के प्रभाव से राजकुमार की शक्ति बढ़ गई थी। भूत ने देखा कि वह उसे नहीं जीत सकता। इसलिए उसने चालाकी से छल्ला लेने की बात सोची।

उसने कहा, 'अब हम लड़ते-लड़ते थक गये हैं। आओ नदी में नहा कर ठंडे हो लें।'

राजकुमार वह चालाकी नहीं समझ पाया। उसने अपने कपड़े उतार कर नदी के किनारे रख दिये। उनके साथ उसने छल्ला भी उतार दिया।

जैसे ही राजकुमार ने छल्ला उतारा, भूत ने बहुत खुश होकर उसे झपट लिया और तेज़ी से भागा।

लेकिन शेर सब देख रहा था। उसने भूत का पीछा किया। उसका हाथ पकड़ कर शेर ने छल्ला अपने मुँह में दबोच लिया और अपने स्वामी के पास लौट आया।

भूत ने भी हार न मानने का इरादा कर लिया था। वह लौट कर एक बड़े से पेड़ की आड़ में खड़ा हो गया। जब राजकुमार कपड़े पहन रहा था तभी वह उछल कर आगे आया और उसकी आँखें फोड़ दीं। इसके बाद उसने अन्धे राजकुमार को एक चट्टान के किनारे ले जाकर छोड़

दिया । उसने सोचा, यह दो-चार क़दम और आगे बढ़ा नहीं कि गिर पड़ेगा, और तब मैं आसानी से छल्ला ले लूँगा ।

लेकिन वह स्वामिभक्त शेर की बात भूल गया था । शेर बराबर अपने स्वामी के साथ रहा, उसके कपड़ों को अपने मुँह में पकड़े रहा, और जब वह गिरने लगा तो उसे सकुशल खींच कर बचा लिया । भूत नीचे गया, सोचता था कि राजकुमार के मुर्दा हाथ से छल्ला ले लूँगा । लेकिन उसने देखा कि राजकुमार तो भला-चंगा है ।

क्रोध में आकर वह बड़बड़ाया, 'इस पिद्दी को मैं खत्म कर के ही रहूँगा ।' और वह राजकुमार को एक और चट्टान पर ले गया । लेकिन वहाँ भी शेर पीछे-पीछे गया और फिर उसने अपने स्वामी को खतरे से बचा लिया । भूत पास ही खड़ा था । शेर ने उसे एक धक्का दे दिया और वह बहुत नीचे गिर कर मर गया ।

स्वामिभक्त शेर हँस का रूप धारण कर राजकुमार को एक नदी पर ले गया । उस नदी का जल बहुत स्वच्छ था । राजकुमार आराम करने लेट गया । और उसने नदी के पानी में से अपने आँखों पर छींटे दिये तथा प्यास भी बुझाई ।

जैसे ही पानी की बूँदें उसकी पलकों पर पड़ीं, उसे फिर दृष्टि मिल गई । सब से पहले उसकी नज़र एक छोटी-सी चिड़िया पर पड़ी जो यों ही इधर-उधर उड़ रही थी, मानो

वह भी अंधी हो। ज़रा देर बाद वह पानी में गिर पड़ी और पानी लगते ही उसकी आँखें ठीक हो गईं। राजकुमार ने समझ लिया कि ईश्वर ने एक बार फिर उसे सुरक्षित कर दिया है। इसलिए ईश्वर को धन्यवाद देकर वह फिर यात्रा को चल दिया और शेर भी उसके पीछे-पीछे हो लिया।

कुछ दिनों बाद वह एक ऐसे किले के पास पहुँचा जो एक जादूगर के क़ब्जे में था। दरवाज़े में एक नौजवान लड़की खड़ी थी। थी तो वह बहुत सुन्दर, लेकिन उसका रंग बिल्कुल काला था। राजकुमार को देख कर वह

चिल्लाई, 'अरे, मुझे इस दुष्ट जादूगर से बचाओ, इसने मुझे पर जादू कर दिया है।'

राजकुमार ने पूछा, 'तुम्हें छुड़ाने के लिए मैं क्या कर सकता हूँ?'

लड़की ने उत्तर दिया, 'तुम्हें इस किले के आँगन में तीन दिन तक रहना पड़ेगा। लेकिन तुम्हें डरना बिल्कुल नहीं होगा। अगर तुमने डर जरा भी नहीं दिखाया और बिल्कुल चुपचाप रहे, तो मैं यहाँ से छूट जाऊँगी और तुम भी एकदम सुरक्षित रहोगे।'

राजकुमार ने गर्व के साथ कहा, 'मैं किसी से नहीं डरता ईश्वर की सहायता से मैं जी भर प्रयास करूँगा।'

यह कह कर वह किले के भीतर चला गया। जब खूब अँधेरा हो गया तो वह बड़े कमरे में बैठ कर आनेवाली विपत्ति की प्रतीक्षा करने लगा।

बारह की घंटी बजने तक सब कुछ ठीक रहा। उसके बाद बड़े शोर-गुल के साथ चीखते-चिल्लाते बहुत-से प्रेत इधर उधर से आ धमके। पहले तो उन्होंने राजकुमार की ओर ध्यान ही न दिया, और बड़े कमरे के बीचो बीच बैठ गये। फिर आग जला कर ताश खेलने लगे।

जल्दी ही उनमें से हारा हुआ एक प्रेत बोला, 'इस कमरे में कोई अजनबी है, उसी के कारण मैं हारा हूँ।' और जिस

ग्रिम की

कोने में राजकुमार बैठा था उस ओर देख कर वह बोला, 'इधर आओ !'

शोरगुल और चीख-पुकार के बीच भी राजकुमार शान्त रहा था। लेकिन अब तमाम प्रेत चारों तरफ से उसके ऊपर चढ़ आये। यहाँ तक कि उसे उनसे बचना मुश्किल हो गया। तो भी उसकी चीख नहीं निकली। प्रेतों ने उसे कष्ट देने के सभी प्रयत्न किये। अन्त में भोर हो जाने पर वे अदृश्य हो गये।

राजकुमार इतना थक गया था कि चल-फिर भी न सकता था, इसलिए वह कुछ देर लेटा रहा। सूरज निकलते ही वह काली लड़की आ पहुँची। उसके हाथ में एक सुराही थी जिसमें अमृत भरा था। लड़की ने राजकुमार का मुँह धोया। राजकुमार पहले-सा ही स्वस्थ और बलशाली हो कर उठ खड़ा हुआ।

लड़की ने कहा, 'यह सिर्फ पहली रात थी। इसे तुमने सह लिया। लेकिन हाय, अभी दो रातें और बितानी हैं।'

लड़की जाने लगी, तो राजकुमार ने ध्यान दिया कि उसके पैर गोरे हो गये थे।

दूसरी रात को भी बारह बजे प्रेत आये और फिर राजकुमार पर हमला किया। लेकिन वह शान्त रहा। सुबह होते ही प्रेतों को लौट जाना पड़ा।

लड़की फिर सुराही लेकर आई, और राजकुमार में फिर शक्ति आ गई। वह जाने लगी तो राजकुमार ने देखा कि उँगलियों के सिरों तक उसके हाथ गोरे हो गये हैं।

राजकुमार जानता था कि अब बस एक रात और सहने को रह गई है, लेकिन वह सबसे कठिन होगी।

जब प्रेतों के दल ने देखा कि राजकुमार अब भी जीवित है तो वे क्रोधपूर्वक चीख-चीख कर उसे चिढ़ाने लगे। वे बार-बार उस पर आघात करने लगे। उन्होंने समझ लिया कि अब यह नहीं बचेगा। अन्त को, उन्हों विवश होकर उसे छोड़ जाना पड़ा। वह बेचारा बेदम होकर पड़ रहा। उसमें इतनी भी शक्ति न रही कि एक उँगली तक उठा सके।

दर्द के मारे वह अन्धा-सा हो रहा था। काली लड़की ने आकर फिर उसका मुँह अमृत-जल से धो दिया।

राजकुमार की शक्ति फिर लौट आई। उसके घावों का दर्द दूर हो गया और उसने आँखें खोलीं।

लड़की उसके पास ही खड़ी थी। अब वह भोर जैसी गोरी थी। उसके बाल धूप की तरह सुनहले थे और आँखें आसमान की तरह नीली थीं।

राजकुमार चकित होकर उसकी ओर देखने लगा। वह धीरे से मुस्कराई और कहा—'राजकुमार आओ! दरवाज़े के ऊपर तीन बार अपनी तलवार घुमाओ। जो

ग्रिम की

कुछ भी इस किले के भीतर है, सबके बन्धन खुल जायेंगे।'

राजकुमार ने वैसा ही किया। जैसे ही उसने अपनी तलवार घुमाई, किला और उसके भीतर की सब चीज़ें जादू के बन्धन से मुक्त हो गईं।

फिर वह लड़की राजकुमारी की वेष-भूषा में उसके सामने आई। आस-पास के कमरों से उसके नौकर-चाकर भी आ गये। वे भी जादू में फंसे पड़े थे। एक बड़ा भोज हुआ, उसमें राजकुमारी राजकुमार के साथ रही। इसके बाद बड़ी धूमधाम से उन दोनों का विवाह हुआ और राजकुमारी को ले कर राजकुमार अपने देश लौट गया।

किसी बड़े जंगल के पास एक निर्धन लकड़हारा रहता था। उसकी पहली पत्नी से दो बच्चे थे। एक लड़की थी जिसका नाम ग्रेटेल था, और एक लड़का था जिसका नाम हैन्सेल था।

पहली पत्नी की मृत्यु हो जाने पर लकड़हारे ने दूसरा विवाह कर लिया था। वह इतना निर्धन था कि उसके पास भोजन का भी ठिकाना न था। एक बार देश में अकाल पड़ा। तब तो उसके लिए इतना भी कमाना कठिन हो गया कि उसका परिवार रूखी-सूखी रोटी भी खा सके।

एक दिन शाम को वह बिस्तर पर लेट कर अपने दुःखों के बारे में सोच रहा था। उसने अपनी पत्नी से कहा, 'हम लोगों का क्या हाल होगा? हमारे खाने का ठिकाना नहीं, बच्चों को क्या खिलाएँ!'

उसकी पत्नी ने उत्तर दिया—'क्यों न हम उन्हें सुबह तड़के ही जंगल में ले जाएँ, फिर उन्हें थोड़ी-सी रोटी देकर

तापने के लिए आग जला दें। उन्हें वहीं छोड़ कर हम काम पर जा सकते हैं। घर का रास्ता तो वे पा नहीं सकेंगे, इसलिए वहीं रह जाएँगे, और इस तरह हमें उनसे छुटकारा मिल जाएगा।

पति ने कहा—'मुझसे यह न होगा। तुम भी किस मन से उन्हें जंगल में छोड़ सकती हो ? वहाँ तो जंगली जानवर आकर उन्हें तुरन्त ही मार डालेंगे।'

पत्नी बोली—'मूर्ख हो तुम ! ऐसा न करने पर हम सभी भूखे मरेंगे। सबके लिए कफन तैयार रखो।'

पत्नी ने उसे तब तक चैन न लेने दिया, जब तक कि उससे अपनी बात न मनवा ली। तो भी वह दुःखपूर्वक कहता रहा कि मैं अपने बच्चों को कैसे छोड़ सकूँगा !

बच्चों को उस समय इतनी तेज भूख लगी थी कि वे सो भी न सके थे। अपनी सौतेली माँ की योजना को उन्होंने सुन लिया।

ग्रेटेल ने रोते-रोते अपने भाई हैन्सेल से पूछा—"अब हम क्या करें ?"

हैन्सेल ने जवाब दिया—'रोओ मत, मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा।"

रात में जब माँ और बाप सो रहे थे तो हैन्सेल ने उठकर कपड़े पहने और चुपचाप पिछले दरवाजे से बाहर निकल गया।

उज्ज्वल चाँदनी में, सड़क पर पड़े छोटे-छोटे पत्थर के टुकड़े चाँदी की तरह चमक रहे थे। हैन्सेल ने उनसे अपनी जेबें भर ली। ग्रेटेल के पास लौट कर उसने कहा, 'डरो मत, बहन! सो जाओ। ईश्वर हमारी रक्षा करेगा।' यह कह कर वह भी अपने बिस्तर में घुस गया।

सबेरा होने पर माँ ने बच्चों को जगाया और कहा, 'अरे आलसियो, चलो जंगल में लकड़ियाँ बीननी हैं।' फिर उन्हें एक-एक रोटी का टुकड़ा देकर बोली, 'ये तुम्हारे खाने के लिए हैं, लेकिन इन्हें जल्दी ही मत खा जाना, बस इतना ही बचा है।'

ग्रेटेल ने रोटी अपनी जेब में रख ली, क्योंकि उसे मालूम था कि हैन्सेल की जेब में पत्थर के टुकड़े भरे हैं। इसके बाद वे लोग आगे बढ़े।

कुछ ही दूर जाने पर हैन्सेल रुक कर खड़ा हो गया, और पीछे की ओर मुड़ कर मकान को देखने लगा।

जब उसने कई बार ऐसा किया, तो उसके पिता ने पूछा—'क्या देख रहा है, हैन्सेल? पीछे क्यों रह जाता है, कुछ भूल आया है क्या?'

हैन्सेल ने बताया कि वह छत पर बैठी अपनी सफेद बिल्ली से विदा ले रहा था।

माँ ने डाँटा, 'मूर्ख, वह बिल्ली नहीं है, वह चिमनी का ऊपरी भाग है जो धूप में चमक रहा है।' मगर हैन्सेल तो वास्तव में बिल्ली को देख ही नहीं रहा था, हर बार मुड़ कर उसने सड़क पर एक-एक पत्थर का टुकड़ा गिराया था।

जब वे लोग घने जंगल में पहुँच गये, तो पिता ने बच्चों से लकड़ियाँ बटोर कर आग जलाने को कहा। बच्चे लकड़ियाँ बटोर लाये, तो पिता ने आग सुलगा दी।

आग में लपटें उठने लगीं तो माँ ने कहा, 'तुम लोग यहीं आग के पास रहना। हम जंगल में लकड़ी काटेंगे। फिर हम आकर तुम्हें साथ ले लेंगे।'

दोपहर तक हैन्सेल और ग्रेटेल आग के पास रहे। उसके बाद उन्होंने अपनी रोटी खाई। बार-बार कुल्हाड़ी चलनेकी-सी आवाज़ आ रही थी, इसलिए उन्होंने समझा कि पिता कहीं पास ही हैं। लेकिन वह आवाज़ कुल्हाड़ी की नहीं थी। जाते समय पिता ने पेड़ की एक शाख को इस तरह बाँध दिया था कि वह हवा में हिल कर आवाज़ कर रही थी। बहुत देर तक वे लोग प्रतीक्षा करते रहे। अन्त को जब नहीं रहा गया तो वे सो गये।

जब वे जागे तो खूब अँधेरा हो गया था। ग्रटेल रोकर कहने लगी, 'अब घर कैसे जाएँ?' हैन्सेल ने उसे धीरज

बँधा कर कहा, 'चाँद निकल आने दो, तब हम लोग रास्ता पा जायेंगे ।'

थोड़ी देर बाद चाँद उदित हुआ । ग्रेटेल का हाथ पकड़ कर हैन्सेल चारों ओर देखने लगा । अन्त को उसे रास्ता मिल गया, जिस पर चाँदी की तरह चमकते पत्थर के टुकड़े पड़े थे ।

रातभर चल कर वे लोग सुबह तड़के ही अपने पिता की कुटिया पर पहुँच गये । दरवाज़े को थपथपाया तो उनकी सौतेली माँ निकल आई और बोली, 'अरे, शैतान बच्चो ! अब तक तुम जंगल में क्या करते रहे ? हमने तो समझा कि तुम खो गये ।' लेकिन उनके पिता को खुशी हुई । उन्हें मरने को छोड़ देने पर उसे भारी दुःख हुआ था । कुछ दिनों बाद फिर देश में बड़ा अकाल पड़ा । एक दिन बच्चों ने फिर अपनी सौतेली माँ को पितासे कहते सुना—'सिर्फ आधी रोटी बची है । अब तो बच्चों से छुटकारा मिलना ही चाहिए । इस बार हम उन्हें जंगल में बहुत दूर ले जाकर छोड़ें, ताकि वे लौट कर आ ही नहीं सकें । इस बार तो हम जीवित रह पाएँ, यही बहुत है ।'

पिता का मन बैठ गया, उसने कहा, 'नहीं, जब तक रोटी का एक भी टुकड़ा रहे, हमें बच्चों के साथ बाँट कर खाना चाहिए ।' मगर पत्नी ने उसको एक न सुनी और

उसे बुरा-भला कहने लगी । अन्त को उसे पत्नी की बात माननी पड़ी ।

बच्चों ने इस बार भी अपने माँ-बाप की बात-चीत छिप कर सुन ली । उन लोगों के सो जाने पर हैन्सेल उठकर वह सड़क पर से कुछ कंकड़ बटोर लेना चाहता था ; लेकिन वह ऐसा न कर सका, क्योंकि दरवाजे का ताला लगा था । पहले की ही तरह उसने ग्रेटेल को ढारस बँधा कर कहा, 'सो जाओ, ईश्वर हमारी रक्षा करेगा ।'

सुबह को सौतेली माँ ने उन्हें जगा कर एक-एक रोटी का टुकड़ा दिया जो पहलेवाले से भी छोटा था ।

जैसे वे लोग आगे बढ़े, हैन्सेल ने अपना टुकड़ा जेब में रख लिया । उसमें से नोंच-नोंच कर वह रास्ते भर छोटे-छोटे टुकड़े गिराता गया ।

पिता ने पूछा, 'बार-बार तुम रुक कर क्यों खड़े हो जाते हो, हैन्सेल ?'

हैन्सेल ने जवाब दिया, 'मैं अपने छोटे से सफेद कबूतर को देख रहा हूँ । वह छत पर से मुझे विदाई दे रहा है ।'

माँ बोली, 'अरे मूर्ख, वह कबूतर नहीं है तेरा, चिमनी के ऊपर धूप पड़ रही है ।'

हैन्सेल ने कोई उत्तर नहीं दिया । बस, चलते-चलते वह रोटी के टुकड़े डालता रहा ।

सौतेली माँ उन बच्चों को जंगल में बहुत दूर ले गई। उन लोगों ने जब बहुत-सी आग जला ली तो वह बोली, 'यहीं रह कर थोड़ी देर सोओ। हम पास ही पेड़ काटने जा रहे हैं। आकर तुम्हें साथ ले लेंगे।'

दोपहर को ग्रेटेल ने अपनी रोटी में से आधी हैन्सेल को दे दी। उसे खाकर वे दोनों सो गये। रात हो आई और उन्हें कोई लेने नहीं आया। खूब अँधेरा हो गया तो वे जगे।

हैन्सेल ने फिर अपनी बहन को धीरज बँधाते हुए कहा, 'चाँद निकलने तक रुको ग्रेटेल। फिर तो हमें रास्ते पर पड़े हुए रोटी के टुकड़े दिखाई दे ही जाएँगे।'

कुछ देर बाद चाँद निकल आया। बच्चे रोटी के टुकड़े ढूँढ़ने लगे। लेकिन उन्हें तो जंगल की चिड़ियाँ खा गई थीं। सारी रात और सारा दिन वे चलते रहे तो भी उन्हें जंगल का छोर नहीं मिला। उन्हें भूख और प्यास भी लग आई। दो-चार जंगली फलों के सिवा वहाँ कुछ न था। अन्त को इतने थक गये कि आगे न बढ़ सके और एक पेड़ के नीचे पड़ कर सो रहा।

तीसरे दिन वे जंगल में बहुत दूर निकल आये थे। हैन्सेल समझ रहा था कि अगर जल्दी ही घर का रास्ता न मिला तो वे भूख से मर जाएँगे। दोपहर के लगभग उन्हें

एक पेड़ पर बैठी हुई एक विचित्र चिड़िया दिखाई दी। वह इतना मस्त होकर गा रही थी कि ये बच्चे थोड़ी देर को उसका गाना सुनने को रुक गये। एकाएक उसने गाना बन्द कर दिया और पर फड़फड़ा कर उड़ गई। बच्चों ने उसका पीछा किया। वह एक छोटे से मकान की छत पर बैठ गई। पास पहुँच कर बच्चों ने देखा कि वह मकान रोटियों और पूरियों का बना था। उसमें चीनी की खिड़कियाँ थीं।

हैन्सेल बोला, 'आओ, इसमें चलकर भरपेट खायें। मैं इसकी छत खाऊँगा और तुम खिड़की खाना। खिड़की बहुत मीठी होगी।'

हैन्सेल ने उचक कर छत तोड़ ली और ग्रेटेल ने खिड़की को कुतर लिया।

जब वे खा रहे थे तो भीतर से आवाज़ आई—'अरे कौन खड़खड़ा रहा है?' बच्चों ने कह दिया, 'हवा है, हवा!' और खाते रहे।

हैन्सेल ने छत का एक टुकड़ा और लिया, और ग्रेटेल को खिड़की में से दिया। बैठ कर वे खाने का आनन्द ले ही रहे थे कि एकाएक दरवाज़ा खुला और एक नाटी बूढ़ी औरत बैसाखी के सहारे चलती हुई आ पहुँची।

बच्चे उससे इतना डर गये कि उन्होंने खाना छोड़ दिया। बूढ़ी औरत ने दया दिखाते हुए सिर हिला कर कहा, 'प्यारे बच्चो, तुम यहाँ कैसे आये ? आओ, मेरे साथ रहो, डरते क्यों हो ?' वह दोनों का हाथ पकड़ कर अपने छोटे से घर में ले गई। वहाँ खूब से दूध, मिठाई और फल उनके खाने को रखे थे। दूसरे कमरे में दो छोटे-छोटे सफेद बिस्तर थे। बच्चे उन पर लेट गये, मानो स्वर्ग में आ गये हों।

बच्चों को वह बूढ़ी औरत बड़ी दयालु जान पड़ी। लेकिन वे नहीं जानते थे कि वह वास्तव में एक चुड़ैल थी। रोटी और मिठाई का मकान बना कर वह बच्चों को लल-चाती थी और इस तरह उन्हें अपने चंगुल में फाँस लेती थी। अपने क़ब्जे में करके वह उन्हें मार कर खा जाती थी और खूब आनन्द मनाती थी।

चुड़ैलों की आँखें लाल होती हैं, लेकिन वे दिन में अधिक नहीं देख सकतीं। हाँ, उनकी सूँघने की शक्ति पशुओं की तरह बहुत तेज़ होती है। पास आते हुए बच्चों को वे उसी से पहचान लेती हैं।

जब हैन्सेल और ग्रेटेल उस चुड़ैल के मकान के पास पहुँच रहे थे तो वह खूब खुश हुई थी। उसने समझ लिया था, कि ये दोनों मुझसे बच कर नहीं जा सकते।

सुबह जब वे चुपचाप सो रहे थे तो उनके छोटे-छोटे गुलाब से मुखड़ों को देख कर उसने मन ही मन कहा, 'अच्छा भोजन रहेगा!' उसने हैन्सेल को झकझोर कर उठाया और एक जालीदार कठघरे में बन्द कर दिया। वह बेचारा चीखता और छटपटाता रहा।

इसके बाद उसने ग्रेटेल को जगाया और डाँट कर कहा, 'उठ आलसिन, जा थोड़ा पानी ले आ ! अपने भाई के लिए नाश्ता बना कर दे । मोटा हो जाये तो मैं उसे खाऊँगी ।" ग्रेटेल बेचारी बहुत रोयी, मगर बेकार था । उसे चुड़ैल की आज्ञा का पालन करना पड़ा । हैन्सेल के लिए बढ़िया नाश्ता बना और ग्रेटेल को सिर्फ एक माँस का टुकड़ा दिया गया । हर रोज वह बूढ़ी चुड़ैल हैन्सेल के कठघरे के पास आकर कहती थी—'अपनी उँगली निकाल कर दिखाओ, मैं जान जाऊँ कि तुम कितने मोटे हुए हो । लेकिन हैन्सेल एक हड्डी का टुकड़ा बाहर निकाल कर दिखा देता था । चुड़ैल समझती थी कि यही उस की उँगली है ।

चुड़ैल को आश्चर्य हो रहा था कि वह मोटा क्यों नहीं होता ? एक महीना बीत जाने पर उसका धैर्य जाता रहा और उसने इरादा कर लिया कि अब ज्यादा नहीं रुकेगी ।

वह क्रोध में चिल्लाई, 'ग्रेटेल, जल्दी कर, थोड़ा पानी ले आ । वह मोटा रहे या पतला, आज तो मैं उसे पका कर खा ही जाऊँगी ।'

बेचारे ग्रेटेल को रोते-रोते पानी लाना पड़ा, उसके आँसू झर रहे थे । उसने ईश्वर से विनय की, 'भगवान ! हमें बचाओ । इन्से तो अच्छा था कि हमें जंगल के जानवर ही खा जाते, हम दोनों साथ-साथ तो मरते ।'

चुड़ैल ने ग्रेटेल को डाँटा कि वह आँसू क्यों बहा रही है । उस बेचारी को जबरदस्ती पानी भरना पड़ा श्रौर श्राग जलानी पड़ी ।

चुड़ैल ने कहा, 'भट्टी गरम हो गई है, पहले रोटी सेंक लें ।' वह ग्रेटेल को खींच कर भट्टी के पास ले श्राई, उसके भीतर श्राग तेजी से जल रही थी । उसने कहा, 'भीतर जाकर देखो कि रोटी सेंकने योग्य गर्मी है या नहीं ।' चुड़ैल सोच रही थी कि ग्रेटेल को भीतर करके भट्टी में ढकेल देगी श्रौर उसको हैन्सेल के साथ पका कर खा डालेगी । ग्रेटेल जानती थी कि उसके मन में क्या है । इसलिए उसने कहा कि मुझे भट्टी में घुसना नहीं श्राता ।

चुड़ैल ने चीख कर कहा, 'मूर्ख, कितनी बड़ी तो भट्टी है, देख मैं खुद इसमें जाती हूँ ।' यह कह कर वह भट्टी के पास गई श्रौर उसमें श्रपना सिर डाल दिया । ग्रेटेल ने श्रपनी पूरी ताक़त से उस चुड़ैल को एकदम भट्टी में ढकेल दिया, श्रौर फिर उसे कस कर बन्द कर दिया ।

चुड़ैल बड़े भयानक रूप से चीखी, लेकिन ग्रेटेल भाग खड़ी हुई श्रौर उसे जल कर मर जाने दिया । हैन्सेल का कठघरा खोल कर वह खुशी से चिल्लाई, 'हैन्सेल, हैन्सेल ! श्रब हम सुरक्षित हैं । चुड़ैल जल कर राख हो गई ।'

हैन्सेल कठघरे में से इस तरह फुदक कर खड़ा हो गया, मानो चिड़िया को पिंजड़े से छोड़ दिया गया हो। वे दोनों आपस में प्यार से मिले। उन्होंने जान लिया कि अब डर की कोई बात नहीं है। दौड़ते-दौड़ते वे बुढ़िया के घर में गये। वहाँ उन्हें सोने और जवाहरातों से भरा एक सन्दूक मिला।

हैन्सेल बोला, 'पत्थर के टुकड़ों से ये अच्छे हैं।' और उसने उन्हें ठूँस-ठूँस कर अपनी जेबों में भर लिया। ग्रेटेल ने कहा, 'मैं भी लूँगी।' और उसने अपने कपड़े में बहुत से बाँध लिये।

हैन्सेल ने कहा, 'अब चलें और इस जादू के जंगल के बाहर का रास्ता खोजें।' दो घण्टे तक चलते रहने के बाद एक स्थान पर नदी मिली।

हैन्सेल ने कहा, 'इसे कैसे पार करें। पुल तो कहीं है नहीं।'

ग्रेटेल बोली, 'कोई नाव भी नहीं है। हाँ, एक सफेद हंस तैर रहा है। इससे पार ले जाने को कहती हूँ।' हंस से उसने कहा—

श्वेत हंस, ओ श्वेत हंस!
हम हैन्सेल-ग्रेटेल खड़े यहाँ।
नहीं यहाँ पुल नहीं नाव है,
पहुँचा दो उस पार वहाँ।

हंस तैर कर उनके पास तक आ गया। हैन्सेल उसकी पीठ पर बैठ गया। उसने ग्रेटेल से पीछे बैठ जाने को कहा। लेकिन वह बोली, 'हंस हम दोनों को एक साथ नहीं ले जा सकता, एक-एक करके जायें। पर हंस ने दोनों को ही अपनी पीठ पर बैठ जाने को कहा। पार पहुँच कर उन दोनों ने देखा कि जंगल जाना-पहचाना है। जैसे-जैसे वे बढ़ते गये, जंगल और भी पहचाना हुआ लगने लगा। अन्त को शीघ्र ही उन्हें अपने पिता की कुटिया दिखाई दी।

फिर तो वे तेज़ी से दौड़ पड़े। दरवाज़े पर पहुँच कर वे अपने पिता की गोद में जा पड़े। जब से वे बच्चे अलग हुए थे, पिता को एक क्षण भी चैन न पड़ा था। इसी बीच में उनकी सौतेली माँ मर चुकी थी।

ग्रेटेल ने अपना कपड़ा खोला। सोना और जवाहरात धरती पर बिखर गये। हैन्सेल ने उन्हें मुटठी भर-भर के जेब में से निकाला। इस तरह उनके कष्ट दूर हुए।
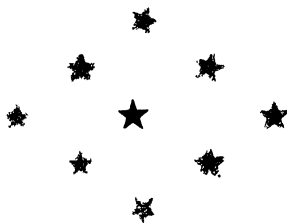
एक आदमी के तीन बेटे थे। एक बार उसने तीनों को अपने पास बुलाया। एक को मुर्गा, दूसरे को हंसिया और तीसरे को बिल्ली देकर उसने कहा, 'अब मैं बूढ़ा हो चला हूँ, न जाने कब मौत आ जाए; मरने से पहले मैं तुम्हारे जीवन-निर्वाह का प्रबन्ध कर जाना चाहता हूँ। इस समय जो मैं तुम्हें दे रहा हूँ, वह कुछ मूल्यवान नहीं है, लेकिन तुम लोगों का काम है कि मेरी दी हुई इन चीज़ों से पूरा लाभ उठाओ। तुम्हें सिर्फ यह क़रना है कि किसी ऐसी जगह का पता लगा लो जहाँ जो चीज तुम्हारे पास है, उसे कोई जानता भी न हो। बस, इसी से तुम्हारी किस्मत खुल जायेगी।

पिता की मृत्यु के बाद सबसे बड़ा बेटा अपना मुर्गा लेकर निकल पड़ा। जहाँ कहीं भी वह जाता, दूर से ही किसी न किसी छत पर मुर्गा बैठा दिखाई देता। हर गाँव में बहुत से मुर्गे बाँग देते सुनाई देते। इसलिए उसके इस

मुर्गे में नयापन कुछ भी न रह जाता । लड़के की किस्मत खुलने का कोई रास्ता न दिखाई दिया । आखिरकार वह एक ऐसे द्वीप में पहुँचा, जहाँ के निवासियों ने मुर्गे की बाँग कभी न सुनी थी, इसीलिए वे लोग समय का हिसाब रखना भी नहीं जानते थे । वे लोग सुबह और शाम का होना तो देखते थे, लेकिन अगर कभी रात को जागना पड़ जाए तो उन्हें पता नहीं लग पाता था कि अब रात बीतने में कितना समय है ? लड़के ने उन लोगों से कहा, 'देखो ! यह कैसा बढ़िया पक्षी है, बिल्कुल सरदार समझो । इसके सिर पर चमकदार लाल ताज है न ! रात भर में तीन बार

अपने पैरों पर उचक कर यह बाँग देता है, तीसरी बार जब यह बाँग दे तो समझ लो कि सूरज उगनेवाला है। इसकी खूबियाँ इतनी ही नहीं हैं। कभी-कभी यह दिन में भी ज़ोर से चीख उठता है। ऐसा करके यह इस बात से सावधान कर देता है कि मौसम खराब होनेवाला है।'

इस बात पर उस द्वीप के निवासियों की खुशी का ठिकाना न रहा। उन लोगोंने सारी रात जाग कर देखा कि मुर्गा कितनी शान से समय बताता है—दो बजे... चार बजे... फिर छः बजे! उन लोगों ने इस लड़के से पूछा, 'भाई, बेचोगे अपना मुर्गा? कितना दाम लोगे?' लड़के ने जवाब दिया, 'एक गधे के बोझ बराबर सोना लूँगा।' वे सभी एक साथ कह उठे, 'ऐसे बढ़िया पक्षी के लिए तो यह कीमत कुछ ज्यादा नहीं!' उन्होंने लड़के को मुँहमाँगी कीमत दे दी।

जब वह घर लौट कर आया तो उसके भाइयों को बड़ा अचम्भा हुआ। मंझला भाई बोला, 'अब मैं जाता हूँ, देखूँ, मेरे हंसिये की भी इतनी ही कीमत मिलती है कि नहीं।' लेकिन जहाँ-जहाँ भी वह गया, किसानों के कन्धों पर वैसे ही हंसिये रखे पाये। आखिरकार वह भी एक ऐसे द्वीप में जा पहुँचा, जहाँ के लोगों ने हंसिये का कभी नाम तक न सुना था। जब फसल पक कर तैयार हो जाती, तो वे लोग खेतों में जाकर उसे खींच कर उखाड़ने लगते। यह काम

कठिन तो होता ही था, बहुत-सी फसल भी इसमें खराब जाती। इस बार लड़के ने पहुँच कर अपने हंसिये से उनकी फसल काट कर दिखानी शुरू कर दी। इतनी तेज़ी से फसल को कटते देख वहाँ के लोग अचम्भे से आँख फाड़ कर देखते रह गये। ऐसी अद्भुत चीज़ के लिए वे उसे उसका मुँह-माँगा मोल देने को तैयार हो उठे। लेकिन लड़के ने सिर्फ सोने से लदा एक घोड़ा ही स्वीकार किया।

अब तीसरे भाई की प्रबल इच्छा हुई कि मैं भी जा कर देखूँ कि मेरी बिल्ली की क्या क़ीमत मिल सकती है? इसलिए वह भी निकल पड़ा। पहले तो उसके साथ भी

वही बात हुई जो दोनों बड़े भाइयों के साथ हुई थी। जहाँ कहीं वह जाता, असफलता मिलती। हर कहीं बिल्लियों की इतनी अधिकता थी कि बहुत-सी तो पैदा होते ही पानी में डुबा कर मार डाली जाती थीं। अन्त को वह भी एक ऐसे द्वीप में पहुँच गया जहाँ किसी ने बिल्ली कभी देखी ही न थी; वहाँ चूहे भी इतने ज्यादा थे कि घर में कोई आदमी हो या न हो, सारी चीज़ों पर नाचते फिरते थे। लोग उनसे तंग आकर अपनी मुसीबतों का रोना रोते। राजा भी
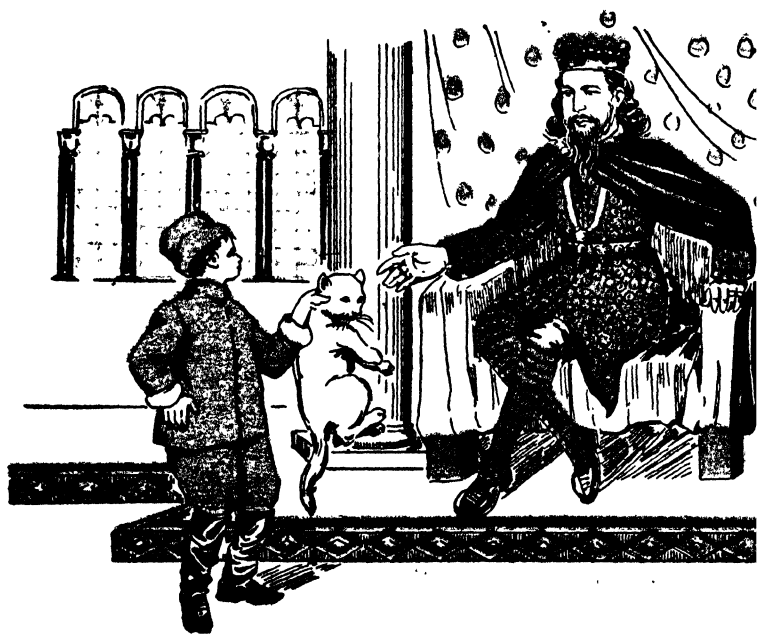
परेशान था कि महल में चूहों से कैसे छुटकारा पाया जाय। हर तरफ चूहे धावा करते, और जिस चीज़ पर भी उनके दाँतों का बस चलता, उसे काट फेंकते। बिल्ली के लिए इससे अच्छी जगह और कौन होती! बिल्ली ने चूहों का पीछा करना शुरू किया, और पलक मारते दो कमरे साफ कर डाले। लोगों ने जाकर राजा से कहा कि जनता की भलाई के लिए, ऐसे जानवर को तो किसी भी क़ीमत पर खरीद लीजिये। राजा ने लड़के को मुँहमाँगी कीमत खुशी से दे डाली। वह क़ीमत थी—सोने और जवाहरातों से लदा एक ऊँट। इस तरह, जब छोटा भाई घर लौटा तो उसके पास दोनों बड़े भाइयों से ज्यादा दौलत थी।

बिल्ली राजमहल में चूहों पर हाथ साफ करती रही, कुछ ही देर में चूहे घट कर बहुत कम रह गये। खूब पेट भर कर खा लेने और थक जाने पर बिल्ली को ज़ोर की प्यास लगी, इसलिए वह एक जगह रुक गई और सिर उठा कर 'म्याऊँ, म्याऊँ' करने लगी। उसकी यह अजीब आवाज़ सुन कर, राजा के साथ क़िले के तमाम आदमी वहाँ आकर जमा हो गये। बहुत से तो मारे डर के चीखते हुए किले से भाग ही गये। लेकिन राजा ने धैर्य रख कर यह विचार करने के लिए एक सभा बुलाई कि अब क्या किया जाये? अन्त में निर्णय हुआ कि बिल्ली के पास एक दूत भेज कर

कहलाया जाय कि जल्दी से जल्दी महल छोड़ कर चली जाओ, नहीं तो तुम्हें जबरदस्ती निकाल दिया जायेगा। सभा में लोगों ने कहा, 'चूहों के साथ तो हम रह भी लेंगे, क्योंकि हम इसके आदी हो चुके हैं, लेकिन अपनी जान का खतरा मोल लेकर हम उनसे छुटकारा पायें, यह नहीं हो सकता।'

एक दूत ने जाकर बिल्ली से पूछा, कि तुम्हें महल छोड़ कर जाना मंजूर है या नहीं ? लेकिन बिल्ली की प्यास तो बराबर बढ़ती जा रही थी, वह जवाब क्या देती, बस 'म्याऊँ म्याऊँ' कर उठी। दूत ने समझा, बिल्ली कह रही है, 'नहीं, नहीं' और उसने जाकर राजा से भी यही कह दिया। इस पर सभासद बोल उठे, 'तब तो उसे जबरदस्ती निकालना होगा।'

महल के चारों तरफ तोपें लगा कर गोले बरसाये जाने लगे। आग की लपटें जब उस कमरे में पहुँची, जिसमें बिल्ली थी, तो बिल्ली उछल कर खिड़की के रास्ते भाग गई। लेकिन घेरा डाले जो फौजी खड़े थे, उन्हें वह दिखाई न दी। वे लोग गोले बरसाते रहे--यहाँ तक कि तमाम महल ढह कर खाक हो गया।

पन्नालाल और किशोरी

पन्नालाल नाम का एक आदमी था। उसकी पत्नी का नाम था किशोरी। उनकी शादी को थोड़ा ही समय हुआ था।

एक दिन पन्नालाल बोला, 'किशोरी, मैं खेत में काम करने जा रहा हूँ। लौटने पर मुझे भूख लग आयेगी। इस-लिए मेरे वास्ते कोई चीज़ बढ़िया-सी पका कर रखना, और अच्छी-सी जौ की शराब भी देना।' किशोरी ने जवाब दिया, 'बहुत अच्छा, सब कुछ तैयार मिलेगा तुम्हें।'

जब भोजन का समय हो आया, तो किशोरी ने, जो भी मांस घर में था, उसे आग पर भूनने के लिए रख दिया। मांस जब लाल हो उठा और कड़ाही में चटचटाने लगा तो किशोरी ने उठ कर उसे कलछी से चला दिया और सोचा, 'मांस तो अब तैयार हो आया है, चलूँ तहखाने में से शराब

भी ले आऊँ।' कड़ाही को आग पर ही छोड़ कर, वह एक बड़े लोटे के साथ तहखाने में पहुँची और शराब के पीपे की टोंटी घुमा दी। शराब लोटे में गिरने लगी तो किशोरी खड़ी-खड़ी देखती रही। एकाएक उसे ख्याल आया, 'कुत्ते को तो बन्द किया ही नहीं था, कहीं ऐसा न हो कि वह मांस लेकर भाग जाय।' इसलिए वह तहखाने में से तेजी से भाग कर ऊपर आई। सचमुच बदमाश कुत्ता मांस को मुँह में दबा कर भागे जा रहा था।

किशोरी कुत्ते के पीछे-पीछे दौड़ी। लेकिन कुत्ता खेतों की ओर निकल गया। वह दौड़ भी किशोरी से तेज़ रहा था। मांस का टुकड़ा वह मुँह से छोड़ता ही न था। किशोरी कह उठी, 'अब तो सब चला ही गया, कोई चारा नहीं।' इसलिए वह लौट पड़ी। दूर तक दौड़ने के कारण वह थक गई थी, इसलिए घर पहुँच कर सुस्ताने लगी।

इस बीच में शराब की धार भी दौड़ रही थी। किशोरी ने टोटी बन्द तो की न थी। लोटा भर जाने पर शराब जमीन पर बहने लगी, यहाँ तक कि सारा पीपा खाली हो गया। तहखाने की सीढ़ियों पर आकर जब किशोरी ने देखा तो कह उठी, 'हाय किस्मत! अब क्या करूँ जिससे पन्नालाल यह शराब का बिखरना न देख पाये?' कुछ देर सोचने के बाद उसे याद आया कि घर में आटे से भरा एक

बोरा रखा है, अगर आटे को शराब के ऊपर बिखरा दूँ तो वह शराब को आसानी से सोख लेगा। वह कह उठी, 'कैसी बढ़िया बात है कि घर में आटा रखा है, देखो न उसका कितना अच्छा इस्तेमाल होगा अब!' वह दौड़ी-दौड़ी आटे के बोरे के पास गई और उसे ला कर ठीक वहाँ रख दिया, जहाँ शराब का लोटा भरा रखा था। लोटा लुढ़क कर गिर गया। जो रही-सही शराब थी वह भी फर्श पर बहने लगी। वह कह उठी, 'क्या खूब! एक जाता है तो दूसरा भी उसका पीछा करता है। उसने आटा सारे तहखाने के फर्श पर फैला दिया और अपनी होशियारी पर खुश होकर बोल उठी, 'कैसा साफ-सुथरा लग रहा है अब!'

दोपहर को पन्नालाल घर लौटा। उसन ज़ोर से पुकारा, 'लाओ क्या है भोजन के लिए?' किशोरी ने जवाब दिया, 'क्या बताऊँ, मैं तुम्हारे लिए मांस बना रही थी। जब मैं शराब लेने गई तो कुत्ता मांस ले भागा। जब मैं कुत्ते के पीछे दौड़ी तो, सारी शराब बिखर गई। फिर, घर में जो आटा रखा था उससे मैं शराब को सुखाने लगी तो लोटा लुढ़क गया। लेकिन अब तहखाना बिल्कुल सूखा पड़ा है, और बहुत ही साफ दिखाई दे रहा है।'

पन्नालाल चीख उठा, 'किशोरी, किशोरी! यह सब क्या कर डाला तुमने? मांस को भुनता छोड़ कर और शराब

को बहता छोड़ कर तुम चल कैसे दीं ? फिर सारा आटा भी बेकार कर डाला।' किशोरी ने जवाब दिया, 'क्या हुआ ? मुझे तो ख्याल भी न आया कि कोई बात गलत कर रही हूँ। ऐसा था तो तुमने पहले से मुझे क्यों नहीं बता दिया ?'

पति बेचारे ने सोचा, 'अगर मेरी पत्नी का यही ढंग रहा तो मुझे ही पूरी चौकसी करनी होगी।' घर में बहुत-सा सोना था। पन्नालाल किशोरी से बोला, कैसे 'सुन्दर पीले बटन हैं ये ! इन्हें एक बक्से में रख कर मैं बगीचे में गाड़े देता हूँ। लेकिन ध्यान रहे कि तुम न तो कभी इनके पास जाना और न इनसे छेड़छाड़ करना। किशोरी बोली, 'मैं क्यों जाऊँगी इनके पास !'

पन्नालाल के चले जाने के थोड़ी ही देर बाद कुछ फेरी-वाले मिट्टी की तश्तरियाँ और प्यालियाँ बेचते आ निकले। उन्होंने किशोरी से भी पूछा कि खरीदोगी क्या ? किशोरी बोली, 'क्या करूँ, खरीदना तो बहुत से चाहती हूँ, लेकिन रुपया ही नहीं है मेरे पास। अगर पीले बटन तुम्हारे किसी काम के हों तो मैं तुमसे खरीदारी कर लूँ।' फेरीवालों ने कहा, 'अच्छा, देख लें पहले उन्हें।' किशोरी ने जवाब दिया, 'बगीचे में जाओ और मैं जहाँ बताती हूँ वहाँ खोदोगे तो तुम्हें पीले बटन मिल जायेंगे। मेरी खुद तो जाने की हिम्मत

होती नहीं ।' उन ठगों ने जब वहाँ पहुँच कर देखा कि वे पीले बटन क्या हैं, तो वे उन्हें लेकर चलते बने । बहुत-सी तश्तरियाँ और प्याले वे लोग छोड़ गये । किशोरी ने उन्हें उठा कर सारे घर में सजा दिया ।

पन्नालाल ने घर लौट कर पूछा, 'क्या करती रहीं ?' इस पर किशोरी ने जवाब दिया, 'अरे, मैंने तुम्हारे पीले बटनों के बदले में ये सब चीचें खरीद ली हैं । तुम्हारे उन पीले बटनों को मैंने हाथ भी नहीं लगाया । फेरीवालों ने खुद ही जाकर उन्हें खोद निकाला ।' पन्नालाल चिल्ला उठा, 'किशोरी, किशोरी, क्या जबरदस्त काम किया है तुमने !
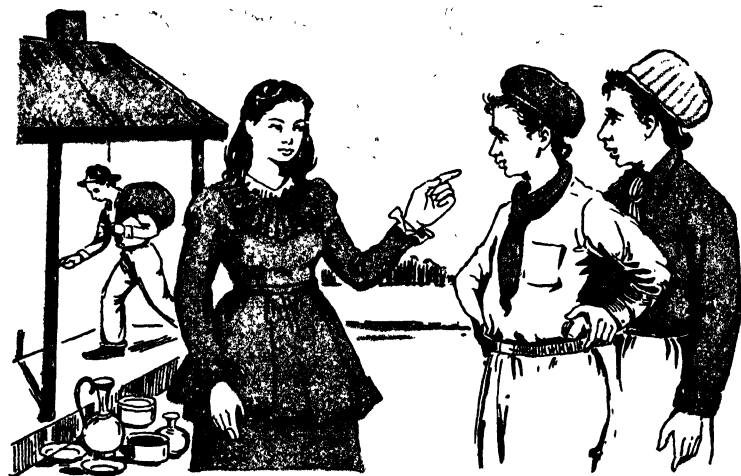
वे पीले बटन ही तो मेरी सारी दौलत थी । यह सब क्या कर डाला तुमने ?' किशोरी कह उठी, 'क्या हुआ, मुझे तो नहीं लगा कि इसमें कोई नुक्सान है । अगर ऐसा था तो कह क्यों न गये मुझसे ?'

किशोरी कुछ देर तक खड़ी सोचती रही, फिर अपने पति से बोली, 'सुनो, अभी हमें सारा सोना वापस मिल जायेगा; आओ चोरों का पीछा करें ।' पन्नालाल बोला, 'हाँ, आओ, कोशिश करें; थोड़ी-सी रोटी और मक्खन साथ में ले लो ताकि रास्ते में खाने के लिए हमारे पास कुछ रहे ।' पत्नी ने वैसा ही किया । वे लोग चल पड़े । पन्नालाल बहुत तेजी से चल रहा था । इसलिए किशोरी थोड़ा पीछे छूट गई, लेकिन वह सोचने लगी, 'कोई बात नहीं, लौटती बार मैं अपने पति की अपेक्षा घर से इतना ही कम दूर रहूँगी ।'

कुछ देर बाद वह एक टीले के ऊपर पहुँच गई । टीले के बाजू की सड़क इतनी पतली थी कि उस पर चलनेवाली गाड़ियों के पहियों से दोनों ओर के पेड़ रगड़ खा जाते थे । किशोरी दया से कराह उठी, 'देखो तो, इन बेचारे पेड़ों को लोगों ने कैसा घायल कर डाला है !' इसलिए वह पेड़ों पर मक्खन पोतने लगी ताकि फिर कभी पहियों से वे पेड़ उतने ज्यादा घायल न हों । जब वह ऐसी मेहरबानी का काम कर रही थी, तभी उसकी एक मिठाई टोकरी में से निकल

कर टीले के नीचे की ओर लुढ़क गई। किशोरी देख भी न पाई कि वह किधर चली गई। उसने कहा, 'अच्छा मिठाई रानी, यह तुम्हारी बहिन ही जाकर पता लगायेगी कि तुम किधर गई हो।' और उसने दूसरी मिठाई को भी लुढ़का दिया। वह भी टीले के नीचे की ओर जाकर गायब हो गई। किशोरी ने सोचा, 'ये रोटियाँ तो रास्ता जानती ही हैं; मेरे पीछे-पीछे चली आयेंगी, फिर क्यों यहाँ बैठ कर उनके इन्तजार में सारा दिन बेकार करूँ ?'

आखिरकार वह पन्नालाल के पास जा पहुँची। पन्नालाल ने उससे कुछ खाने को माँगा। उसने सूखी रोटी उसे पकड़ा दी। उसने पूछा, 'मक्खन और मिठाई कहाँ हैं ?' किशोरी ने जवाब दिया, 'मक्खन तो मैंने उन पेड़ों को पोत दिया जो गाड़ी के पहियों से बुरी तरह घायल हो गये थे। एक मिठाई भाग गई, मैंने दूसरी को उसे खोजने भेज दिया, रास्ते में वे साथ-साथ कहीं आ रही होंगी।' पन्नालाल ने बिगड़ कर कहा, 'तुम कैसी गधी हो कि ऐसे बेवकूफी के काम कर डालती हो !' किशोरी बोली, 'ऐसा क्यों कहते हो, तुमने मुझे वह सब करने को मना तो किया न था।'

उन दोनों ने बैठ कर सूखी रोटी खाई। पन्नालाल बोला, 'किशोरी, चलने से पहले तुमने किवाड़ को ताला लगा दिया था न ?' किशोरी ने उत्तर दिया, 'नहीं तो, तुमने

कहा कब था ?' पन्नालाल बोला, 'अच्छा तो अब जाकर ताला लगा आओ, तभी हम लोग आगे जायँगे । और देखो, कुछ खाने को भी लेती आना ।'

किशोरी घर को लौट पड़ी । उसने मन में सोचा, 'मेरे पति को खाने के लिए कुछ चाहिए, मक्खन और मिठाई तो उन्हें बहुत पसन्द हैं नहीं । इसलिए एक थैली भर अखरोट और थोड़ा-सा सिरका लेती चलूँगी ।'

घर पहुँच कर उसने पीछे के दरवाजे की तो कुण्डी लगा दी, मगर आगे के दरवाजे की चूलें उतार कर सोचने लगी, 'मेरे पति ने किवाड़ को ताला लगा देने को कहा था, लेकिन अगर मैं इसे अपने साथ ही ले चलूँ तो इससे ज्यादा सुरक्षित और कहाँ रहेगा !' फिर वह मजे से चलती हुई अपने पति के पास पहुँची और उसे देखते ही पुकार उठी, 'लो, किवाड़ ही आ गया तुम्हारे पास, अब चाहे जितनी सावधानी से देख-भाल करो इसकी ।' पन्नालाल ने देखा तो कह उठा, 'हाय, कैसी होशियार पत्नी मिली है मुझे ! मैंने तो इसलिए भेजा था कि घर की मजबूती कर आती, और तुम किवाड़ ही उठा लाईं, अब चाहे जो भी घर में आये-जाये । क्या हो अब, ले आई हो किवाड़ तो तुम्हीं को ले जाना भी पड़ेगा ।' किशोरी ने जवाब दिया, 'ठीक है, मैं ही ले जाऊंगी इसे । लेकिन अखरोट और सिरके की बोतल नहीं जायेगी मुझसे,

वह मिला कर तो बोझ बहुत बढ़ जायेगा। अगर कहो तो उन्हें किवाड़ से बाँध लूँ।'

पन्नालाल को इसमें कोई एतराज न हुआ। वे लोग चोरों की तलाश में जंगल की ओर बढ़ चले। साँझ तक भी जब चोर नहीं मिले तो रात बिताने के लिए वे एक पेड़ पर चढ़ गये। वे ऊपर चढ़े ही थे कि जिन ठगों की उन्हें तलाश थी, वे ही वहीं आ पहुँचे। वास्तव में वे लोग बड़े ही बदमाश थे। चलते-चलते थक जाने पर वे उसी पेड़ के नीचे बैठ गये और आग जला ली। पन्नालाल ने चुपचाप दूसरी तरफ से नीचे उतर कर थोड़े से पत्थर इकट्ठे कर लिए। फिर वह ऊपर चढ़ गया और चोरों के सिर पर ताक-ताक कर पत्थर मारने लगा। चोरों ने कहा, 'लगता है सुबह होनेवाली है, तभी तो हवा से पेड़ के फल हमारे ऊपर गिर रहे हैं।'

किशोरी किवाड़ को अपने कन्धे पर रखे थी। जब बोझ से थकने लगी तो उसने सोचा, 'इससे बंधे अखरोट ही यह बोझ कर रहे हैं।' इसलिए वह अपने पति से बोली, 'इन अखरोटों को फेंक क्यों न दें?' पति ने कहा, 'अरे, अभी नहीं। उन लोगों को हमारे यहाँ होने का पता लग जायेगा।' किशोरी बोली, 'मुझसे तो रहा नहीं जाता, अखरोटों को फेंकना ही होगा।' इस पर पति को कोई चारा

नहीं रहा, उसने कहा, 'अच्छा तो जल्दी से फेंक दो इन्हें।' तब तो अखरोट डालों में खड़खड़ाते हुए नीचे जा गिरे। एक चोर पुकार उठा, 'वाह-वाह, हमारा स्वागत हो रहा है।'

फिर कुछ देर बाद किशोरी को लगा कि किवाड़ अब भी भारी है। इसलिए उसने पन्नालाल से चुपके से कहा, 'सिरके को भी नीचे फेंक दूँ।' मना करने पर भी जब वह न मानी तो पति को राजी होना पड़ा। जब किशोरी ने सिरका नीचे उंडेला तो चोर कह उठे, 'कैसी घनी ओस पड़ रही है!'

अन्त में किशोरी को मालूम हो गया कि खुद किवाड़ का ही बोझ इतना भारी है। इसलिए वह पन्नालाल से चुपके से बोली, 'अब मुझे किवाड़ को ही तुरन्त नीचे फेंक देना चाहिए।' पन्नालाल ने बहुत ही अनुनय-विनय से कहा कि ऐसा मत करो, इससे तो हम लोगों के यहाँ छिपे होने का पता लग ही जायेगा। 'जो भी हो, यह तो चला' कह कर किशोरी ने किवाड़ छोड़ दिया। वह चोरों के ऊपर इतनी जोर से जाकर गिरा कि वे चीख उठे—'मार डाला, मार डाला!' बिना यह देखे ही कि क्या चीज गिरी है, वे सिर पर पाँव रख कर भागे, और सारा सोना वहीं छोड़ गये।

इस तरह अन्त में किशोरी का काम ठीक ही सिद्ध हुआ। उसके साथ पन्नालाल जब नीचे उतर कर आया, तो उनकी सारी सम्पत्ति वहाँ सुरक्षित रखी थी। ★★★

एक बुड्ढा चक्कीवाला था। उसके पास काम सीखनेवाले तीन लड़के थे। उन्हीं के साथ वह रहता था। उसके अपनी न तो पत्नी थी और न कोई बच्चा ही।

काम सीखनेवाले तीनों लड़के आपस में भाई थे। जब वे कई साल तक काम सीख चुके तो चक्कीवाले ने उन्हें बुला कर कहा, 'अब मैं बुड्ढा हो चुका हूं। जल्दी ही अपने रोजगार से अलग हो जाऊंगा। तुममें से जो भी मेरे लिए सब से अच्छा घोड़ा लाकर देगा, उसी को मैं अपने मरने तक साथ रखूंगा और उसके बाद चक्की का मालिक भी वही बनेगा।'

दो बड़े लड़के मोटे-तगड़े थे, लेकिन हरि जो सबसे छोटा था, पतले शरीर का था। इसीलिए उसके दोनों भाई उसे कमजोर कह कर मजाक उड़ाते थे। वे लोग चाहते थे कि किसी तरह इसका कब्जा चक्की पर न होने पाये, यहाँ तक कि घोड़े की तलाश में भी यह हमारे साथ न जाये।

फिर भी, वे तीनों साथ-साथ निकल पड़े। गाँव पास कर लेने पर बड़ा भाई हरि से बोला, 'अच्छा हो कि तुम यहीं रह जाओ। मैं ठीक जानता हूं कि तुम्हें घोड़ा नहीं मिल सकता। लेकिन हरि उनका साथ छोड़ने को राजी न हुआ। रात को वे तीनों एक जगह पेड़ की छाया तले सो रहे।

सुबह तड़के, हरि के जगने से पहले ही, दोनों भाई चुपचाप उठे और उसे सोता छोड़ कर बड़ी तेजी से भाग निकले। उन्होंने समझा कि हमने बड़ी चालाकी से हरि को धता बताया है। सूरज निकलने पर हरि भी उठा। उसने चारों ओर आश्चर्य से देखा और स्वयं को अकेला पाया।

वह जंगल की ओर चल दिया, रास्ते में सोचता जाता था, 'घोड़ा पाने का मैं कौन-सा उपाय करूँ?" एकाएक उसने एक भूरी बिल्ली को अपनी ओर आते देखा। बिल्ली बड़ी आत्मीयता से बोली—'हरि, घोड़ा तुम कैसे पाओगे?'

हरि कह उठा, 'अरे, क्या तुम जानती हो कि मैं क्या चाहता हूँ?'

भूरी बिल्ली ने कहा, 'हाँ मैं अच्छी तरह जानती हूँ। अगर तुम सात साल तक मेरी सेवा करो तो मैं ऐसा बढ़िया घोड़ा दूँगी जो तुमने कभी देखा भी न होगा।'

हरि ने सोचा, 'हर्ज क्या है, कम से कम देख ही लूँ कि इस अद्भुत बिल्ली के कथन में कितनी सचाई है!' इसलिए

उसने बिल्ली के साथ जाना स्वीकार कर लिया। वहाँ जाकर देखा तो वह जंगल के बीच एक बड़ा किला निकला।

बिल्ली की सेवा करने वाली बहुत-सी नौकरानियाँ भी बिल्ली ही थीं। हरि के भोजन करते समय तीन बिल्लियाँ सितार लेकर बहुत ही मधुर कण्ठ से गाने लगीं। इसके बाद भूरी बिल्ली ने पूछा, 'क्या तुम मेरे साथ नाचोगे, हरि ?'

हरि ने उत्तर दिया, 'बिल्ली के साथ कैसे नाचा जाता है, यह मैं क्या जानूँ ?'

भूरी बिल्ली बोली, 'अच्छा, तो अब तुम आराम करो।' यह कह कर उसने अपनी नौकरानियों की ओर देखा। नौकरानियों ने मोमबत्तियाँ जला दीं और हरि को उसके सोने के कमरे में ले गईं। एक बिल्ली ने बिस्तर बिछा दिया, दूसरी ने हरि को कपड़े बदलवाए और तीसरी ने मोमबत्ती ठीक की।

सुबह को नौकरानी बिल्लियाँ फिर उसके पास पहुँचीं और उसके कपड़े बदलवाए। एक बिल्ली ने हरि का मुँह धो दिया।

इसके बाद हरि का काम शुरू हुआ। दिन भर वह भूरी बिल्ली के लिए लकड़ी काटता। उसे जो औजार दिये गये थे वे चाँदी के थे। भूरी बिल्ली और उसकी नौक-रानियों के सिवा आस-पास उसे और कोई भी दिखाई न दिया। नौकरानी बिल्लियाँ ही उसे भोजन करा देतीं।

अगली बार भूरी बिल्ली ने हरि से कहा कि घास के मैदान की घास छील कर उसे सूखने डाल दो। इस काम के लिए उसने एक सोने का हंसिया देकर कहा, 'इसे सुरक्षित लौटा देना।'

हरि ने इस काम को भी मन लगा कर पूरा किया। सोने का हंसिया लौटा कर उसने अपने काम का पारिश्रमिक

माँगा। बिल्ली ने उत्तर दिया, 'और काम करना है तुम्हें। मैं तुम्हें चाँदी के तख्ते, चाँदी की ईंटें, और चाँदी के औजार तथा अन्य सब सामान दूँगी। मेरे लिए एक छोटा-सा चांदी का घर बना देना।'

यह काम भी हरि ने सफलता के साथ पूरा कर दिया। इसके बाद फिर उसने बिल्ली से वह घोड़ा माँगा, जिसका उसने वायदा किया था।

भूरी बिल्ली बोली, 'अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हें अपने घोड़े दिखा दूँ।' हरि उसके साथ घुड़साल में गया। जब वह सब घोड़ों की प्रशंसा कर चुका तो भूरी बिल्ली ने कहा, 'आओ, एक बार और मेरे साथ भोजन करो, उसके बाद अपनी चक्की पर लौट जाना। तुम्हारा घोड़ा लेकर मैं स्वयं तीन दिन के भीतर तुम्हारे पास पहुँचूँगी।'

हरि को विवश होकर इस वायदे से ही संतोष करना पड़ा। बिल्ली ने अपनी दो नौकरानियों को भेजा कि इन्हें चक्की का रास्ता बता आओ।

हरि लौट आया। वह अब भी वैसे ही फटे-पुराने कपड़े पहने था जैसे कि सात साल पहले।

दूसरे दोनों काम सीखने वाले लड़के उससे पहले ही लौट आये थे। वे दोनों अपने साथ एक-एक घोड़ा लाये थे, उनमें से एक का घोड़ा लँगड़ा था और दूसरे का काना।

उन दोनों ने मज़ाक किया, 'कहिए हरि जी, ले आये आप घोड़ा ?'

हरि ने उत्तर दिया, 'मेरा घोड़ा तीन दिन के भीतर यहाँ पहुँच जायेगा।' इस पर वे दोनों खूब हँसे। उन्होंने हरि की बात का विश्वास नहीं किया।

चक्की का मालिक भी उस पर नाराज़ हुआ, क्योंकि हरि बेचारा फटे-पुराने कपड़े पहने लौटा था और घोड़ा भी साथ नहीं लाया था। मालिक ने उसे साथ बैठ कर भोजन भी नहीं करने दिया, कहा, 'जाओ, रसोईघर में ही भोजन करके मुर्गियों के पास सो रहो।'

जिस दिन हरि भूरी बिल्ली के यहाँ से चला था, उससे ठीक तीसरे दिन सुबह को चक्की के अहाते में एक गाड़ी आकर रुकी। उसमें छः बढ़िया घोड़े जुते थे। पीछे-पीछे एक और भी अच्छे घोड़े पर बढ़िया पोशाक से सजा सवार था।

गाड़ी में से एक सुन्दर लड़की उतरी, उसकी वेश-भूषा राजकुमारी के समान थी। चक्की के पास जा कर उसने हरि के बारे में पूछा।

चक्की के मालिक ने बताया, 'वह इतना गन्दा है कि यहां नहीं रखा जा सकता, बाहर कहीं होगा।'

राजकुमारी ने अपने नौकरों को आज्ञा दी कि गाड़ी में से कपड़े निकाल कर हरि के पास ले जाओ। हरि ने

नहा-धोकर वे कपड़े पहन लिए जो कि उतने ही बढ़िया थे जितने कि राजकुमारी के। फिर जब वह चक्की के पास पहुंचा तो इतना भव्य लग रहा था कि चक्की का मालिक और काम सीखनेवाले दोनों लड़के उसे पहचान भी न सके और आश्चर्य से देखते रह गये। हरि राजकुमारी के पास गया तो उसे पता चला कि यह वही भूरी बिल्ली है जिसकी सेवा उसने सात साल तक की थी।

राजकुमारी ने उसे बताया कि एक दुष्ट जादूगर ने उसे बिल्ली बना दिया था, और अब हरि ने अपनी सच्ची सेवा द्वारा उसे छुटकारा दिला दिया है।

राजकुमारी ने वे घोड़े भी देखे जो कि काम सीखनेवाले दूसरे दोनों लड़के लाये थे। तब उसने अपने साथ लाया हुआ घोड़ा मंगवाया।

चक्की के मालिक ने जब वह सुन्दर और चमकदार घोड़ा देखा तो उसकी अपार प्रशंसा की और कहा कि इतना सुन्दर घोड़ा तो मैंने अभी देखा ही न था।

राजकुमारी ने कहा, 'वह घोड़ा हरि का है।'

चक्की का मालिक भी कह उठा, 'तो यह चक्की भी हरि की है। काम सीखनेवाले दोनों लड़के आश्चर्य से देखते रह गये। इस पर राजकुमारी ने कहा, 'आप अपनी चक्की

अपने पास रखें, हरि को अब इन चीजों में से किसी भी जरूरत नहीं।'

राजकुमारी ने हरि को गाड़ी में अपने साथ बैठा और चल दी। उस बढ़िया घोड़े को उसने वहीं अहाते छोड़ दिया।

पहले तो राजकुमारी उस छोटे से चांदी के मकान गई जो कि हरि ने उसके लिए बनाया था। लेकिन दरवा में घुसते ही वह एक सुन्दर महल बन गया, जिसमें सुनह पर्दे थे और सब सामान चांदी का था।

उसी में हरि और राजकुमारी का विवाह हुआ, औ वे लोग बहुत उम्र तक आनन्दपूर्वक रहे।